शिकारनामा

सं० सुरजीत

मूल्य तीस रुपये / प्रथम संस्करण १९८६ /
प्रकाशक कादम्बरी प्रकाशन, ए ५५/१ सुदर्शन पार्क नयी दिल्ली-११००१५ / मुद्रक मानस प्रिंटिंग प्रेस, ९/४७५३, पुराना सीलमपुर, गांधी नगर दिल्ली ११००३१ / आवरण लेखराज

SHIKAARANAAMAA (Hunt Stories) Ed SURJEET Rs 30 00

ये कहानियाँ

प्राचीन काल मे राजा-महाराजा अपने शौक के लिए निरीह अथवा हिंस्र जन्तुओ का शिकार किया करते थे। युग बदला और इस बदलाव के साथ लोकतन्त्र एव जनतन्त्र की शासन-प्रणाली अस्तित्व मे आ गयी। ससार के कुछेक देश ही इसके अपवाद रह गये और अब भी हैं। अत शौक के लिए शिकार की परम्परा क्रमश लुप्त होती गयी। यहाँ तक कि जीव-जन्तुओ की नस्ल को जीवित रखने के लिए कई देशो मे इनके शिकार पर प्रतिबध लगा दिये गये। वन्य पशुओ मे कुछ ऐसे भी जीव-जन्तु हैं जिन्हे इसान का खून मुँह लग जाता है और वे आदम-खोर हो जाते हैं। उन्हे मारना या उनका शिकार करना

जाता है। ऐसे पशुओ का शिकार करना स्वय अपन प्राणा को सक्ट म डालने से कम नही, लेकिन साहसी और दिलेर शिकारी इनसे निरीह इसानो को बचाने के लिए अपने आपको मौत के मुह म झाक्न स भी नही हिचकिचाते। ऐसे ही विश्वविख्यात साहसी और वीर शिकारियो—कैनेथ एण्डरसन, जिम कार्बेट, जान टलर, टामस जैकब, जेम्स फ्रैंकलिन, ह्यू एलन, थ्योडार रूजवल्ट, व्हाइट मोयम आदि की लोकमहपक शिकार-कथाएँ पाठका के सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है, इस आशा के साथ कि वे इन्हे बेहद पसद करेंगे।

सी ३४, सुदशन पाक,
नयी दिल्ली-११००१५

—सुरजीत

कथाक्रम

नरभक्षी से साक्षात्कार

लोपाटा जाज के निचले भाग म जहाँ जम्वेजी जातियाँ रहती हैं वहाँ की धरती समतल और चपटी है। यहाँ से आठ मील दक्षिण म लेफम्वा की झील है जो एक तग मार्ग से नदी म मिल गई है। झील अँग्रेजी अक्षर 'वी' के रूप म इस प्रकार फैली हुई है कि उसके ऊपर का भाग नदी मे से निकलता हुआ-सा प्रतीत होता है। झील और नदी को जो स्थायी खाई मिलाती है उसके दोनो किनारो पर मटीटी घास उगी हुई है। यह घास छह सात फुट ऊँची है और उसके किनारे छुरी की तरह तेज है। निरावरण व्यक्ति उस घास क मध्य से गुजरे तो रक्त-स्नात हो जाए किन्तु जम्वेजी जाति के लोग जिनके शरीर पर केवल लगोटी होती है नग पाँव उस तज धार घास म स आसानी से रास्ता बना लेत हैं। यह भयकर घास दूर-दूर तक फली हुई है। उसकी जडो म खरगोश स मिलता-जुलता एक जानवर घरौंदा बनाकर रहता है। जम्वेजी इस वडे शौक स खात हैं और इसका शिकार करने के लिए इस घास मे घुसते है। घास म प्रवेश करने से पूव वे अपने नगे शरीर पर भस गाय और मढको की मिली जुली चरवी मल लेते है जिसस घास उनके शरीर को काटने के वजाय इधर उधर फिसल जाती है। यह चरवी उन्ह एक अय विपत्ति स भी सुरक्षित रखती है, जो सामायत वरसात के दिनो म घहराती है। जस ही वर्षा का पहला छीटा शुष्क धरती पर पडता है भिड जितनी वडी मक्खी जिसे व लोग स्टस कहते हैं लाखो की सख्या म पैदा होती हैं। जानवर तो उसका डक खाते ही अचेत हो जाते हैं और फिर कुछ घटे खुर रगड रगड कर प्राण त्याग देते

मनुष्या के लिए भी यह कुछ कम खतरनाक नही। जैसे ही यह काटती है मनुष्य को बहुत ज्वर हो जाता है और उसके होश गायब हो जाते है। कई-कई दिन के बाद उसे ज्वर से छुटकारा मिलता है।

लोगो का विचार था कि इस रक्तपिपासु मक्खी के भय से शेर नदी के इस पार नही आते यद्यपि नदी के उस ओर कई बबर शेर लोगो को अपना ग्रास बना चुके थे। जम्बेजी शेर की गरज सुनकर भी तो आराम से अपने घरौंदे मे बैठे रहते। वे समझते थे कि जगल का यह राजा नदी के उस पार दहाड रहा है और वह इस ओर कभी नहीं आएगा।

एक दिन सहसा उस जाति के सरदार का लडका दौडता हुआ आया और उसने हकलाते हुए लोगो को बताया कि एक शेर ने उसके सामने नदी पार की और उसकी बकरी को उठा कर ले गया है। इस समाचार ने गाँव वालो मे चिन्ता की लहर दौडा दी क्योंकि यह पहला अवसर था कि किसी शेर ने इस ओर मुख किया था। लोगो ने अपनी बकरियां और अन्य जानवरो को बाडा मे बन्द कर दिया। माताओ ने बच्चो को कहा कि वे घर से बाहर पग न रखें। लोग बाग दिन भर कुल्हाडियो, भालो और बरछियो से युक्त होकर इधर उधर घूमते किन्तु शाम होते ही सारे गाँव पर नीरवता छा जाती। प्रत्येक व्यक्ति सूर्यास्त होते ही द्वार बन्द कर लेता और अपने जानवरो को भी बाडा मे बन्द कर देता। एक रात गाँव के पूर्वी कोने मे शोर उठा। शेर ने नौ फुट ऊँची लकडी की दीवार फाँद कर एक बकरी को मुह मे दबोच लिया, किन्तु वह उसे उठा कर बार-बार छलाग लगाने के बावजूद दीवार न फाँद सका था। दीवार भी काफी मजबूत थी। वह धरती मे चार फुट गहरी दबी हुइ थी और लकडी के तख्ता को लोहे की तार से एक दूसरे मे घुसेड कर अति दृढ बना दिया गया था। उस बाडे के साथ ही कच्ची इटो की बनी हुई कोठरी मे तीस वर्षीय लेतनू सो रहा था। उसने जब शेर की उछल-फलाँग देखी तब शोर मचा दिया। शेर ने बकरी को तो छोड दिया और सरकण्डो के बने हुए दरवाजे को तोड कर कोठरी में लेतनू को दबोच लिया। गाँव वाले जब उसकी सहायता को पहुँचे, वह

सास त्याग चुका था। उसका शरीर रक्तस्नात था। शेर ने उसके चेहरे को जबडो मे दबा कर बुरी तरह विकृत कर दिया था और स्वय कच्ची दीवार तोड कर भाग गया था। बकरी रक्त मे नहाई अभी तक सिसक रही थी। लोगो ने कुछ दूर तक कुल्हाडियो और बरछियो के साथ शेर का पीछा किया, किन्तु रात के समय प्रत्येक व्यक्ति अति भयभीत था, इसलिए वे शेर की खोज न कर सके।

लेतनू की मृत्यु ने प्रत्येक व्यक्ति को बेहद परेशान कर दिया। शेर को मनुष्य के रक्त की चाट लग गई थी और यह बात लोगो को भयभीत करने के लिए पर्याप्त थी। यह बात विश्वास के साथ कही जा सकती थी कि शेर नदी पार करके आता है और उसी रास्ते वापस चला जाता है क्योकि झील और नदी को मिलाने वाले जल-माग के दोनो ओर मीलो तक तेज धार घास उगी हुई थी और उसमे से शेर गुजर नही सकता था।

गाव के सरदार ने लोपाटा जाज के डिप्टी कमिश्नर को सदेश भेजा कि गाँव म आतक फैल गया है और लोगो ने घरो से बाहर निकलना बद कर दिया है। इस नरभक्षी से मुक्ति दिलाने की व्यवस्था की जाए। डिप्टी कमिश्नर अँग्रेज था और बीस वष से अधिक दक्षिणी अफ्रीका मे कई पदो पर काम कर चुका था। वह अफ्रीका के बबर शेरो के मनोविज्ञान से भली भाति परिचित था। उसके पास जो बन्दूक थी वह बबर शेर को मारने के लिए कदापि उपयुक्त नही थी। नई राइफल मगवाने के लिए समय लगता था। नगर वहाँ से नौ दस मील दूर था। यदि वह वहा लिखता तो राइफल आने मे एक अवधि लग जाती। उसने समय नष्ट किए बिना लेफ्म्वा जाने का निश्चय किया।

डिप्टी कमिश्नर दो सिपाहियो के साथ जब गाँव पहुँचा तब उस समय हर प्रकार के अस्त्रो से युक्त दो दजन आदमी नदी के किनारे पर उपस्थित थे। जसे ही शेर ने धरती पर पाँव रखा उन आदमियो ने उस पर आक्रमण कर दिया, किन्तु वह इतना फुर्तीला सिद्ध हुआ कि न केवल आक्रमण की परिधि से बच गया, बल्कि उनमे से एक को दबोच भी लिया और उसे घसीटता हुआ नदी के

पार ले गया। उस नवयुवक की बूढी मा फफक फफक कर रो रही थी। वह उसका इकलौता पुत्र था और अगले महीने उसका विवाह होने वाला था। माँ ने अफ्रीकी रिवाज के अनुसार कमीज़ को गले मे डालकर पीठ पर लटका लिया और सीन पर दोहत्थड मारकर विलाप करने लगी। डिप्टी कमिश्नर ने बूढी स्त्री को धीरज रखने को कहा और वचन दिया कि वह उसके पुत्र के हत्यारे को मौत के घाट उतार कर सास लेगा।

गाँव के सरदार ने नदी के किनारे वह स्थान दिखाया, जहा से शेर पानी म तैर कर जमीन पर आता है। डिप्टी कमिश्नर अपने साथ डेढ मन भारी एक मजबूत शिकजा लाया था। अफ्रीकी इस शिकजे से खूखार जन्तुओ को पकड लेने म बडे कुशल है। उन्होंने नदी के किनारे एक लोहे की सलाख गाड दी और भारी इस्पाती जजीर के साथ उस शिकजे को बाध दिया। शिकजे को रेत म इस प्रकार छिपा दिया गया कि वह प्रकट मे नजर नही आता था। उसके बाद वे सभी लोग चले जाय।

अभी पौ नही फटी थी और अँधेरा फैला हुआ था कि नदी पर शेर के गरजने की आवाजे आन लगी। वे आवाजें अति भयानक और निरतर आ रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, जस शेर किसी सकट मे ग्रस्त है और पीडा से कराह रहा है। क्षण प्रति-क्षण आवाजें तज होने लगी। उनम क्रोध और पीडा थी। सब समझ गए कि शेर शिकजे मे फँस गया है और उसमे स निकलने का प्रयत्न कर रहा है। गाव के सरदार न डिप्टी कमिश्नर से प्रार्थना की कि इस शेर को अभी मार दिया जाए। किन्तु उसने अनुमति नही दी। वह सूर्योदय की प्रतीक्षा करना चाहता था। चूकि शेर तो पकडा ही जा चुका है और वह उस शिकजे से किसी प्रकार स भी मुक्ति प्राप्त नही कर सकता इसलिए दिन के उजाले म उसकी असहाय दशा का तमाशा देखा जाए और कमरे से उसकी तस्वीरें ली जाएँ।

शेर दो घटे तक पीडा म ग्रस्त रहन के कारण दहाडता रहा। प्रात काल हुआ तो डिप्टी कमिश्नर अपने दो सिपाहियो और गाँव के लोगो को साथ लेकर नदी के किनारे पहुँचा। शेर का अगला दायाँ पजा

शिकंजे म फँसा हुआ था, और उससे पर्याप्त मात्रा मे रक्त बह कर धरती पर जम चुका था। डिप्टी कमिश्नर और उसके दो सिपाही शेर से सात-आठ फुट की दूरी पर जा खडे हुए। शेष लोगो को उन्होने सौ गज की दूरी पर रोक दिया था। जैसे ही डिप्टी कमिश्नर न फोटो उतारन के लिए कैमरे का मुख शेर की ओर किया, उसने एक छलाग लगान का प्रयत्न किया और भयानक अन्दाज़ मे दहाडा। यह छलाँग उतनी ही दूर तक रही जहाँ तक सलाख से बँधी हुई जजीर जा सकती थी, किन्तु उसका प्रभाव यह पडा कि भय के मारे डिप्टी कमिश्नर के हाथ से कमरा छूट कर धरती पर गिर पडा और दोनो सिपाही भी अपनी बन्दूका सहित उलटे पाँव भाग खडे हुए। शेर न शिकारियो को जब भागन देखा, तब एक बार और छलाँग लगायी। यह इतनी ज़बरदस्त थी कि उसका पजा कटकर शिकजे मे ही रह गया, किन्तु वह स्वय उससे मुक्त हो गया। शेर न दौड कर एक सिपाही को दबोच लिया और जख्मी पजे से थप्पड मार कर उसकी गदन तोड दी। डिप्टी कमिश्नर और दूसरे सिपाही ने बडी कठिनाई से प्राण बचाए। गाँव वाले भी शेर के क्रोध स भयभीत होकर यो भागे जस गधे के सिर से सीग। उन्होने पीछे मुडकर भी नही देखा।

शेर न सिपाही के मुरदा शरीर को खान की चेष्टा की, किन्तु जख्मी होन और पर्याप्त रक्त बह जान के कारण वह शात होकर वापस चला गया। इस दुघटना न प्रत्येक व्यक्ति के दिल म आतक फैला दिया, किन्तु एक बात से प्रत्यक व्यक्ति आश्वस्त था कि शेर का अगला दायाँ पजा टूट गया है और अब वह शिकार को आसानी स नियत्रण मे नही ले सकेगा।

दो सप्ताह यो ही बीत गए। किसी ने शेर को पुन नही देखा। लोगो को विश्वास हो गया था कि शेर नदी के उस पार जा कर या तो अपन जख्म के कारण मर-खप गया होगा, या उस पर शिकज का आतक इतना छा गया होगा कि वह अब इस ओर कभी नही आएगा। धीरे धीरे लोग अपने काम-काज पर जान लगे। स्त्रियो ने बच्चों को घर से बाहर निकलने की अनुमति द दी। ढोर-डगर भी चरने के लिए

मैदान मे जाने लगे। डिप्टी कमिश्नर ने वापस जाकर निश्चिन्तता की साँस ली और अपने दैनिक कार्यों म तल्लीन हो गया।

मुझे यह सारी बातें गाँव के एक नवयुवक जोशनू ने सुनाई। मैं और वह बरगद के एक सघन वृक्ष क नीचे बैठे उस नरभक्षी शेर को मारने की योजना बना रह थे। लन्दन म कामनवेल्थ के प्रधान-मत्रियो के सम्मेलन म दक्षिणी अफ्रीका की जातिभेद की पालिसी विवादाधीन थी। लोशाटा जाज के डिप्टी कमिश्नर उस सम्मेलन म दक्षिणी अफ्रीका के प्रतिनिधि के रूप म सम्मिलित होने के लिए आए हुए थे। वहाँ उन्होने मुझे शेर के जख्मी होने और फिर गाँव की ओर न आने की घटनाएँ विस्तारपूर्वक सुनाई। मैंने उन्हे बताया कि शेर केवल पजा कट जाने के कारण मर नही सकता और जसे ही उसके जख्म भर जाएँगे, वह अधिक निर्ममता स गाव वालो पर आक्रमण करेगा। डिप्टी कमिश्नर ने मुझसे प्रार्थना की कि मैं लेफम्बा जा कर गाँव वालो को उस नरभक्षी स मुक्ति दिलाऊँ। उन्होने मेरे लिए यात्रा और बीमा की सभी सुविधाए उपलब्ध की और म एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर दक्षिणी अफ्रीका चल पडा।

गाँव आ कर मुझे पता चला कि शेर तीन दिन पहले फिर नदी पार आया था और एक गाय को उठा कर ल गया है। इसके बाद गाँव वालो को एक तरकीब सूझी कि अगर शेर को नदी की ओर जाने से रोक दिया जाए और किसी प्रकार उस झील के पश्चिमी किनारे पर मटीटी घास के खूँखार वन म घुसने पर विवश किया जाए तो उससे सदव के लिए छुटकारा मिल सकता है। उन्होने अगले दिन गाँव के सभी लोगो को एकत्र किया। किसी क हाथ म ढोल था। किसी के पेट पर खाली कनस्तर बधा था। व सब नदी के किनारे दूर दूर फल गए और औंधे मुह जमीन पर लेट गए। किनारे से जरा हटकर उन्होने चार बकरियाँ बाध दी। उनकी योजना थी कि जसे ही शेर बकरियो पर आक्रमण करेगा पूरा गाँव खडा होकर एक दूसरे से मिल जाएगा और इतने जोर स ढोल बजाएगा कि शेर भयभीत होकर भाग निकलेगा। क्योकि नदी पार करने का रास्ता गाँव वालो के कारण रुका होगा,

इसलिए वह झील पार करके पश्चिमी किनारे पर मटीटी घास के वन मे जा घुसेगा। सूर्यास्त होने मे अभी एक घटा शेष था। उन्होंने देखा कि शेर धीरे धीरे पानी म उतर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति का हृदय बुरी तरह धडक रहा था। स्त्रियो न अपने नन्हे मुन्ने बच्चो को दुपट्टो से पीठ पर बांध रखा था। जैसे ही शेर किनारे पर पहुँचा उसकी दष्टि बकरिया पर पडी। वह उन पर झपटा ही था कि ढोल और कनस्तरो की कोलाहलपूर्ण आवाजें गूजने लगी। लगभग चार सौ मनुष्यो न धीरे धीरे अपना दायरा तग करना शुरू कर दिया। लोग ढोल बजाने के साथ-साथ मुह से भी अति भयानक आवाज निकाल रहे थे। सबसे आगे नवयुवक थे। उनके बाद बूढे और सबसे अन्त म स्त्रियाँ थी। शेर इस आकस्मिक सकट को देखकर पहले तो गुर्राया फिर तेजी स झील की ओर भागने लगा। गाव के सरदार ने ललकारा कि योजना सफल हो रही है। शेर उसी दिशा म भाग रहा है। इसलिए तेज तेज आगे बढो और शोर को और ऊँचा कर दो। लोग सरदार की ललकार को सुन कर जल्दी जल्दी आगे बढने लगे। शेर जसे ही झील के किनारे तक पहुचा, आवाजें और तेज हो गयीं और लोग एकदम उसके सिर पर पहुँच गए। शेर उद्विग्न हो उठा और उसने पानी म उतरने के बजाय अकस्मात लोगो पर आक्रमण कर दिया। वह उनकी पक्ति को चीरता हुआ पीछे की ओर भागा। इस अफरा-तफरी म दो स्त्रियाँ उसकी परिधि मे आ गयी। उसने थप्पड मार कर एक की तो गर्दन तोड दी और दूसरी को घसीटता हुआ बीस-पच्चीस पग तक ले गया।

जावानू न मुझे बताया कि जिस स्त्री को यह आततायी जन्तु बीस-पच्चीस पग तक घसीटता हुआ ले गया था वह उसकी मगेतर थी और उस गाँव की सबसे सुन्दर लडकी थी। उस दुघटना को सुनाते हुए उसकी आँखो म आसू उमड आए और उसकी आवाज अवरुद्ध हो गई। वह भावातिरेक से अधीर होकर मेरे पैरो पर झुक गया। उसने अपने हाथो स पाँव छूते हुए प्राथना की कि मैं उसकी मगेतर का प्रतिशोध लिए बिना गाँव स वापस न जाऊ। मैंने उसे विश्वास दिलाया कि मैं इतनी दूर आया ही उसी उद्देश्य के लिए हू, इसलिए शेर को मारे बिना

वापस जाने का प्रश्न उत्पन्न ही नहीं होता।

अभी हम बातें कर ही रहे थे कि शेर के गरजने की आवाज सुनाई दी। शेर गाँव के पूर्वी कोने मे दहाड रहा था। मेरे पास एक अच्छी राइफल थी और मैं प्रत्येक क्षण शेर से मुकाबले के लिए तयार था, किन्तु सहसा शेर के इस प्रकार दहाडने से एक बार तो मेरे शरीर में भी थुरथुरी पैदा हुई। इसका एक कारण तो यह था कि हमारे अनुमानानुसार शेर अभी नदी के उस पार था और उसे नियमानुसार शाम के समय इस ओर आना था।

अढाइ-तीन सौ गज की दूरी पर एक अति भयानक दृश्य देखा। गाँव के एक ओर एक विधवा के धाना का खेत था। उसने बाँसो की जमीन में गाड कर लगभग दस फुट ऊँचा चबूतरा बना रखा था और उस चबूतरे पर रहने के लिए झापडी डाली हुई थी। जब हम शेर की आवाज सुनकर इस ओर लपक रहे थे, वह स्त्री बाँसो की सीढी से अपनी झापडी में प्रवेश करने का प्रयत्न कर रही थी और शेर उसके बिलकुल समीप जमीन पर खडा छलाग लगाने ही वाला था कि सहसा चबूतरे के किनारे रखी हुई पानी की बाल्टी वायुमण्डल में लुढकी और ऐन शेर के शरीर पर जा पडी। उस अप्रत्याशित दुर्घटना ने शेर को इतना अवसर न दिया कि वह छलाग लगाकर उस स्त्री को पकड लेता। स्त्री ने अपनी झापडी में प्रवेश कर लिया और उसने जल्दी से अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।

जोवातू ने शेर को देखा, तो उसकी आखो में खून उतर आया। वह जवान था और डिप्टी कमिश्नर ने उसे मेरा सहायक नियुक्त किया था, किन्तु दुर्भाग्य से वह अच्छा निशानेबाज न था। उसने मेरे आदेश की प्रतीक्षा किये बिना राइफल का मुख शेर की ओर कर दिया और घोडा दबा दिया। गोली निस्तब्ध वायुमण्डल को भेदती हुई शेर के निकट से गुजर गई। शेर गरजा और हवा में लहराता हुआ जगल में गायब हो गया।

मैंने जब जोवातू से कहा कि उसने बिना पूछे फायर करके मूर्खता का प्रमाण दिया है तब वह क्रोध से भडक उठा और कडे स्वर में कहने

लगा, 'मेरे तो सीने मे आग सुलग रही थी। उसने मेरी मगतर को मारा है। मैं उसे मारना चाहता हूँ।' मुझे अपने सहायक की बातचीत का यह ढग अनुचित लगा, किन्तु मैने धैर्य और युक्ति से काम लेते हुए उसे समझाया कि इस प्रकार निशाना चूक जाने से स्वय हमारे जीवन सकट मे पड सकते है। तत्पश्चात मैंने राइफल उसके हाथ से ले ली और फिर भूल से भी उसे नहा दी।

राइफल की आवाज और शेर की गरज सुन कर गाँव के लोग हमारे गिर्द एकत्र हो गए। उनका विचार था कि नरभक्षी गोली का निशाना बन गया है, किन्तु जब उन्होंने हमे अकेला देखा और मुरदा शेर कही नजर न आया, तब उनकी निराशा की कोई सीमा न रही। जिस बूढी का युवा पुत्र शेर का ग्रास बना था, वह भी लाठी टेकती हुई आ रही थी और जब उसे अपने पुत्र का हत्यारा नही मिला, तब वह फूट फूट कर रोने लगी।

शेर जिस रास्ते से गया था मैं और जोबानू उसकी तलाश मे उसी ओर चल पडे। हमने गाँव वालो को जान-बूझ कर वही रोक दिया और अपने साथ ले जाने से इन्कार कर दिया क्योकि इस प्रकार काफी शोर होता और यह शोर शेर को सचेत कर देता। हम रेत पर बने हुए पजो के निशानो को देखते जा रहे थे। रेत पर शेर के जो पद-चिह्न थे, उनमे अगले पजे का चिह्न मद्धिम और अस्पष्ट था जिससे अनुमान होता था कि यह पजा कटा हुआ है। उस शेर की यह आदत थी कि शिकार करने के बाद सदा नदी की ओर भागता और फुर्ती से नदी पार कर लेता, क्योकि उसे ज्ञात था कि झील लेपम्बा के इर्द गिर्द कोई भी ऐसा स्थान नही, जहाँ वह निश्चितता से बैठ कर शिकार खा सके या थोडी देर के लिए मधुर निद्रा मे सो सके किन्तु इस बार पद चिह्न नदी की ओर जाने के बजाय झील के साथ साथ पूर्वी दिशा को जा रहे थे। इसका यह अभिप्राय था कि वह नदी पार करने के बजाय झील और गाँव के मध्य मौजूद है।

मेरे हाथ मे राइफल थी और मैं प्रत्येक क्षण आक्रमण का मुकाबला करने के लिए तैयार था। नदी और झील निकट होने के बावजूद यह

सारा प्रदेश रेतीला था और यहाँ तीन-तीन, चार-चार फुट ऊँची झाडियाँ उगी हुई थी। हम आशका थी कही शेर अनायास किसी झाडी म स निकलकर आक्रमण न कर दे। तनिक-सी सरसराहट होती, तो हमारे पग रुक जाते और हाथ राइफल के घोडे पर पहुँच जाता। जावानू की तो विचित्र दशा थी। वह नथुने फुला फुला कर हवा म शेर की बू सूघन का प्रयत्न करता और या लगता था कि शेर को देखते ही वह खानी हाथ उस पर टूट पडेगा। कभी-कभी वह होठो मे बडबडाने लगता और जब मैं अपने होठो पर उँगली रख कर उसे मौन रहने का सकेत करता तब वह अजीब-सी नजरो से मुझे घूरता और मौन हो जाता।

मटीरी घास के वन के पास जाकर शेर के पद चिह्न समाप्त हो गए थ। ऐसा प्रतीत होता था कि शेर ने घास म प्रवेश करने की चेष्टा की है, किन्तु उसकी तलवार-जसी तीक्ष्णता को सहन न कर के वापस हो गया है। हमने बडे ध्यान से देखा। पद चिह्न बाइ आर मुड कर दस गज की दूरी पर झील के किनारे समाप्त हो गए थ। जावानू का विचार था कि शेर जलमाग स तरता हुआ नदी की ओर चला गया है। जहाँ वह कम चौडे पाट को पार कर के अपने निवास स्थान तक पहुँच गया होगा। किन्तु मेरा अनुमान था कि शेर तैर कर इतनी लम्बी यात्रा नही कर सकता क्याकि यह जलमाग मील भर लम्बा था और इसके दोना ओर मटीटी जैसी भयकर घास उगी हुई है। इसलिए शेर ने यह सकटकारी माग अपनाने के बजाय झील को पार करना अधिक उचित समझा होगा। यह झील तीन चार मील म फैली हुई है किन्तु मेरे अनुमान के अनुसार जिस स्थान स शेर ने झील को पार किया वहाँ आधा फर्लांग से कम पाट था। इस का अभिप्राय यह था कि यदि शेर ने झील पार की है तो भी वह गाँव के आस-पास मौजूद है क्याकि अढाई मील का चक्कर काट कर शेर गाँव के समीप पहुँच सकता है।

मेरा अनुमान था कि शेर तीन दिन स भूखा है। वह अवश्य गाव पहुँचेगा और अपना शिकार ढूँढेगा। इसलिए हम ने यहाँ शेर की प्रतीक्षा करने के बजाय गाँव के समीप पहुच कर उसकी ताक म बैठना अधिक उपयुक्त समझा।

गाँव पहुँच कर मैंने छह नवयुवकों को पहरे पर नियुक्त किया और उन्हें आदेश दिया कि ज्यों ही वे शेर को देखें या आवाज सुनें, तो तत्काल मुझे आकर बताएँ। मैं बहुत थक गया था और कुछ देर सुस्ताना चाहता था। मैं गाँव के सरदार की बैठक में जा कर लेट गया। राइफल भरी हुई थी। मैंने उसे अपने सिरहाने खड़ा कर लिया। मेरा विचार था कि शेर दो-तीन घण्टे तक इधर आ निकलेगा और मैं इतनी देर आँख लगा लूँगा। मैं सामान्यतः दरवाजा अन्दर से बन्द करने के बाद सोने का आदी हूँ किन्तु इस विचार में कि थकावट के कारण गहन निद्रा में न सो जाऊँ और बाहर की आवाज मुझे जगा न सके। मैंने कपाट तो बन्द कर लिए, किन्तु कुण्डी न लगाई। थोड़ी देर बाद मैं खर्राटे लेने लगा। सहसा गोली चलने की आवाज ने मुझे चौंका दिया। साथ ही एक भयानक चीख गूँज उठी। मैं हड़बड़ा कर उठा। राइफल जमीन पर गिरी पड़ी थी और गोली बैठक की छत में सूराख करती हुई बाहर निकल गई थी। मेरे सिरहाने सरदार का पुत्र सदीकू विस्मित विमूढ़ खड़ा थर-थर काँप रहा था। सदीकू की वय दस-ग्यारह वर्ष के लगभग थी। वह दबे पाँव बैठक में आया और सिरहाने खड़ी हुई राइफल को देखने लगा। उसने घोड़े को देखा और अनजाने में उसे नीचे दबा दिया। यह भी विचित्र संयोग था कि उस दिन मैंने घोड़े में ताला नहीं लगाया था। घोड़ा (ट्रिगर) दबते ही राइफल चल पड़ी। सदीकू ने चीख मारी और गोली खपरैलों और सरकंडों की छत को आर-पार कर गई। गोली की आवाज सुनते ही सरदार और गाँव के बीसियों अन्य लोग दौड़े-दौड़े वहाँ पहुँचे। प्रत्येक व्यक्ति विस्मित था कि क्या हुआ। पहरा देने वाले नवयुवक भी आ गए। जब असली बात का पता चला, तब सब लौट गए। मैंने घड़ी पर नजर डाली। तीन घण्टे हो चुके थे। शेर का दूर-दूर तक पता न था।

मुझे विश्वास था कि शेर भयभीत है और भूखा होने के बावजूद अब दिन के समय में आक्रमण नहीं करेगा, बल्कि रात के किसी भाग में शिकार ढूँढने के लिए निकलेगा। मुझे एक तरकीब सूझी। गाँव के में विधवा का झोपड़ा बाँसों के ऊँचे चबूतरे पर बना हुआ था।

मचान के रूप म प्रयुक्त किया जा सकता था। मैंने जब उस स्त्री स निवेदन किया कि वह आज की रात अपने झापडे मे न साए, अपितु उस मचान के रूप मे प्रयाग करने की अनुमति दे दे, तब उसन साफ इन्कार कर दिया। गाँव के सरदार के बल देने पर वह इस बात पर रजा-मन्द हो गयी कि वह स्वय भी अपने झापडे म रहेगी और हम भी उठने की अनुमति द देगी।

सूर्यास्त होते ही एक मोटी-ताजी बकरी मचानरूपी झापडी स पचास गज की दूरी पर बाध दी गयी और हम झापडी स बाहर बाँसो के चबूतरे पर औंधे मुह लेट गए। हमारा विचार था कि इस प्रकार शेर हमे देख नही सकेगा और जैसे ही वह बकरी पर आक्रमण करेगा राइफल की एक ही गोली उसे समाप्त कर देगी

खेत मे धान अभी दो इच स अधिक ऊचे नही हुए थे। इन म पानी अभी थोडा बहुत था। चटकी हुई चादनी मे खूटे स बँधी हुइ बकरी दूर से नजर आती थी। मरी और जोवानू की नजरें बकरी पर जमी हुई थी। रात के दस बज रहे थे कि सहसा हम अपने पीछे गुर्रानि की आवाज आयी। हम चिन्ता हुई कि कही शेर झापडी के पीछे तो नही आ गया। अब अवस्था यह थी कि झोपडी के पीछे झाँकना असम्भव था। हम जिस चबूतरे पर लेटे थे, वह वास्तव म झापडी के आगे-आगे बढा हुआ था। जोवानू न मुझे इशार स कहा कि हम झापडी के अन्दर जाकर किसी सुराख से देखना चाहिए किन्तु मैं उसस सहमत नही था। मैंन हाथ के सकेत से बताया कि यही इसी प्रकार लेटे रहो। यदि शेर है भी ता वह बकरी पर आक्रमण करन के लिए सामन अवश्य आएगा। गुर्रानि की यह आवाज कभी तज हो जाती और कभी धीमी पड जाती। इस दशा मे दस मिनट बीत गये। न शर सामन आता था और न उसका गुर्राना बन्द होता था। अन्तत मन साहस किया और धीरे धीरे झोपडी का दरवाजा खोला। मैं विस्मित रह गया कि जिसे हम शेर की गुर्राहट समझ रह थे वह झापडी मे सोई हुई स्त्री के खर्राटो की आवाज थी। मैंने जीवन मे पहली बार मनुष्य के खर्राटो की आवाज शेर के गुर्राने के समान सुनी थी। मैंने जोवानू को भी सकेत स अन्दर बुलाया। उसन तो

बडी कठिनाई से मुह पर हाथ रखकर अपनी हँसी रोकी और यदि मैं उसके मुह को जोर से दबा न देता तो वह कहकहा मार कर हँस पडता।

हम ने धीरे से दरवाजा बन्द किया और बाँसो के चबूतरे पर पुन लेट गए। एक घण्टा और बीत गया। जोबानू अब ऊघने लगा था, किन्तु मेरी नजर नरभक्षी को ढूढ रही थी। सहसा छोटी-छोटी झाडियो के मध्य मुझे दो अगारे दहकते हुए महसूस हुए। फिर शनै शनै सिमट कर ये दोनो लाल आखें बन गईं। मैंने जोबानू को झझोडा और उसे बकरी की ओर बढती हुई लाल आखें दिखाईं। शेर को देख कर जोबानू के शरीर मे झुरझुरी-सी उत्पन्न हुई। मुझे पता था कि उसका निशाना अच्छा नही। मैंने उसे मौन रहने और मूक लेटे रहने को कहा और राइफल की नली का मुह उस दिशा मे कर दिया। मेरी राइफल पर टार्च बँधी हुई थी। मेरा विचार था, जैसे ही शेर बकरी को दबाएगा, मैं टार्च के प्रकाश के दायरे मे गोली चला दूगा। शेर बहुत धीरे-धीरे आगे बढ रहा था। फिर न जाने उसे क्या हुआ कि वह जोर-जोर से दहाडने लगा जैसे उसे हमारी उपस्थिति का आभास हो गया हो। इसके साथ ही वह रुक गया। शायद आगे बढने के बजाय लौट जाना चाहता है। अब और प्रतीक्षा करना व्यर्थ था। मामूली-सा सन्देह भी शेर के फरार होने मे सहायक हो सकता था। मैंने राइफल पर बधी टार्च का बटन दबाया और साथ ही प्रकाश के वृत्त मे शेर पर गोली चला दी। गोली उसके जबडे को चीरती हुई निकल गई और जैसे ही वह जमीन पर गिरा, मेरी दूसरी गोली उसके पेट मे घुस गई।

जोबानू ने चबूतरे पर से छलाग लगा दी और शेर की ओर दौडने लगा। मैं भी उसके पीछे-पीछे लपका। जब हम वहाँ पहुँचे, तब शेर ठण्डा हो चुका था। जोबानू खुशी से नाचने लगा। वह कभी शेर के मुरदा शरीर पर चढ कर नाचता और कभी उसके गर्म-गर्म खून को हथेली मे लेकर एक दो घूट अपने गले से नीचे उतार लेता। वह उल्लास से बावला हो रहा था। उसने अपनी मुसतर के हत्यारे से प्रतिशोध ले लिया था।

चीखे

यह मई १६४२ का जिक्र है। मैं उन दिना केनिया म रह रहा था और अबरडीर के रेस्ट हाऊस पर डेरा डाल रखा था। उस रस्ट हाऊस के चारो ओर दूर दूर तक खूबसूरत झाडियाँ और ऊँचे-ऊँचे पड फैले हुए थे। मैं हर रोज दस पन्द्रह मील जगलो म निकल जाता और प्रकृति के सुदर दश्यो से आनदित होने का प्रयत्न करता, किन्तु फिर अपनी अबोधता पर मुस्कराने लगता। भला दश्यो से कस आनन्दित हुआ जा सकता है। वास्तव म, उपन्यासो और कहानियो के अध्ययन के कारण मेरे अन्दर रोमांसवाद किसी जीती-जागती देवी की तरह एक मन्दिर बना रहा था।

मैं उस दिन सुबह ही से बेहद उदास था। मैं दस ग्यारह बजे तक बिस्तर पर ही करवटें बदलता रहा। उठा तो आस्कर वाईल्ड का उपन्यास ले बठा। यह उपन्यास क्या था भावनाओ की उमडती हुई धारा थी। मैंने यो महसूस किया कि शिकारी जिन्दगी की गहमा गहमिया के बावजूद मेरी जिन्दगी मे जो एक शून्य है वह और अधिक व्यापक होता जा रहा है। मुझे बरबस अपनी स्वर्गीय पत्नी याद हो आयी जो आठ वप पहले मुझे वियोग दे गयी थी। सच बात तो यह कि मैंन उसके वियोग की कटुता को कम करने के लिए ही शिकारी-जीवन अपनाया था। मने सोचा था कि जन्तुआ के देश म रहो से मैं अपनी वीरानियो को भूल जाऊँगा पर ऐसा मालूम होता है कि भावनाआ की तरगें अन्दर ही अन्दर चलती रहती हैं। फिर मुझे एकाएक स्वगवासी पत्नी के वे शब्द याद आ गये, जिन्हें उसन मरने से पहले रुकते-रुकत कहा था।

देखना, अगर मेरी मौत के बाद तुमने मेरे प्रेम का अपमान किया तो मेरी आत्मा को कभी शांति प्राप्त न होगी।'

'क्या मतलब आपका प्रेम के अपमान से ?' मैंने व्याकुल होकर पूछा।

पर उसकी जबान सदा के लिए मौन हो चुकी थी।

मैंने उसका मतलब यह समझा कि मैं उसकी मौत के बाद दूसरी शादी न करूँ। मैं इस प्रतिज्ञा पर कायम रहा। जब कभी दोस्त शादी की बात छेड़ देते तो मुझे अपनी स्वर्गवासी पत्नी की डबडबाती आँखें याद आ जातीं और मेरा दिल विचलित-सा हो उठता।

शाम के समय मैं रेस्ट हाउस के लान में कुर्सी डाल कर बैठ गया। मौसम साफ था, किन्तु कहीं-कहीं बादल के सफेद टुकड़े आस्मान पर तैर रहे थे। धूप ढलने लगी थी और फिर देखते ही देखते शरमाता हुआ सूरज एक ओर झुका। उसने अकेली बदली को बसंती जोड़ा पहना दिया। आस्मान के हाशिये सुर्ख हो गये थे। मैं इस सुन्दर दृश्य में खो गया। मुझे आस पास का कुछ होश न रहा। इस अवस्था में पन्द्रह-बीस मिनट गुजर गये। तन्मयता कुछ कम हुई, तो क्या देखता हूँ कि एक लड़की कुछ दूरी पर खड़ी हुई फर्श की ओर देख रही है। वह हमारे खानसामे की लड़की थी। मैंने उसे आवाज दी, 'जैरी ! क्या बात है। कैसे आयी हो इधर ?'

वह एक दो क्षण के लिए चुप रही और फिर फूट फूट कर रोने लगी।

'तुझे क्या हुआ ?'

वह रोती ही रही और धीरे धीरे मेरे निकट आकर बैठ गयी।

'मैं बड़ी अभागी हूँ। मैं किसे बताऊँ कि मुझ पर क्या बीती है ?'

मुझे उससे सहानुभूति हो गयी थी और मैं पता लगाना चाहता था कि उसे किस बात ने परेशान कर रखा है।

'जैरी ! तुझे क्या तकलीफ है ? मैं शायद तेरी कुछ मदद कर सकूँ।'

'मेरी क्या मदद करेंगे, आप। मैं जन्म-जन्म की सतायी हुई हूँ। मैं पैदा हुई तो मेरी माँ इस दुनिया से विदा हो गयी। मेरे बाप ने मुझे मनहूस समझा और मुझे इतनी यातनाएँ दीं कि बस मैं ही जानती हूँ। सारा गाँव मुझे मनहूस समझने लगा। मैं किसी के करीब जाती तो मुझे

दुत्कार दिया जाता।'

उसने इतना कहा और चुप हो गयी। उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे।

भर्राई हुई आवाज में वह फिर बोली, 'मुझसे कोई भी शादी करना नहीं चाहता ' यह कहते हुए उसने पूर्व दिशा में देखा और चीख मार कर बेहोश हो गयी।

मुझे आश्चर्य भी हुआ और हँसी भी आयी। समझ में नहीं आता था कि बातें करते-करते उसे अचानक क्या हो गया है। मैं कुर्सी से उठा और जैरी की ओर लपका। सहसा मेरी नजर सामने की ओर दीवार पर पड़ी, जिस तरफ जैरी ने बेहोश होने से पहले देखा था। एक बहुत बड़ा साया काँप रहा था। वह तेजी से हमारी ओर बढ़ रहा था। वह किसी इन्सान का साया नहीं था। एक दैत्याकार हाथी झूमता झूमता आ रहा था और वह इतना निकट आ गया था कि हमारे बीच मुश्किल से दस गज का फासला रह गया। मेरी राइफल रेस्ट हाऊस में थी। उस समय बेहोश जैरी को घसीट कर ले जाना भी असम्भव था। मैं बेतहाशा अपने कमरे की ओर दौड़ा। वह लगभग पचास गज की दूरी पर था। हाथी ने बेहोश जैरी को अपनी सूँड में उठाया और पूरी शक्ति से जमीन पर पटक दिया। दूर एक चीख बुलन्द हुई। वह जैरी के बाप की चीख थी जो रसोईघर से इस सारे हृदयविदारक दृश्य को देख रहा था। जैरी का दिमाग फट गया और भेजा बाहर निकल आया। उसके साथ ही हाथी भी चिंघाड़ा और फिर तेजी से कदम उठाता हुआ जंगल में गायब हो गया। मैं जब राइफल लेकर बाहर आया, तो खानसामा अपनी बेटी के शव के पास बैठा फफक फफक कर रो रहा था।

जैरी अभी-अभी मेरे सामने बैठी अपने दुर्भाग्य पर रो रही थी। उस समय यह शंका नहीं थी कि यह उसके जीवन का अन्तिम साँस है। मेरी आँखें भी सजल हो गयीं। मैंने एक दृष्टि बूढ़े रसोइये पर डाली और फिर बिना सोचे समझे हाथी के पीछे निकल खड़ा हुआ। मैंने दो मील का इलाका छान मारा मगर हाथी का सुराग न मिला। अँधेरा गहरा ।। जा रहा था। उस अँधेरे में से मुझे जैरी उभरती हुई नजर आयी

और फिर यों महसूस हुआ जैसे वह मुझसे निपट जायगी। मेरे कदम रुक गये और मैं रेस्ट हाउस की ओर मुड गया।

जब मैं वापस पहुँचा, तो बूढ़ा रसोइया अपनी बेटी को दफना कर निपट चुका था। मुझे देखते ही वह बच्चों की तरह रोने लगा। मेरे मस्तिष्क पर पहले ही बहुत अधिक बोझ था, मैंने अपने आपको संभाला और उसे दिलासा दिया कि मैं हत्यारे से अवश्य प्रतिशोध लूंगा।

हाथी स्वभाव से दयालु और शान्तिप्रिय जन्तु है और उसके बारे में यह बात विश्वास से कही जा सकती है कि वह अकारण दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाता, किन्तु जब उस पर मस्ती का दौरा आता है तो वह बहुत ही खतरनाक दुश्मन सिद्ध होता है। वह फिर बच्चे, बूढ़े, औरत और मर्द किसी में भेद नहीं करता। वह तबाही और बरबादी का एक ऐसा सिलसिला शुरू कर देता है जो मुद्दतों खत्म नहीं होता। जिस हाथी ने जरी को मारा था, वह निश्चय ही मस्त हाथी था।

मैं रातभर उस दुर्घटना पर चिन्तन करता रहा। पता नहीं नींद कब आयी। सुबह उठा तो बूढ़ा रसोइया मेज पर चाय रख रहा था। उसकी आँखें सूजी हुई थीं। उसने भर्राई हुई आवाज में बताया कि चकम्बा गांव का सरदार नौरी मिलने आया है और साथ वाले कमरे में बैठा है। मैंने सरदार को अन्दर बुला लिया। कसरती शरीर घुंघराले बाल, नाक के दोनों नथुनों में हाथी दांत की एक एक इंच लम्बी सिलाइयां और सिर पर जानवरों के पैरों की टोपी, कमर पर तरकश हाथ में कमान जो उसके कद के बराबर थी। मैं सरदार के स्वागत के लिए आदरपूर्वक खड़ा हो गया। इसके साथ एक और व्यक्ति भी था जिसने घुटनों तक फटी पुरानी नेकर पहन रखी थी। उसकी आँखों से शरारे बरस रहे थे। वह बार-बार अपने दोनों हाथों की मुट्ठियाँ भींचता और निचले होंठ को अपने दांतों में दबा लेता। उस पर जुनून जैसी अवस्था छायी हुई थी।

सरदार ने बताया कि उसके साथ वाले का नाम समीटा है। रात उसका भाई, जिसकी उम्र बाईस वर्ष थी एक किसान के साथ खेत से वापस आ रहा था। उन्होंने पगडण्डी पर एक बहुत बड़ा साया देखा।

पहले तो वे खडे क खडे रह गये। फिर एक न साये पर इट खीच मारी। फौरन ही दो दो बडे-बडे कान फडफडाये और हाथी अपनी सूंड उठाकर उनकी ओर लपका। उसन ससीटा के भाई को सूड म लपेट लिया और फिर जमीन पर पटकवकर पाँव तले रौद डाला। दूसरा किसान मकई के खेत मे दुबक गया। जब हाथी चला गया, तो उसन गाँव आकर इस दुघटना की सूचना दी। सरदार ने बताया कि हाथी इस समय गाँव के निकट ही कही जगल म छुपा हुआ था। अगर उसका तुरन्त पीछा किया जाय तो ढूढा जा सकता है। ससीटा जगल के रास्तो से परिचित है। यह हमारे लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

दूसरी दुघटना सुनकर मेरा खून खौलने लगा। चाय का हर घूट मुझे गरमा रहा था। मेरे पास जफरी की दोनाली राइफल थी। मैंने उससे सकडा खूखवार जन्तुओ का शिकार किया था और आज तक उसका निशाना भी खाली नही गया था। मैंने कपडे बदल, राइफल उठायी और ससीटा को लेकर हाथी क पीछे रवाना हो गया। धूप तेज थी और हवा भी खासी तीक्ष्ण थी। दूर-दूर तक फैले हुए मकई क खेत लहरा रहे थे। मैं और ससीटा हाथी के पदचिह्नो को देखत हुए आग बढ रहे थे। हम दोनो पसीने से सराबोर थे। म पन्द्रह बीस मिनट के बाद रुकता और थमस मे से दो घूट पानी पीकर चलने लगता, पर ससीटा एक ही रफ्तार से तज-तेज चलता रहा। उसने एक बार भी पानी नही माँगा जैसे वह अपनी प्यास हाथी के खून से बुझाना चाहता हो। अभी हम तीन चार मील ही गये होंगे कि हाथी के चिंघाडने की आवाज सुनाई दी और फिर उसके साथ ही औरतो और बच्चो के रोने-पीटने और मर्दों के चिल्लाने की आवाजें उठी जसे उन पर कोई कयामत टूट पडी हो। हम दोनो एक क्षण के लिए रुके ताकि सही दिशा का अनुमान लगा सकें। ससीटा न वायुमण्डल को सूघ कर बताया कि हाथी दो फर्लांग दूर बरेरो गाँव मे है। य आवाजे वही से आ रही हैं।

उस गाव का रास्ता बहुत ही दुष्कर था। खेता से हट कर हमे गाव तक पहुँचने म चालीस मिनट लग गय। हम जब वहा पहुँचे, अजीब-सी दशा देखी। हाथी ने लगभग सभी झोपडिया को अपने पाँव तले

रौद डाला था। अनाज से भरे मटको को तोड-फोड दिया था। उसे खाने-पीने की जो भी चीज नजर आयी, वह उस हडप कर गया। गाव के एक जियाले नौजवान ने चिल्ले पर तीर चढाया। किन्तु इससे पहले कि तीर कमान से निकलता, हाथी ने युवक को अपनी सूड मे लपेट लिया और अपने पाव के नीचे दबाकर उसकी दोना टागें चीर डाली। उसकी छोटी वहन जिसकी उम्र आठ वष थी इस दृश्य को देखकर अपने को काबू मे न रख सकी और अपन भाई की लाश से लिपट गयी। हाथी न अपना भारी भरकम पाँव उसके नन्हे-मुन्न जिस्म पर रख दिया। उसके मुह से हल्की सी चीख निकली और वह जमीन से चिपक गयी।

गाँव वालो ने बताया कि इस तबाही के बाद हाथी पूर्वी दिशा मे चला गया। ससीटा ने चुटकी बजायी जसे उसने कोई भेद पा लिया हो। उसने बताया कि जिस ओर हाथी गया है, वहा बहुत बडा तालाब है। वह तालाब पर ही गया होगा। वह वहा पर जाकर नहायेगा। यद्यपि मैं बहुत थक गया था, पर लोगो की दुदशा और ससीटा की बेचैनी देखकर मुझसे रहा न गया और हम उसकी तलाश म निकल पडे। मेरी कलाई की घडी तीन बजा रही थी। भूख भी खूब चमक उठी थी। मैंने जेब से कुछ बिस्कुट निकाले। स्वय भी खाये और ससीटा को भी दिये। मैं बार-बार ससीटा से पूछ रहा था कि तालाब कितनी दूरी पर है। बस थोडी दूर रह गया है। हर बार वह यही जवाब देता। चलने चलते एक घण्टा गुजर गया। तालाब का दूर दूर तक नामो निशान न था। मैं यह सोच ही रहा था कि अपने साथी को वापस चलने के लिए कहूँ, सामन के पडा मे कुछ हरकत हुई। यो महसूस हो रहा था जैस कोई बडी चीज पेडो के बीच से गुजर रही है। मैंने तुरन्त ससीटा को इशारा किया कि वह एक ऊँचे पेड पर चढ जाय और मैं स्वय उस पेड के तने के साथ खडा हो गया। शेर की अपेक्षा हाथी का शिकार बहुत ही आसान है। मैंन बेधडक कई हाथियो का शिकार किया है, किन्तु इस बार न जाने क्यो मैं भय-सा महसूस कर रहा था। शायद इसका कारण यह भी था कि यह हाथी खूख्वार बन चुका था और अपने आम स्वभाव से हट कर तबाही-बरबादी पर तुला हुआ था।

एक, दो, पाँच दस मिनट बीत गये । हाथी कहीं नजर न आया । ऊँचे ऊँचे पेडो के नीचे उगी हुई झाडियो म खडखडाहट भी रुक गयी । मैंने इशारो ही इशारा म ससीटा स पूछा कि हाथी कहाँ है वह इमली क तनावर पेड की एक ऊँची डाल पर बैठा आँखें फाड फाडकर देख रहा था । उसने हवा मे अपन हाथ की उगलियाँ नचाते हुए जवाब दिया कि वह कहीं नजर नही आया । अचानक सूखी शाखाओ के टूटन और खुश्क पत्तो की आवाज फिर गूजी । मेरी नजरें सामन की ओर जम गयीं । कोई भारी भरकम चीज मेरी ओर हरकत कर रही थी । मैंने ट्रिगर पर हाथ रखा और गोली चलाने ही वाला था कि ससीटा खूब जोर स हँसा । मुझे खयाल आया कि वह अपन भाई की मौत मे दुख से पागल हो गया है । मैं बौखला गया । अचानक पेडो म से एक दस्तकाय सूअर बरामद हुआ । मैंने जीवन में इतना बडा सूअर पहली बार देखा था । गाय से कुछ ऊँचा ही था । हाथी-दाँत की तरह उसके दो दाँत निकले हुए थे । अगर सूड होती और दो बडे-बडे कान लगे होते तो उसे हाथी का बच्चा कहा जा सकता था । मैंने सोचा क्यो न गोली चला दी जाय । फिर सहसा खयाल आया कि हाथी अगर निकट ही हुआ, तो वह जगल मे दूर निकल जायगा । यह खयाल आत ही मैं एक पेड की ओट मे हो गया । सूअर मुझे देखकर जगल म गायब हो गया । उस समय शाम क पाँच बजे थे । सूय थके हारे यात्री की तरह श्रांत नजर आ रहा था । मजिल की दूरी न उसके चेहरे की आभा छीन ली थी ।

मैंने अपने साथी से कहा कि हम लौट जाना चाहिय और गाँव मे रात बिता कर सुबह हाथी को ढूँढा जाय । पर ससीटा का आग्रह था कि हम तालाब पर हाथी अवश्य मिलेगा और यह अवसर हाथ से निकल गया तो शायद फिर हमारे लिए उसे ढूँढना कठिन हो जाय । यह बात भी तो है कि वह सुबह तक न जान कितनी तबाही कर डाले । एक शिकारी की हैसियत स मैं उसकी राय से सहमत था । हम दोनो तालाब की ओर चल दिये । अँधेरा बढ़ता जा रहा था और पक्षी बसेरे के लिए पेडा पर आ बठे थ । सारा जगल पक्षियो की चहचहाट स गूज रहा था । हम अनुमान से आगे बढ रहे थे । हम म से किसी के पास भी टाच नहीं

थी। आध घण्ट के बाद जगल पर मौत जैसा सन्नाटा छा गया और मुझे यो महसूस होने लगा जैसे हम मौत की वादी की ओर चले जा रहे है।

हम जब तालाब के निकट पहुचे, रात अपनी जुल्फें खोल चुकी थी। चाँद देर से निकल आया और अँधेरे म कमी हो गयी। अब हम सँभलकर कदम उठा रहे थे। सहसा तालाब से शप शप की आवाज आयी। एक दो क्षणा के लिए हमने साँस रोककर आवाज को सुना। या महसूस होता था जस हाथी सूड मे पानी भरकर फेंक रहा था, पर जब हमने पेडा की ओट स देखा तो हाथी कही भी नजर न आया। पानी म बडे बडे साँप तैर रह थे और शप शप की आवाज भी यही पदा कर रह थे। केनिया के साँप बहुत विषैले होते हैं और दुश्मन पर ऐसे अचानक हमला करते हैं कि वह सभल भी नही पाता। तालाब म साँपा को देखकर मैं काप उठा, लेकिन ससीटा के चेहरे पर परशानी के जरा भी चिह्न प्रकट नही हुए थे। उसन बहुत निश्चितता से आस पास का निरीक्षण किया और एक ऊँचे पड की ओर इशारा करत हुए कहने लगा, 'आज रात इसी पड पर गुजारनी होगी। हाथी सुबह तक यहाँ अवश्य आयगा। अगर हम चाह भी तो अब वापस नही जा सकत। हम जिन रास्ता से गुजर कर आय हैं। वे विषैले साँपो से अटे पडे हैं। य साप दिन भर बिलो म छुपे रहत ह और रात होत ही बाहर आ जाते है।'

यह पेड तालाब के किनार था और काफी ऊचा था। उसका तना मजबूत और मोटा था। ऊपर टहनियाँ आर शाखे इस तरह फैली हुई थी कि उन पर आराम से बैठा जा सकता था। मैंन जेब से दो बिस्कुट निकालकर ससीटा को दिय और दो ही स्वय खाये। उसने तालाब से जानवरा की तरह मुह लगाकर पानी पिया। मैं हैरान था कि वह विषैले साँपो से बिल्कुल भयभीत नहीं है। मैंन थमस म स अतिम तीन घूट पीये और उस एक शाख पर लटकाकर स्वय एक मोट तन का सहारा लेकर एक मजबूत शाख पर बैठ गया। मैंने राइफल भी एक टहनी से लटका दी थी। ससीटा एक दूसरी शाख पर बैठा ऊघने लगा। मुझ पर नीद न हमला कर दिया, पर मैं सोना नही चाहता था। मुझे खतरा था कि कही लुढक कर नीच न गिर पडू। अभी रात अधिक नहीं बीती थी

कि हमे एक अप्रत्याशित मुसीबत न आ घेरा। पेड पर असख्य बन्दर नींद के मजे ले रहे थे कि अचानक किसी एक की नजर हम दोना पर पड गयी। बस फिर क्या था, उसने शोर मचा कर सबको जगा दिया और अब बन्दरा की सेना हम तरह-तरह से डरा धमका रही थी। कई तो इतने दिलेर थे कि हमारे सिरा पर धौल जमाकर भाग जात। एक ने मेरी राइफल पर हाथ साफ करना चाहा और दूसरे ने थमस को उडाना चाहा। राइफल तो भारी थी। उमके चरमी फीन को टहनी स निकालना आसान नहीं था, पर हल्की-फुल्की थमस उसके हत्थे चढ गयी। डेढ दो घण्ट की उछल फाद के बाद जब उन्ह विश्वास हो गया कि उन्हें हमसे कोई खतरा नही और हम भागन वाले भी नही, तो व चुप हाकर बैठ गय। सारी रात आँखा म कटी।

सूय उदय हुआ तो बोझिल आँखा के साथ हम नीचे उतर आय। तालाब पर शान्ति थी। हमने मुह हाथ धोय। मैं भूख से बेहाल हो रहा था। सहसा मरे साथी की नजर जमीन पर पडी। हाथी के पदचिह्न बिल्कुल ताजा थे। प्रतीत होता था कि हाथी जरा पहल यहाँ स गुजरा है। हम रेतीली जमीन पर और कही रौंदी हुइ घास पर इन पदचिह्नो को ढढत हए आग बढत गय। एक घण्टे के कठिन सफर के बाद हम मक्ई के खेत क निकट पहुचे। हम यह देख कर हैरान रह गये कि लगभग आधा खेत उजडा हुआ है। जगह जगह मक्ई के भुटटे बिखरे पडे है। सकडा पौधा को जमीन स उखाड कर इधर उधर फेंक दिया गया है। एक जगह ससीटा के कदम रुक गये। वह बडे गौर से एक बहुत बडे सुख धब्बे को दखन लगा। मैंने झुककर हाथ स उस धब्बे का छुआ। ताजा खून था। हम विश्वास हो गया कि हाथी ने खेत ही को बरबाद नही किया बल्कि किमान को भी मार डाला है। चालीस पचास कदम की दूरी पर हम खून से लथपथ अभाग किसान की लाश मिली। हाथी ने लाश को इस निममता स रौंदा था कि उसकी हडडी-हडडी अलग हो गयी थी।

दुश्मन बहुत निकट था। हम उससे दो-दो हाथ करन क लिए बिल्कुल तयार थ। हमने सोचा कि अब हाथी का अन्त आ पहुँचा है।

हम एक नये संकल्प के साथ आगे बढ़े।

'वह देखो, हाथी!' ससीटा ने सामने इशारा करते हुए कहा। लगभग एक फर्लांग की दूरी पर हाथी तेज-तेज कदम उठाता गाँव की ओर बढ़ रहा था। हाथी को देखकर हमारे जोश और उत्साह में कई गुणा वृद्धि हो गयी। हम उस ओर दौड़ते हुए बढ़े। हमारा अनुमान था कि वह गाँव के निकट जाकर रुक जायेगा और स्वभावानुसार तबाही का बाजार गरम कर देगा। इतनी देर में हम वहाँ पहुँच जायेंगे और उसे आसानी से गोली का निशाना बना लेंगे। लेकिन दुर्भाग्यवश एक बहुत बड़ी बाधा ने हमारा रास्ता रोक लिया। गाँव और खेतों के बीच एक छोटी सी नदी बह रही थी। हम कुछ दूर तक पुल ढूंढ़ते रहे पर शायद पुल बहुत दूर था। हमने नदी को तैर कर पार करना चाहा। तैरते समय सबसे अधिक इस बात का डर था कि कहीं राइफल और कारतूस पानी में न गिर पड़ें। मैं केवल एक हाथ से पानी को पीछे धकेल रहा था और दूसरे हाथ में राइफल और कारतूसों की पेटी थी। जैसे ही हम नदी से निकले, गाँव से चीखने चिल्लाने की आवाज़ें उठीं। हम भीगे कपड़ों सहित उस ओर लपके और पन्द्रह-बीस मिनट के अन्दर-अन्दर वहाँ पहुँच गये। हाथी ने झोपड़ियों को रौंद डाला था। उस गाँव में पचास के लगभग झोपड़ियाँ थीं। वह इन सबको उखाड़ फेंकने पर तुला हुआ था। प्रलय का-सा दृश्य था। चीख पुकार ने हमारे दिल दिमाग को बुरी तरह प्रभावित किया था। हमने प्रोग्राम बनाया कि जैसे ही हाथी गाँव से बाहर निकले, उस पर गोलियाँ चला दें। गाँव में हाथी पर गोलियाँ चलाने में खतरा था कि निशाना चूक जाये और गोली किसी इन्सान को जा लगे। पर ससीटा दुश्मन को देखकर क्रोध से पागल हो गया था और उसने मेरी हिदायत की परवाह किये बिना झोपड़ियों के बीच दौड़ना शुरू कर दिया। मैं चीख चीखकर उसे रोकता रहा किन्तु वह पागलों की तरह आगे ही आगे बढ़ता चला गया। सहसा मैंने उसकी एक हृदयविदारक चीख सुनी। मैं उस ओर दौड़ा और एक भयंकर दृश्य देखकर मेरे पाँव तले से जमीन निकल गयी। हाथी ने ससीटा को सूंड में जकड़ रखा था और वह हवा में हाथ-पाँव मार रहा था। हाथी ने मुझे

देखते ही ससीटा को जोर से पटक दिया। वह बेचारा झोपड़ी पर जा गिरा। वह झोपड़ी उसके बोझ को सहन न करते हुए जमीन पर झुक गयी। हाथी तेजी से मेरी ओर बढ़ा। अब उसकी सूंड और मेरे बीच केवल पाँच फुट का फासला रह गया था। मैंने ट्रिगर दबा दिया। गोली उसके सीने को चीरती हुई अन्दर धँस गयी। हाथी क्रोधावेश में चिंघाड़ा और पूरी शक्ति से आगे बढ़ा। मैं फुर्ती से पीछे हटा। उसने मुझे एक बार फिर घेरे में लेने का प्रयत्न किया। वह अब मुझसे केवल छः इंच की दूरी पर था। उसका क्रोध बढ़ता जा रहा था। वह पूरी शक्ति से एक बार फिर चिंघाड़ा और इसी घबड़ाहट में मुझसे दूसरी गोली चल गयी। गोली हाथी के गले को चीरती हुई निकल गयी। वह लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़ा। मैं राइफल को पुनः लोड कर चुका था। पाँच गोलियाँ लगातार चलायी। हाथी के शरीर से खून के फव्वारे छूट गये और वह ठण्डा हो गया।

गाँव के लोग बाहर निकल आये। अब मुझे ससीटा की चिन्ता हुई। वह धँसी हुई झोपड़ी में पड़ा कराह रहा था। मैं उसे अस्पताल ले गया जहाँ वह दो माह तक रहा। वह आज एक अपंग का जीवन व्यतीत कर रहा है, किन्तु वह खुश है कि उसके भाई का हत्यारा उसकी आँखों के सामने मारा गया है।

—अबने नदवी

ऊँची पुलिया पर चार आँखें

रात दस बजे का समय था। फिएट कार फर्राटे भरती हुई ग्वालियर के मुरेना जगल के मध्यवर्ती भाग को तय कर रही थी। मेरे साथ मेरे दो मित्र, एक आदम, जो बम्बई के प्रसिद्ध व्यापारी थे, और दूसरे, दिल्ली की एक दवाइया की दुकान के स्वामी—डॉक्टर फजल थे। हम तीनो मडला से सफल शिकार-अभियान से वापस ग्वालियर आ रहे थे। आदम अपनी फिएट कार को तेजी से दौडा रहा था कि सहसा कार सडक पर लहराने लगी और कुछ दूर जा कर रुक गयी। एक पहिये म पक्चर हो गया था।

हम तीनो गाडी से उतरे और पहिया बदलने म व्यस्त हो गए। सडक के दोनो ओर जगल साय साय कर रहा था। हर ओर घुप अँधेरा था। अभी दो ही मिनट बीते होंगे कि चीतल की आवाज सुनाई दी। मेरे दोनो साथी तो पहिया बदलने मे लगे रहे और मैं आवाज की ओर केन्द्रित हो गया। एक क्षण बाद आवाज फिर सुनाई दी, जिससे अनुमान लगाया कि लगभग दो फर्लांग सामने की ओर कुछ चीतल मौजूद हैं।

कुशल शिकारी के लिए आवश्यक है कि जगल के हर जानवर की आवाज को गौर से सुने और उनकी आवाजो के अन्तर को समझे, क्योकि हर जानवर विभिन्न अवसरो पर विभिन्न आवाजें निकालता है। इस आवाज को सुनकर मैंने अनुमान लगाया कि चीतल ने किसी जन्तु की उपस्थिति को महसूस कर लिया है। ऐसे अवसर पर हर शिकारी अपनी राइफल को हाथ मे लेने की पहले कोशिश करता है, इसीलिए मैंने भी अपनी ताकतवर राइफल को केस से बाहर निकाल लिया।

राइफल पर टार्च फिट थी जो मैं सदा रात के समय जगल मे

करते हुए तैयार रखा करता था। कार की हैड-लाइट बन्द कर दी थी, इसलिए सामने कुछ नजर नही आ रहा था। मैंने माचिस की जलती हुई तीली से सामने की गतिविधि को देखने का असफल प्रयत्न किया और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ आग की ओर चल पड़ा। ग्वालियर एक देशी रियासत थी। इसलिए वहाँ शिकार पर कोई प्रतिबन्ध नही था। महाराज ग्वालियर स्वय भी एक कुशल शिकारी थे। इसलिए शेर तो एक एक करके सब उनकी गोली का निशाना बन चुके थ, लेकिन शेरो के अतिरिक्त यह जगल चीतो से भरा हुआ था।

सड़क के दोनो ओर छिदरी छिदरी ऊँची झाड़ियाँ जगह-जगह फैली हुई थी। अब मैं टार्च जलाए हुए आगे की ओर सड़क के मध्य मे सभल-सभल कर चल रहा था। इन बिखरी झाड़ियो के सिवाय प्रकाश के सामने कोई बाधा न थी, पर पीछे जो परछाइयाँ पड रही थी, वह बहुत डरावनी प्रतीत होती थी।

चीतलो की आवाज अब साफ और स्पष्ट होती जा रही थी। मैं आगे बढ रहा था और पीछे न जाने मेरे दोनो मित्र क्या कर रहे थे। लगभग दो फर्लांग चलने के बाद मुझे चीतलो की हरी चमकती हुई आँखें नजर आ गयी। कुछ और समीप पहुँचने पर कोई दस-पन्द्रह चीतल बेचैनी से गरदनें उठाये हुए नजर आए। इनमे से पाँच जरा पास-पास खड़े थे। कुछ सेकण्ड बाद उन्होने फिर आवाजें निकाली। इनमे हलचल मची हुई थी। जब मैं तनिक और निकट पहुँचा तो वे सब बहुत भय के साथ धीरे धीरे जगल मे बाइं ओर चले गए।

मुझे इन चीतलो मे कोई दिलचस्पी न थी इसके सिवा कि वे मुझे किसी हिंस्र जन्तु के निकट होने का एहसास दिला गए थे और साथ ही उसकी उपस्थिति की दिशा भी बता गए थे। वह इस प्रकार कि हिरण, चीतल और इस प्रकार के अन्य जानवर सदा सकट की विरोधी दिशा मे भागते हैं। चीतल बाइं ओर के जगल मे गायब हुए थे, इसलिए अनिवार्य रूप से दाइं ओर का जगल मेरी दिलचस्पी और सतर्कता का केन्द्र बन गया था।

मेरा सारा ध्यान दाइं ओर ही केन्द्रित था। जिस स्थान से चीतल

वाइ ओर के जगल म दाखिल हुए थे, वही से सडक की दाइ ओर एक पगडडी जगल मे प्रवेश करती हुई नजर आई जो जानवरो के वार-बार गुजरन म वन गई थी। मैं उस पगडडी पर हो लिया जो कुछ आगे जा कर वल-गाडियो के एक कच्चे माग पर पहुँच कर समाप्त हो गई। यहा स दाएँ-वाएँ कच्चा रास्ता दूर तक चला गया था। यह वहुत अच्छा अवसर था क्योकि टाच का प्रकाश दूर तक पड रहा था और हर चीज साफ नजर आ रही थी। मैं दाइ ओर कच्चे रास्त पर चलने लगा। अब मरी दिशा जगल के भीतर कार की ओर हो गयी थी। यह कच्चा रास्ता भी सडक के समानान्तर था। कच्चे रास्त पर थोडा आगे वढा ही था कि मुझे कुछ दूरी पर एक पुलिया नजर आयी जिसके दोना किनारो पर मुडेर वनी हुई थी। ऐसी पुलिया जगलो मे छोटे छोटे नालो को पार करन के लिए वन विभाग बना दिया करता है।

इस पुलिया की वाईं मुडेर पर मुझे दो चमकती हुई आँखें नजर आइ। मैं तुरन्त भाँप गया कि यह तेन्दुए की आँखें हैं। मैं आगे की ओर रेंगन लगा ताकि फायर करने के लिए अपन निश्चित फासले तक पहुँच सकू। मरा अनुभव है कि किसी जानवर पर कम से कम इतने फासले से फायर करना चाहिए, जहाँ से उसका सिर बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे। इसलिए मैं धीरे धीरे रेंगता हुआ तेन्दुए के और निकट पहुँच गया और फासला लगभग पचास साठ गज रह गया।

अव मैंन देखा कि एक तेन्दुआ पुलिया की चौडी मुडेर पर कूल्हे के वल वैठा हुआ टाच के चमकते हुए प्रकाश की ओर देख रहा है जो धीरे-धीरे उसकी ओर बढ रहा है। उसके पाव के निकट दूसरा तेन्दुआ लेटा हुआ था और ऐसा लग रहा था कि जगल की रात की ठडी-सुखद हवा म गहरी नीद सो रहा है। मैं सरकता हुआ निकट पहुँचा, क्योकि पहरा देन वाले तन्दुए ने कोई ऐसी हरकत नही की जिसस प्रकट होता कि वह काइ सकट अनुभव कर रहा है। मैं टाच के प्रकाश के पीछे था इसलिए तेन्दुए को नजर नही आ रहा था। टाच के प्रकाश मे तन्दुए का सफेद सीना चमक रहा था जो अच्छा निशाना लेन के लिए बहुत उपयुक्त था। मैंन निशाना लिया और घोडा दवा दिया। धमाका हुआ और दूसर क्षण

मुडेर पर कुछ भी न था। दोनों तेंदुए एक ही समय छलांग लगाकर मुडेर की दीवार के पीछे गायब हो चुके थे।

मैं राइफल को पुन लोड करते हुए बहुत तेज गति से भागता हुआ ऊँची पुलिया पर पहुँचा और मुडेर पर खडा हो गया जहाँ कुछ क्षण पहले दो तेंदुए मौजूद थे। नीचे झाँका तो देखा कि एक तेंदुआ नाले के ढलान पर किनारे के पास मरा पडा है। मुझे दूसरे की चिन्ता हुई। पास की झाडियों की ओर टार्च का प्रकाश फेंकते हुए देखना शुरू कर दिया। लगभग सौ गज की दूरी पर मुझे दूसरे तेंदुए की आँखें चमकती हुई नजर आ गयी पर फासला बहुत अधिक था। मैंने टार्च की दिशा फिर मुरदा तेंदुए की ओर मोड दी ताकि विश्वास कर सकूँ कि वह मर चुका है और मक्कारी नहीं कर रहा। वह निश्चल पडा था इसलिए मैंने भागते हुए तेंदुए की ओर प्रकाश डाला जिसकी आँखें अब भी उतने ही फासले पर चमक रही थी। मैं बारी बारी दोनों की ओर प्रकाश फेंकता रहा, ताकि मैं दोनों पर नजर रख सकूँ।

मुझे कुछ सन्देह हुआ जैसे मरे हुए तेंदुए के अंग हरकत कर रहे हों। शायद मेरी टार्च के गतिशील प्रकाश के कारण मेरी नजर का धोखा हो, पर मैं विश्वास करना चाहता था, इसलिए मैंने टार्च का प्रकाश उस पर केंद्रित कर दिया। सहसा उसका भागा हुआ जीवन साथी एकाएक प्रकाश के दायरे में प्रकट हुआ और निकट ही खडा होकर अनुमान लगाने लगा कि उसका साथी क्यों ऐसे पडा सो रहा है और धमाका सुनकर भागा क्यों नहीं?

वह आशापूर्ण नजरों से अपने मरे हुए साथी की ओर देख रहा था। मध्यवर्ती फासला कठिनता से बीस फुट होगा। तेंदुआ प्रकाश की परवाह बिल्कुल नहीं करता और न ही प्रकाश के संकट से डरता है क्योंकि वह उसे चाँद तारों और सूर्य के प्रकाश की तरह हानिकारक नहीं समझता है। मैं उसे टार्च के पीछे दिखाई नहीं देता होऊँगा, लेकिन मुझे आश्चर्य तो इस बात पर था कि वह एक चमकती हुई टार्च के इतना निकट होने पर भी निश्चिन्त और बेपरवाह था। उसने एक नजर भी टार्च की ओर डाली और वह अपने मरे हुए साथी को जाँचने में मगन रहा।

निकट होने की अवस्था मे मैंने निशाना लिए बिना उस पर फायर कर दिया और दूसरे क्षण वह दोनो अगल बगल मुरदा पडे थे । मैं कच्चे रास्ते पर उतरा और घूम कर पुलिया के सिरे पर पहुँचा, ताकि मैं निकट मे निरीक्षण करके अपनी गोलियो के निशान देखू । दोनो गोलियाँ कुछ ऐसे सही भागो पर लगी थी कि जहा गोली लगते ही पलक झपकते मात हो जाती है । ऐसे अवसरो पर यदि गोली मारक न हो, तो शिकारी के लिए पुन राइफल लोड करते हुए तेन्दुए के जवाबी हमले से बचना बहुत कठिन हो जाता है । मैं वापस मुडा ताकि अपने मित्रो की कार्यकुशलता भी देखू और फिर मुर्दा तेन्दुओ को उठाने के लिए मशवरा भी कर सकू ।

जिन लोगो को रात को शिकार करने के ढग का अनुभव नहीं है व इस बात पर कठिनता से विश्वास करेंगे कि तन्दुआ तेजी से भागता हुआ आकर शिकारी के कदमो मे कुत्ते की तरह लोट भी सकता है । और यह स्थिति शिकारी के लिए बेहद खतरनाक होती है। एक कुशल शिकारी के हाथ मे टार्च जादू की छडी का काम देती है । मेरी शिकारी जिन्दगी म ऐसी कई घटनाएँ है जब तेन्दुआ टार्च की चमक से सम्मोहित होकर संज्ञा-हीन हो गया और भागने की शक्ति गँवा बैठा ।

जिस पर मैंने पहले गोली चलाई वह नर-तन्दुआ था । गोली चलाने के बाद उसका छलाँग लगा कर गायब होना एक अनिवार्य और स्वाभाविक क्रिया थी । मुरदा हालत म उसका दीवार के निकट गिरना आवश्यक था, पर वह लगभग पन्द्रह फुट की दूरी पर जा गिरा था । मेरे विचार से उसने बचने के लिए यथावसर छलाँग लगाई पर सही निशाने के कारण पुन उठ न सका । दूसरा तन्दुआ उसकी मादा थी और बन्दूक की आवाज के साथ ही घबरा कर पुलिया से कूद गयी थी क्योंकि उसने अपने साथी को भी ऐसा ही करते देखा था । जब उसकी घबराहट कम हुई तो वह अपने साथी को न पाकर लगभग सौ गज की दूरी पर रुक गयी और पीछे मुडकर देखा । उस समय मैं उसके मरे हुए नर पर प्रकाश डाल रहा था । उसने भी अपने नर को लेटे हुए देखा और उसका जीवित समझते हुए फिर वापस मुडकर उसके निकट आयी और जैसे ही वह मेरी टार्च के प्रकाश के दायरे मे आयी, मारी गयी । वह बेबस अपने नर के

प्रेम मे मारी गई, पर मुझे यहाँ यह कहना है कि यह सब टाच की जादूगरी थी।

दोना को मुरदा हालत म छोडकर मैं कार के पास आया। मरे दोना मित्र मेरे लिए चिन्तातुर थे। वे कार का पहिया बदल चुके थे। मैंन उन्हे घटना से अवगत किया। हम रात को दो बजे मुरेना पहुँचे और सुबह कुलिया से दोना तेन्दुए उठवा लाये।

—मेजर बहाउद्दीन

कैस्पियन का आदमखोर

शरकी ने जब यह खबर सुनी कि कैस्पियन के आदमखोर शेर ने अली बेग मछुए का हड़प कर लिया है तो उसके क्रोध की सीमा न रही। उसने उसी समय निश्चय कर लिया कि जब तक इस आदमखोर को मार न लेगा, उसका खाना-पीना और सोना हराम है। बदनसीब अली बेग मछुए से पहले यह आदमखोर एक सौ ग्यारह लोगों को अपना ग्रास बना चुका था। अली बेग गाँव रादसार का रहने वाला और शरकी का अन्तरंग मित्र था। वह अपने दो साथियों के साथ सवेरे सूर्य निकलने से थोड़ी देर पूर्व समुद्र तट पर मछलियाँ पकड़ने गया। उसके दोनों साथी अभी जाल आदि ठीक कर ही रहे थे कि आदमखोर वहाँ आया और अली बेग को घसीट कर ले गया। उसके साथियों ने उसके चीखने चिल्लाने की आवाजें सुनी, किन्तु उन पर ऐसी दहशत छाई कि वे अली बेग को बिल्कुल न बचा सके। शरकी शिकारी उन दिनों उत्तरी ईरान के एक गाँव रामसर में रहता था और यह हृदयविदारक कथा मैंने स्वयं शरकी शिकारी की जबानी सुनी थी। यह १६५६ का जिक्र है। सर्दी का मौसम अपने यौवन पर था और मैं शाहे ईरान के भाई प्रिंस अब्दुलरज़ा के निमन्त्रण पर तहरान गया था। वहीं मेरी मुलाकात शरकी से हुई जो शाहे ईरान के नौकर शिकारियों में सब से अधिक अनुभवी और निडर था। वह आरमीनिया का निवासी और धर्म से ईसाई था। वह प्रथम और द्वितीय महायुद्ध में शरीक रहा। अनेक बार कैद हुआ। जिन दिनों वह क्रेट द्वीप में जर्मनों की कैद में था, वहाँ उसने जर्मन भाषा भी सीख ली। युद्ध समाप्ति के बाद वह कैस्पियन के समुद्र तटवर्ती गाँव रामसर में

आवाद हो गया। यहाँ वह व्यवसाय के लिहाज स ड्राइवर था आर सैला नियो को अलवज पवत की सैर कराया करता था।

शरकी एक मध्यम कद आर साधारण डील डाल का आदमी था। उसके बाल स्याह और चेहर का रग ग दमी था। उसके पास ३०३ की राइफल थी जो किसी अवसर पर शाह ईरान न खुश होकर पुरस्कार म दी थी और शरकी इस राइफल को अपनी जान स अधिक प्रिय समझता था। ईरान म लोगा को शस्त्र रखने की अनुमति नही है। बहुत कम सौभाग्यशाली ऐसे हैं जिनके पास शस्त्र के लाइसेंस है। शरकी ने मुझे बताया कि कैस्पियन सागर के तटवर्ती इलाका म किसी जमान म पर्याप्त सख्या म शेर पाये जाते थे किन्तु धीरे धीरे इनकी सख्या कम होती गयी। इन शेरो के बारे म कभी यह नही सुना गया कि उ होंने किसी इ सानी जान को मारा हो। ये दरिदे सामा यत बारहसिंगों, वकरा और अ य जानवरो का शिकार करके अपना पेट भरते थे। शाहे-ईरान और उनकी शिकारी पार्टियाँ प्राय इस इलाके मे शिकार खेलन आया करती थी और उन्होने इन शेरो की सख्या और कम कर दी थी किन्तु अब सदिया के वाद यह पहला अवसर था कि कोई शेर आदमिया को हडप करने पर उतर आया था। शरकी का कहना था कि सन् ५० मे किसी पहाडी शिकारी न अपनी बन्दूक स फायर करके इस शेर का चेहरा जख्मी कर दिया था जिसके कारण यह उत्तेजित होकर इ सानो पर हमला करने लगा। जब पहली बार इसने आदमी का खून चखा तो फिर दूसरे जानवरो का शिकार करना छोड दिया। शेर का जवडा कुछ सप्ताह तक बिलकुल बेकार रहा। इस दौरान वह भूख और पीडा की तीव्रता म अति व्याकुल था। धीरे धीरे उसके जबडे का जख्म भर गया किन्तु अब शेर किसी पशु को अपने जवडे मे पकडकर घसीट ले जाने की शक्ति से असमथ हो चुका था। जब वह फाके करते-करते तग आ गया तो उसने इ सानो पर हमले शुरू कर दिये और शीघ्र ही उसे एहसास हो गया कि इस जानवर का शिकार करना न केवल बहुत आसान है, बल्कि इसका माँस और खून भी बेहद स्वादिष्ट है।

शरकी की जानकारी के अनुसार शेर ने सबसे पहले गाँव पावार की

एक लडकी को अपना ग्रास बनाया। उस लडकी का बाप कुछ आदमियो के साथ एक पहाडी पर लकडियाँ जलाकर कोयला बना रहा था। इन पहाडो के बीच एक छोटी-सी सडक है जिसे शाहरोद कहते है। लडकी अपने बाप के लिए बतन म चाय लेकर जा रही थी। इससे पहले लकडहारो ने पहाडी के नीचे जरा फासले पर शेर को पेडो के अन्दर फिरते देखा था किन्तु उन्होने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया। वे जानते थे कि इस इलाके म अक्सर शेर फिरते रहते हैं और वे मनुष्यो को क्षति नही पहुँचाते। सहसा उन्होने लडकी की चीखें सुनी। उन्होने पहाडी से चौंका तो शेर छलाँगें लगाता हुआ लडकी की ओर जा रहा था और मासूम लडकी अपनी जगह खडी भय से चिल्ला रही थी। पलभर म शेर लडकी के निकट पहुँच गया। शेर का जबडा खुला हुआ था और उसकी दुम तेजी से गर्दिश कर रही थी। लडकी ने जब शेर को देखा तो वह बदहवास होकर सहसा उल्टे पाँव भाग उठी, किन्तु शेर ने उछलकर लडकी के सिर पर दायाँ पजा मारा और उसे नीचे गिरा दिया। फिर उसे अपने मुह म आसानी से दबा लिया और भाग उठा। लडकी अब भी चिल्ला रही थी और अपने हाथो से शेर का मुह पीटती जा रही थी। लकडहारो ने यह दशा देखी तो अपनी-अपनी कुल्हाडियाँ लेकर पहाडी से नीचे उतरे, किन्तु इतनी देर म शेर लडकी को लेकर बहुत दूर जा चुका था। उन्होने खून के निशान देखे और उन निशानो के पीछे पीछे चलते हुए वे दो-तीन मील दूर ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ घना जगल था। अब उन्हे आगे बढने म सकोच हुआ। शेर का भय उन पर छा चुका था। वे दौडते हुए गाँव आ गये। उन्हे ज्ञात भी नही कि गाँव के एक व्यक्ति के पास बन्दूक है। दस-बारह आदमियो की यह टोली बन्दूक वाले आदमी के साथ जब घटनास्थल पर पुन पहुँची तो वहाँ उन्होने लडकी के हाथ से गिरा हुआ चाय का बतन पडा पाया। वहाँ खून काफी मात्रा म बिखरा हुआ था और अभी खुश्क भी न हुआ था। इससे थोडे फासले पर लडकी की लाश के बचे खुचे हिस्से पडे दिखाई दिये। शेर ने उसके पेट से आँतें निकाल कर इधर उधर बिखेर दी थी। लडकी का सिर भी एक ओर पडा था। शरकी ने जब यह खबर सुनी तो वह दूसरे दिन ही वहा पहुँच

गया और लडकी के बाप और अन्य लकडहारो से इस शेर के बारे मे पूछ-ताछ की जिन्होने उसे देखा था। यह १६५१ की वसन्त ऋतु का ज़िक्र है। शरकी हैरान था कि शेर का जबडा जब ज़ख्मी हुआ तो उसने सन् ५० की ग्रीष्म ऋतु कैसे व्यतीत की होगी, तथापि यह बात स्पष्ट थी कि फाकाकशी के दौरान वह मनुष्यो से प्रतिशोध अवश्य लेगा और जैसा कि भविष्य मे पेश आने वाली घटनाओ ने बताया, कस्पियन के आदमखोर शेर का प्रतिशोध बहुत ही भयानक सिद्ध हुआ। छ वर्ष की दीर्घ अवधि मे वह जानवरो को छोडकर केवल इसानो पर हमला करता रहा और उसने एक सौ से अधिक व्यक्तियो को मारा।

शरकी शिकारी का मित्र एजक था और वही पहाडियो के दामन मे अपनी ज़मीन की काश्त किया करता था। सबसे पहले इस व्यक्ति ने शरकी को शेर के जबडे के बारे मे बताया और कहा कि उसका मुह पूरी तरह नही खुलता। एजक के पास दस-बारह गायें थी जिन्हे चराने के लिए उसका नौजवान लडका जगल मे ले जाया करता था। एक दिन ऐसा हुआ कि एजक अपने लडके से कोई बात कहने के लिए पहाडो के उस पार जगल मे गया जहाँ उसके जानवर चर रहे थे। एजक का लडका एक पेड पर बैठा ऊँची आवाज़ मे एक पुराना गीत गा रहा था। जब उसने अपने बाप को दूर से आते देखा तो नीचे उतर आया। एजक का कहना है, मैं लडके से बात भी नही कर पाया था कि गायो के दौडने और उनके गले मे पडी हुई घण्टियो के बजने की आवाज़ें सुनाई दी। ये दोनो उधर गये तो क्या देखते हैं कि कुछ फासले पर एक बहुत बडा शेर खडा है। जैसे ही उसने हमे देखा, वह ज़ोर से गुर्राया और मैंने देखा कि उसका जबडा एक ओर से टूटा हुआ है और ऊपर का एक दाँत भी जर्जर है। इससे पूर्व कि हम अपने बचाव का उपाय सोचते, शेर अपनी जगह से उछला और क्षणभर मे हमारी ओर आया। उसने मेरे लडके का कन्धा अपने मुह मे दबा लिया और जिधर से आया था उधर दौड गया। मैं पत्थर के बुत की तरह अपनी जगह खडा रहा। आदमखोर मेरी नज़रो के सामने मेरे बेटे को उठा कर ले गया और मैं कुछ न कर सका। मुझे तो अपना खजर भी पेटी से निकालने का साहस न हुआ।'

शरकी कहता था कि एजक अपने बेटे की असामयिक मत्यु पर खून के आँसू रोता था और कहता था कि काश उसके बदले शेर मुझे ले जाता।

प्रारम्भ मे जब इस शेर की खूनी सरगर्मियो की खबरें इद गिद के इलाके म फैली तो लोगा म चिन्ता और भय की लहर दौड गयी। बहुत से निर्भीक आदमियो ने शेर को ठिकाने लगाने की चेष्टा की, किन्तु असफल रहे। यह दरिंदा मक्कार और चालाक सिद्ध हुआ। वह एक बार किसी इसानी जान को मारने के बाद वहाँ से गायब होकर किसी दूसरे इलाके मे पहुँच जाता और वहाँ तबाही फैलाने लगता और जब वहाँ के लोग उसे मारने की योजनाएँ बनाने लगते तो फिर यह आदमखोर वहाँ से रफूचक्कर होकर किसी और जगह पहुँच जाता। धीरे-धीरे वह इतना निर्भीक और निडर हो गया कि दिन-दहाडे आदमिया, औरतो और बच्चो को उठाकर ले जाता और उनके अभिभावक रो-पीट कर सब्र कर लेते। इसी प्रकार दो वष बीत गये।

१९५३ के प्रारम्भिक दिना का जिक्र है। सेफ घाटी के एक किसान के छोटे-स लडके ने आदमखोर शेर को बहुत निकट स देखा और यह लडका इतना सौभाग्यशाली निकला कि शेर ने उसे देखने के बावजूद उस पर हमला नही किया। कारण यह था कि शेर उस समय पहले ही शिकार किये हुए एक आदमी को हडप कर रहा था। लडके के हाथ मे एक लम्बी सी छडी थी। जिससे वह झाडिया को पीटता और अकेला शरारतें करता हुआ जगल म चला जा रहा था। एकाएक उसने एक झाडी के नीचे शेर को आराम स बठे देखा। शेर के निकट ही एक आदमी की लाश पडी थी। लडका यह दश्य देखकर बहुत भयभीत हुआ। ऐन उसी क्षण शेर ने भी सिर उठा कर देखा, फिर उसने अपनी दुम को हरकत दी और मुँह खोलकर धीरे-से गुराया किन्तु अपनी जगह से नही उठा। लडका वहाँ से सिर पर पाँव रखकर भागा और गाँव पहुँचकर दम लिया। फिर उसने सब लोगो को यह किस्सा सुनाया। फौरन दस-पन्द्रह आदमी लम्बे-लम्बे चाकू और कुल्हाडियाँ लेकर लडके के बताये हुए रास्त पर चल दिये, किन्तु शेर वहाँ से जा चुका था और उसके द्वारा खायी

वहाँ एक हंगामा मचा दिया। बाजारों और दूकानों पर बैठे हुए मर्द तुरन्त अपने अस्त्र लेकर एकत्रित हो गये और मैदान की ओर लपके। वहाँ वाकई आदमखोर मौजूद था और जोर जोर से गुर्रा रहा था। इन आदमियों के पास केवल चाकू और कुल्हाड़ियाँ थीं और जाहिर है कि इन अस्त्रों से आदमखोर को मारा नही जा सकता था और फिर यह कि हर शख्स के दिल पर उसकी इतनी दहशत छाई हुई थी कि वह आगे बढ़ते हुए डरता था तथापि इन लोगो ने इतना काम किया कि वही पहरा देने का निश्चय कर लिया ताकि आदमखोर रात के समय गाँव मे दाखिल न हो सके।

एक दिन और एक रात आदमखोर उस मैदान मे गश्त करता और दहाड़ता रहा। सम्भवत, वह भूख से व्याकुल हो रहा था, किन्तु यह अजीब बात थी कि इस दौरान उसने वहां चरने वाले किसी पशु पर हमला नही किया। गाव का हर व्यक्ति उसे अपनी आँखो से मैदान मे फिरते हुए देख चुका था और सभी डरे हुए थे कि न जाने यह आदम-खोर किस हड़प करेगा। तीसरे दिन शरकी वहाँ आया तो आदमखोर गायब हो चुका था। शरकी समझ गया कि उसने जरूर कही न कहीं से अपना इन्सानी शिकार तलाश कर लिया होगा और हकीकत भी यही निकली। शरकी जब शेर की तलाश मे निकला तो वहाँ उसने एक बूढी औरत की लाश इस दशा मे पडी पायी कि आदमखोर ने उसकी पीठ अच्छी तरह चबा डाली थी और गर्दन पर गहरे दांतो के निशान थे। यह बदनसीब बुढ़िया सम्भवत, दूसरे गाँव की रहने वाली थी जो न जाने अपनी किस जरूरत के लिए इधर आ निकली और शेर का ग्रास बन गई।

आदमखोर की इन सरगर्मियों की खबरें तेहरान के सरकारी क्षेत्रो तक पहुँच चुकी थी। खुद गाँव के नम्बरदार ने शाह इरान को इस विषय का तार भी भेजा कि एक आदमखोर शेर ने इलाके मे सख्त तबाही फैला रखी है। कृपया, उसे शीघ्रातिशीघ्र मारा जाय वरन् कुछ दिनो तक किसी भी आदमी का नामो निशान न मिलेगा।'

शरकी शिकारी इस शोचनीय स्थिति से सख्त परेशान था। वह

यह शेर की प्रकृति के विरुद्ध है। अनुभवी शिकारी कहते हैं कि शेर एक बार तो अवश्य ही वहाँ वापस आता है, जहाँ उसने शिकार मारा हो किन्तु कम्पियन का यह आदमखोर एक निराली प्रकृति का स्वामी था। वह कई-कई दिन भूख से व्याकुल होकर गुर्राता और दहाड़ता रहता, किन्तु न तो इसानी शिकार का बासी माँस चखता और न किसी पशु पर हमला करता। सदा ताज़ा शिकार करके अपना पट भरता और फिर हफ्तों तक गायब रहता। उसके निवास की जानकारी किसी को न थी। भगवान ही बेहतर जानता है कि वह कहाँ जाकर आराम करता था।

सरकार के नियुक्त किये हुए शिकारी निरतर कई-कई दिन उन पेड़ो मे छिपे रहे जिनके नीचे शेर की खायी हुई इन्सानी लाशें पड़ी थी। उन्हें आशा थी कि शेर उन्हें खाने के लिए वापस आयेगा, किन्तु उनकी ये आशाएं गलत सिद्ध हुइ। शेर उधर कभी प्रकट ही नही हुआ। हाँ, एक बार जबकि एक शिकारी रातभर ऊंघने के बाद जब पेड स उतरा तो निकट की झाडियो मे आदमखोर ने अपना सिर बाहर निकाला और एक ही छलांग मे शिकारी को आ दबोचा और कुछ क्षणो के अन्दर-अन्दर शिकारी के शरीर का आधा माँस शेर के पेट मे जा चुका था। एक सप्ताह बाद जब उस शिकारी की गुमशुदगी का पता हुआ तो लोगो ने उनकी अधखायी लाश पेड के नीचे पडी पायी। पास ही सरकारी राइफल भी पडी थी, जिसमे कारतूस भर हुए थे। आदमखोर की एक आदत यह भी थी कि वह शिकार मारने के बाद अपने बडे-बडे पजो से उसके कपडे नोच-नाचकर पर फेंक देता और लोहे या चमडे की पटियाँ अलग घसीट कर ले जाता।

इस दौरान उसकी असाधारण प्रकृति की कई अजीब घटनाएँ भी सुनने म आइ। कैम्पियन के इसी साहिली इलाके मे जहाँ आदमखोर शेर का राज्य था, अधिकाश आबादी उन लोगो की थी जो मछुए या लकड़हारे थे और इन्ही बचारो पर सब से अधिक मुसीबत आ पडी थी। कितन ही बच्चे अनाथ हो गय और कितनी ही स्त्रियाँ विधवा हो गयी। यहाँ तक कि मछुआ न समुद्र के निकट और लकड़हारा ने जगल मे जाना छोड दिया। यह शोचनीय स्थिति सरकार के लिए खासी चिन्ता का कारण

किनारे कीचड मे जानवरो के पदचिह्न दिखाई देते थे। इनमे भेडो और बारहसिंगा के पदचिह्न स्पष्ट थे। शरकी को यह देखकर आश्चय हुआ कि आदमखोर इस ओर नही आया हालाँकि उसे अनिवायत शिकार हडप करने के बाद पानी पीने के लिए इस ओर आना चाहिये था।

शरकी को यद्यपि विश्वास नही था कि आदमखोर पानी पीने इस तालाब पर आयेगा तथापि उसने रात वही व्यतीत करने का इरादा किया। किसानो ने उसे समझाने की चेष्टा की कि इस खुली जगह मे ठहरना खतरनाक होगा, जहाँ शेर किसी समय भी उस पर हमला कर सकता है। उस तालाब के गिद कोई पेड नही था, किन्तु लम्बी-लम्बी घास चारो ओर दूर तक फैली हुई थी। उस तालाब से जरा फासले पर एक छोटी-सी पगडण्डी गुजरती थी जो उस गाँव को दूसरे गाँव से मिलाती थी और इस पगडण्डी पर लोग बैलगाडियो के द्वारा यात्रा करत थे, किन्तु जब से आदमखोर की खूनी सरगर्मियाँ शुरू हुई थी यह पगडण्डी वीरान थी। शरकी ने अपने साथियो को वापस गाँव मे भेज दिया और खुद अपने छिपने के लिए एक उपयुक्त सी जगह ढूढने लगा। उस यह भी ज्ञात था कि आदमखोर से अधिक खतरनाक ये विषैले कीटाणु और साँप भी हो सकते हैं जो उस घास मे रेंगते फिरते हैं, किन्तु यह खतरा मोल लने के सिवा और चारा भी क्या था।

तालाब से कोई पचास गज दूर पगडण्डी के पीछे खुश्क और घनी घास मे वह छिप गया। शरकी का बयान है कि यह उसकी शिकारी-जिन्दगी की सबसे अधिक धैय परीक्षक और भयानक रात थी, जब वह कस्पियन के आदमखोर की प्रतीक्षा कर रहा था। सूर्यास्त होते ही जगल का सन्नाटा उसके अगो पर छाने लगा। उसने देखा कि आकाश पर पक्षियो की पक्तियाँ उडती हुई अपने-अपने घोंसलो की ओर लौट रही है। दूर कही भेडियो और गीदडो के दल चिल्ला रहे थे। एकाएक उसन देखा कि तीन मोटे-ताजे हिरन धीरे धीरे चलत हुए तालाब की ओर आ रहे हैं। उनकी छोटी छोटी सुख आँखें अँधेरे मे चमक रही हैं। उन्होंने जल्दी जल्दी पानी पिया और छलाँगें लगात हुय जिधर स आये थे, उधर चल

गय । शरकी अगर चाहता तो उनमे से एक को तो अवश्य ही फायर करके ढेर कर देता, किन्तु वह ऐसा न कर सका । वह तो केवल आदमखोर के बारे मे सोच रहा था कि क्या वह इस तालाब पर आज पानी पीने आयेगा ? सहसा उसे एक अजीब एहसास हुआ जिसने उसके रोंगटे खडे कर दिये । मान लो कि आदमखोर उसके पीछे मे आ जाये और एकदम हमला कर दे तो ? शरकी ने बदहवास होकर पीछे देखा । निस्सदेह यह खतरा हर वक्त सिर पर था । चारो ओर कही भी पनाह लेने की जगह न थी । वह जानता था कि आदमखोर कितना निडर और चालाक है । वह अब तक सौ से अधिक व्यक्तियो को हजम कर चुका है, इसलिए वह आसानी से अपने आपको शरकी के हवाले नही करेगा । अब तक वह उकडू बैठा था, किन्तु यह बात सूझते ही कि शेर पीछे से हमला न कर दे, वह पेट के बल घास मे लेट गया और राइफल सामने रख ली ।

दस बजे के करीब पूर्वी पहाडियो के पीछे से चाँद आकाश पर प्रकट हुआ और उसके प्रकाश मे तालाब का पानी शरकी को साफ दिखाई देने लगा । लम्बी घास के साये तालाब के चारो ओर फले हुए थे, वहाँ तरह-तरह के छोटे-बडे कीटाणु रेंगत दिखाई देते थे । सहसा उसने पश्चिम की ओर से शेर के गुर्राने की आवाज सुनी और शरकी को जैस झटका-सा लगा । वह सजग होकर उधर देखने लगा और राइफल सख्ती से थाम ली । उसका दिल धडक रहा था । हर तरफ मौन की-सी निस्तब्धता छायी हुई थी । जगल मे उस नई आवाज से दूसरे जानवरो और पक्षियो की आवाजें तुरन्त रुक गयी । जगल के बादशाह की आवाज सुनने के बाद फिर किसकी मजाल थी कि अपनी जबान खोलता । शरकी न महसूस किया कि उसका माथा पसीन से भीग रहा है । उसन जेब से रुमाल निकाल कर पसीना पोछा और शेर की आवाज की ओर कान लगा दिय । आध घण्टे बाद उसन फिर शेर की आवाज सुनी । इस बार आवाज और निकट स आयी थी । आदमखोर निश्चय ही तालाब पर प्यास बुझाने आ रहा था । शरकी जानता था कि इस नाजुक वक्त म जरा-सी असावधानी उस मृत्यु के मुख म पहुँचा सकती है । अस्तु, वह

अपनी जगह पर निश्चल एवं निस्पन्द सा दुबका रहा। फिर उसने कुछ फासले पर चाँद की मध्यम रोशनी में आदमखोर को तालाब से जरा दूर खड़े पाया। लम्बी घास में उसका केवल चेहरा नजर आ रहा था। शरकी की साँस धीरे धीरे फूलने लगी। उसने अपने अंगों पर काबू पाने की बड़ी चेष्टा की किन्तु असफल रहा। उसे भय था कि आदमखोर अगर इस बार बच कर निकल गया तो फिर उसे तलाश करना कठिन होगा। सहसा आदमखोर हल्की आवाज में गुर्राया और जिधर से आया था, चुपचाप उधर लौट गया।

शरकी की व्याकुलता और क्रोध की सीमा न रही। वह अपनी राइफल उठा कर दबे पाँव उस ओर चला जिधर शेर गया था, किन्तु अभी वह कुछ गज दूर ही चला था कि घास में छिपा हुआ आदमखोर दहाड़ता हुआ वहाँ प्रकट हुआ और शरकी की ओर लपका। उसका दायाँ पंजा शरकी की बाँह पर पड़ा और शरकी राइफल सहित उलट कर जमीन पर गिर गया। आदमखोर उससे जरा हट कर विजयपूर्ण अन्दाज में गरज रहा था। शरकी ने अपने होश हवास स्थिर रखे और तुरन्त राइफल से उसके सिर का निशाना लेकर लबलबी दबा दी, गोली शेर के सीने में लगी और वह उछला। उसने एक बार फिर शरकी पर हमला करने का प्रयत्न किया किन्तु इस बार उसका वार खाली गया। शेर के सीने से खून का फुहारा उबल पड़ा। शरकी ने समय नष्ट किये बगैर दूसरा फायर किया और गोली शेर का सिर छेदती हुई निकल गयी। शेर के गले से एक भयानक चीख निकली और वह शरकी पर आ पड़ा। शरकी बाद अपने होश हवास खो बैठा।

जब उसकी आँख खुली तो उसने अपने इर्द गिर्द गाँव के किसानों को खड़े पाया। उनके हाथों में लालटेनें थीं। शरकी ने गर्दन मोड़ कर देखा तो आदमखोर उससे कुछ फुट के फासले पर मरा पड़ा था। सुबह होते होते आदमखोर के मारे जाने की खबर आग की तरह फैल गयी। आदमखोर की लाश को गाँव-गाँव नुमाइश के लिए ले जाया गया। शरकी को न सिर्फ पाँच हजार रियाल पुरस्कारस्वरूप दिये गये बल्कि

लोगा ने उसके सामन उपहारो के ढेर लगा दिये। हर व्यक्ति उसका आभारी था और जिधर स वह गुजरता लोग उसे क धा पर उठा लेत और खुशी के नार लगाते, क्याकि शरकी वह आदमी था जिसन जान पर खेल कर कैस्पियन के इस आदमखोर को मारा था जो पाँच साल म एक सौ प द्रह व्यक्तिया को अपना ग्रास बना चुका था।

—फ्रैंक० सी० हुब्बन

खूँख्वार बारहसिंगा

वह एक विकृत लाश थी। उसे देख कर डर लगता था। खोपड़ी बिल्कुल कुचली हुई थी। चेहरे की खाल नाक की हड्डी से ठोडी के मांस तक बाईं ओर लटक रही थी और चेहरा पहचाना नहीं जाता था। पसलियों की हड्डियाँ चूर चूर हो चुकी थी। नाभि के नीचे एक बहुत बड़ा सूराख था जो पीठ के पार निकल गया था। घुटने टूटे थे और जाँघें कुचली हुई थी। यदि किसी मनुष्य को पत्थर कूटने वाले इञ्जन के सामने डाल दिया जाए तो इसकी लाश भी इतनी भयानक और डरावनी नहीं होगी।

गाँव के लोग भाँति भाँति की बोलियाँ बोल रहे थे। स्त्रियाँ विलाप कर रही थी। बच्चे चीख रहे थे। अजीब प्रलय दृश्य-सा था। लाश को गौर से देखकर मैंने अनुमान लगाया कि यह किसी जन्तु का काम नहीं क्योंकि लाश पर खराश के चिह्न नहीं थे और न ही माँस किसी जगह से उड़ा हुआ था। वह एक कुचली हुई लाश अवश्य थी पर दाँतों या नाखूनों के कोई चिह्न मौजूद नहीं थे। ऐसा लगता था जैसे किसी बिफरे जानवर ने अपने नुकीले सींगों पर उठा कर धरती पर दे मारा हो और फिर टक्करें मार मार कर उसके इजरपिंजर ढीले कर दिये हों।

मैं नैनीताल की तराई में शिकार खेलने में व्यस्त था, जब मुझे एक ग्रामीण के मुख से इस दुर्घटना का समाचार मिला। रामस्वरूप एक चरवाहा था जो अपनी भेड़ों को चराते हुए तराई के एक घने जंगल के किनारे उस दुर्घटना का शिकार हुआ था। शाम को जब उसकी भेड़

उसके बिना गाँव म वापस आ गयी, तो रामस्वरूप व बूढे बाप का माथा ठनका। फिर गाँव के दस-पन्द्रह नवयुवक लाठिया कुल्हाड़ियो और दरातिया स युक्त होकर रामस्वरूप की तलाश म चल दिए। गाँव से दो फर्लांग की दूरी पर एक चट्टान के नीच उन्हें रामस्वरूप की लाश मिल गई।

डाकबगले मे वापस आन के बाद मैंन बगले के चौकीदार स्वामी से उस दुघटना का जिक्र किया तो उसन कहा, 'साहब झबरू के अतिरिक्त यह किसी अन्य का काम नही हो सकता।'

'यह झबरू कौन ?' मैंने विस्मय स पूछा।

'झबरू तराई का एक बारहसिंगा है। साहब ! बडा निर्दयी, बडा खूंख्वार सुअर की तरह पला हुआ है। पहाडियो पर यो दमकता फिरता है जैस जगल का राजा हो। उसस तो बाघ चीते भी भय खात हैं, साहब ! उसकी दो मादाएँ भी उसके साथ रहती हैं। क्या मजाल जो कोई उसके निकट स गुजर जाए। यह उसी का काम है साब।'

मुझे बडा विस्मय हुआ। बच्चा की कार्टून बुक म एक बार मैंन ऐसे खूंख्वार बारहसिंगा की एक कहानी पढी थी जो शेर को भी अपन सीगो पर उछाल कर मार डालता था। झबरू का जिक्र सुनकर मुझे उस बारहसिंगे की याद आ गयी।

स्वामी उस रात बहुत देर तक झबरू के किस्से सुनाता रहा। इन घटनाओ को सुनकर पता चला कि यह बारहसिंगा किसी खूंख्वार और नरभक्षी जन्तु से कम भयानक नही है। पिछले दो वष मे यह आस-पास के गाँव के कई पशु और इसान मार चुका था। एक बार तो उसने सडक पर से गुजरती हुई एक बस पर भी हमला किया था। यह बस यात्रिया से भरी हुई थी। झबरू पलट-पलट कर आता और बस को टक्कर मारकर पीछे हट जाता। बस पहाडी पर चढ रही थी और उसकी गति बहुत कम थी। झबरू ने क्रमश दो तीन हमले किए और फिर निराश होकर जगल मे लौट गया।

शामपुर के बडे जमीदार अनन्त राव की पाँच भैंसें उसन मार डाली थी। यदि उनका चरवाहा भाग कर पेड पर न चढ जाता ता

उसे भी मार डालता। चरवाहा निरंतर नौ घण्टे तक पेड पर बैठा रहा और झबरू अपनी मादाओं के साथ पेड के नीचे चक्कर काटता और थुथ-थुथ फुफकारता रहा। भगवान जाने उसे जीवों से क्या वैर था। नौ घण्टे के बाद वह निराश होकर चला गया। भयभीत चरवाहा उसे बहुत दूर तक जाते हुए देखता रहा। जब वह और उसकी मादाएं पहाडियों की ओट में चले गये तो वह कांपता हांफता गांव वापस आया और जमींदार को भैंसों के मरने का सामाचार दिया।

नैनीताल जाने वाली सडक के नीचे एक मील की दूरी पर गोदावन नामक एक छोटा-सा पहाडी गाँव है। उसके बाहर छोटे छोटे खेत फैले हुए हैं, जिनका सिलसिला पहाडियों मे दूर तक चला गया है। झबरू एक दिन अपनी मादाओं के साथ इन खेतो मे आ पहुँचा। उस समय एक बूढा किसान शशिनारायण अपने खेतो की मुडेर ठीक कर रहा था क्योंकि आकाश पर बादल झुके हुए थे और वर्षा की सम्भावना थी और नारायण को सहसा घर बैठे खयाल आया कि मुडेर ठीक कर लेनी चाहिए ताकि पानी नष्ट न हो जाए और फसल पूरी तरह सींची जा सके। कुल्हाडी कन्धे पर रखकर वह खेतो मे आया और जगह जगह हाथ से मुडेर ठीक करने लगा। सहसा पीछे से एक भयानक फुंकार सुनाई दी। शशिनारायण घबरा कर पलटा तो उसने देखा कि चार फुट ऊँचे पौधो के बीच झबरू और उसकी दोनो मादाएँ खडी हुई उसे घूर रही है। झबरू क्रोध मे तिलमिला रहा था और बार-बार अपने पिछले खुरो से मिट्टी उछालता। कुछ क्षणो तक शशिनारायण और झबरू चुप चाप टकटकी लगाए एक दूसरे की ओर घूरते रहे। एकाएक झबरू ने सिर झुका कर अपने नुकीले सींग सामने किये और पूरी शक्ति से शशिनारायण पर हमला कर दिया।

शशिनारायण बूढा अवश्य था पर परिश्रमी और कसरती शरीर वाला किसान था। वह झाक खाकर बाएँ कन्धे के बल धरती पर गिर पडा और झबरू उसके पास से गुज़रा, उसने उस पर कुल्हाडी का प्रहार किया। दुर्भाग्यवश कुल्हाडी का फल घूम गया और केवल दस्ते की चोट झबरू की पीठ पर लगी। झबरू कुछ कदम आगे बढ गया, फिर पलटा।

अब शशिनारायण ने खड़े होकर धवरू पर कुल्हाड़ी से प्रहार किया, पर झबरू ने शशिनारायण को टक्कर मार दी और अपने सींगो पर उछाल कर उसे बहुत दूर फेंक दिया। धवरू के सींगो से शशिनारायण की जाघें और पिंडलियाँ जख्मी हो गयी थी। धरती पर गिरते ही कुल्हाड़ी भी उसके हाथ से छूट गयी थी पर, शशिनारायण ने अपने होश-हवास कायम रखे और इससे पूर्व कि क्रोधित झबरू उस पर फिर हमला करता, वह तेजी से करवट बदलता हुआ पास के एक छोटे से गढ़े मे जा गिरा और घुटनो से सिर जोड़ कर चुपचाप एक कोने मे सिमट गया।

झबरू बहुत देर तक गढे के ऊपर खड़ा पुकारता और खुरो से धूल उछालता रहा, पर शशिनारायण जख्मो की पीड़ा से बेहोश हो चुका था। थोड़ी देर बाद वर्षा शुरू हो गई। झबरू अपनी मादाओ के साथ पहाड़ियो की ओर चला गया और शशिनारायण होश आने के बाद लड़खड़ाता और घिसटता हुआ बड़ी कठिनाई से गोदावन वापस पहुँचा।

धवरू की यह घटनाएँ सुनने के बाद मैंने शामपुर और गोदावन के इर्द गिर्द की पहाड़िया पर झबरू की तलाश शुरू कर दी और निरन्तर एक सप्ताह तक मैं इन पहाड़ियो की खाक छानता रहा। आखिर एक दिन मैंने धवरू को एक झलक देख ही ली। मैं पहाड़ी के दामन मे एक चट्टान पर बैठा हुआ दूरबीन से आस-पास के दृश्यो को देख रहा था। सहसा मुझे एक चट्टान पर बारहसिंगे खड़े हुए नजर आए। यह धवरू और उसकी मादाएँ थी। तीनो मेरी उपस्थिति से अनभिज्ञ कुछ क्षणो तक खड़े दाए-बाएँ देखते रहे। फिर चट्टान से नीचे उतर कर लुप्त हो गए।

उसके दो दिन बाद डाकबगले से बाहर निकलते ही मैंने सामने वाली पहाड़ी की ढलान पर से तीनो को उतरते देखा। तिरछी ढलान पर से झबरू और उसकी मादाएँ बहुत होशियारी और फुर्ती से उतर रही थी। पलक झपकते ही वह मेरी नजरो से ओझल हो गए।

उस दिन मैं दिनभर पहाड़ियो मे उन्हें ढूंढता रहा, पर वे कहीं नजर न आए। तिपहर के समय मैं थका-हारा एक पगडंडी पर से गुजर रहा था। मेरे दाएँ-बाएँ छोटी छोटी झाड़ियाँ थी और इन

झाडियो के पीछे गेहूँ की तैयार फसल खडी थी जो तज पहाडी हवा से झूम रही थी। मै बन्दूक हाथो मे लटकाए ढीले ढीले कदमो से आगे बढ रहा था। एक ऊँची चट्टान के पास पगडडी का मोड घूमत हुए सहसा मुझे सामने से एक तज चीख सुनाई दी। मैंने चौंक कर उस ओर देखा। मुझसे दस-बारह गज के फासले पर झबरू पगडडी मे बीच सीना ताने खडा था। उसकी दोना मादाएँ आराम स धरती पर बठी हुई थी। झबरू से नजर चार होते ही मेरे सार शरीर म सर्दी की एक लहर दौड गयी। मैंने अतीव तेजी से बदूक ऊपर उठाई। उसका दस्ता कन्धे के नीचे रख कर झबरू के सीने का निशाना लिया पर इससे पूर्व कि मैं फायर करता झबरू ने एक छलाग लगाई और अपने नुकीले सीग मेरी ओर तान कर फुकारता हुआ पूरी गति से मेरी ओर लपका। मैंने झबरू की छलाँग के साथ ही बन्दूक की नाल घुमाई और आक्रमणकारी के शरीर और गति का अनुमान लगाते हुए घोडा दवा दिया।

यह बडा नाजुक क्षण था। यदि निशाना चूक जाता तो झबरू के नोकदार सीग मेरे शरीर के आर पार हो जात और मेरी लाश भी धूल-खून मे डूबी हुई नजर आती। पर ईश्वर की कृपा से निशाना सही स्थान पर लगा। झबरू पगडण्डी पर लगभग छ फुट ऊपर उछला और फिर धडाम से नीचे गिर गया। अब की बार मैंने सिर का निशाना लेकर दूसरा फायर किया। झबरू न एक झटका लिया और लडखडा कर नीचे गिर गया। कुछ क्षणा तक वह तडपता रहा और फिर शात हो गया।

पहले फायर की आवाज सुनकर ही झबरू की दोनो मादाएँ भाग उठी और गेहूँ के खेतो म लुप्त हो गयी।

—अज्ञात

वगोमाता का हत्यारा

आंध्र प्रदेश मे गुनताकल से दक्षिण-पूव की ओर ट्रेन से यात्रा करें, तो रास्त मे एक बडा कस्वा ननदियाल आता है। उससे आग पवतीय प्रदेश शुरू हो जाता है। यह सघन वनो और असख्य नदियो से पटा पडा है। यहाँ सवूपुरम और चलमा के रेलव स्टेशन है। रास्ते म गाडी दो सुरगो से गुजरती है। एक की लम्बाई कम है और दूसरी खासी लम्बी है। कुछ मीन और यात्रा करन के वाद रेलवे लाइन के दाहिनी ओर एक चौडी नदी दिखाई दती है। नदी के साथ ही वगोमाता रेलवे स्टेशन का वाहरी सिगनल है। यहाँ पहाड और जगल खत्म हो जात हैं और खेतो का आरम्भ हाता ह।

'हत्यारा' का क्रीडाक्षेत्र इस स्टेशन से लेकर लम्बी सुरग तक फला हुआ था। नदी और वाहरी सिगनल के इद गिद तो उसका ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित था।

चलमा और वगोमाता के मध्यवर्ती वन स मुने सदा दिलचस्पी रही है। इसलिए नही कि यहाँ शिकार की अधिकता है अपितु उसक एकान्त स्थानो म मानसिक शान्ति मिलती है। चचा कबीले की मित्रता और स्नेह भी मुझे धीरे धीरे इधर ले आता है, जो वन के पूर्वी किनारे पर वसा हुआ है। मरा अनुभव है कि आँध्र प्रदेश का सामान्य ग्रामीण भी मसूर के उन नागरिको स अधिक सभ्य हैं, जिनके बीच मेरा स्थायी निवास रहा है।

एक दिन मैं गाडी स वगोमाता पहुँच गया। माग मे लम्बी सुरग

भी गुजरने का सयोग हुआ। उसे देखने की आकांक्षा वर्षों से मन मे मचल रही थी। स्टेशन पर दो कुलियो ने मेरा थोड़ा-सा सामान उठाया। राइफल मैंने स्वय कन्धे से लटका ली और वन विभाग के निकटवर्ती रेस्ट हाऊस की ओर चल दिया।

मेरे अतरग मित्र अलीम खाँ चौकीदार ने बगले के दरवाजे पर स्वागत किया। उसके होठो पर मुस्कराहट मचल रही थी। यूरोपीय ढग के कमरो मे मेरा सामान रखवा दिया गया और फिर उसने अपनी दोनो बीवियो को हुक्म दिया कि वे हैंडपम्प से गुसलखाने का हौज भर दें ताकि मैं नहा धोकर ताजादम हो सकू। इसी अन्तराल मे अलीम खाँ ने अपनी पारिवारिक कठिनाइयो का जिक्र छेड दिया। कहने लगा, मेरी एक बहन है। उसका पति तपेदिक से मर गया। अब वह अपने बच्चो के साथ मेरे पास आ गयी है। यहाँ हाल यह है कि मेरी पहली बीवी से तीन बच्चे और दूसरी से दो हैं। बहन और उसके दो बच्चों का और भार मेरे कमजोर कन्धे कैसे उठाएँगे ?'

मैंने परामर्श दिया, 'यदि तुम्हारी बहन जवान है तो कही दूसरी जगह उपयुक्त रिश्ता ढूढ लो। फिर विषय-परिवर्तन करते हुए पूछा, क्या यहाँ शेर या चीते पाये जाते हैं ?'

'हाँ हाँ' अलीम ने तुरन्त उत्तर दिया कोई दस दिन पहले एक सरकारी अफसर ने रात को शेर मारा था। इसके अलावा इधर एक चीता भी खासा कष्टदायक साबित हो रहा है। सुबह उसके पदचिह्न रेस्ट हाऊस के इद गिर्द देखने मे आते है। तीन सप्ताह पहले वह मेरा कुत्ता उठा कर ले गया, लेकिन एक और कुत्ता जो मेरी बहन अपने साथ लाई थी झट उस दरिन्दे पर टूट पड़ा, फिर भी वह चीता अपना शिकार ले जाने मे सफल रहा। यह दृश्य हम सबने चाँदनी रात मे बिल्कुल साफ-साफ देखा था। डर है कि चीता बदले की आग ठडी करने के लिए पुनः इधर अवश्य आयेगा। फिर यहाँ कुत्ते के अलावा तीन औरतें और सात बच्चे भी तो हैं जो उसकी पशाचिकता का शिकार हो सकते हैं।

मैं अभी कोई उत्तर न दे पाया था कि फारेस्ट रेंजर साइकिल पर हाँफता-काँपता बगले मे दाखिल हुआ। उसने बताया कि आज रात

डिस्ट्रिक्ट फारेस्ट आफीसर यहाँ ठहरेगा, इसलिए बँगला बिल्कुल खाली होना चाहिए और यदि मैं भी ठहरना चाहूँ तो उच्चाधिकारियो से नियमपूर्वक अनुमति प्राप्त कर लू।

विचित्र स्थिति का साक्षात्कार था। न जा सकता था न ठहर सकता था। अनुमति प्राप्त करता तो किससे ? मैं अन्य कई स्थाना पर भी इस प्रकार की कठिनाइयो से परिचित हो चुका था और इस झझट का सर्वोत्तम समाधान मुझे यही दिखाई दिया कि जहाँ शिकार के लिए जाना हो, वहाँ अपनी जमीन खरीद ली जाए ताकि कैम्प लगान मे सुविधा रह और किसी का मोहताज न होना पडे क्योकि यहाँ पहली बार आने का सयाग हुआ था, इसलिए जमीन अभी तक न खरीद सका था।

क्या यहाँ कोई मकान किराय पर मिल सकता है ? मैंन पूछा, 'या जमीन का छोटा-सा टुकडा ही मिल जाए, तो नकद पैसे चुका कर वहाँ खेमा लगा लू।

चौकीदार ने पहले तो इन्कार मे उत्तर दिया, परतु फिर सहसा उठ खडा हुआ और मुझे साथ लेकर स्टेशन की ओर चल दिया। कोई दो फ्लाग आगे रेलवे लाइन के पूव म उसने एक टुकडा दिखाया, जो मुझे पसन्द आ गया क्योकि यह खुले वातावरण मे था और पास ही साफ पानी की नदी थी, जहाँ मैं नहा धो सकता था। जमीन का स्वामी रगा नाम का एक हिन्दू था। मैंने उसे उचित मूल्य चुका दिया और रेस्ट हाऊस से सामान मँगवाकर डेरा जमा लिया। अब मैं सरकारी अधिकारियो का मोहताज न रहा था।

रात के साढे दस बजे होगे। मैं लालटेन के मद्धिम प्रकाश म एक पुस्तक पढ रहा था कि अलीम खाँ चौकीदार भागता हुआ खेम मे दाखिल हुआ। उसकी साँस उखडी हुई थी। चेहरे पर भय और चिन्ता के चिह्न झलक रह थे। उसके कुछ न बतान के बावजूद मैं सब कुछ समझ गया। अवश्य किसी जन्तु ने हमला किया होगा। तुरन्त अपनी राइफल थामी और रेस्ट हाऊस की राह ली।

घटना के अनुसार चीते ने प्रतिशोध लेन के लिए बरामदे म सोये हुए कुत्ते पर हमला किया था। चौकीदार और उसके रिश्तदार डर के मारे

चोख तक न सके। इस प्रकार चीता बड़ी आसानी से कुत्ते को दबोच कर पास के वन म लुप्त हो गया। प्रोग्राम के अनुसार डी० एफ० ओ० भी पहुँचा था, अत सहायता के लिए चौकीदार को मरी ओर आना पड़ा।

भरसक ढूंढन के बावजूद मैं चीत का सुराग न लगा सका, पर कुत्ते की बची खुची लाश मिल गई, जिसे चौकीदार की बहन न बँगले के पास एक गड्ढे म दबा दिया।

अगले दिन जमीन का रजिस्ट्रेशन कराने क लिए मैं गदलपुर गया। वापसी अपन कैम के पास पहुँचा तो तजी स एक जीप गुजरती हुई देखी। उसकी नम्बर प्लेट पर 'आंध्र फारस्ट डिपाटमट' सफेद रग मे लिखा था। ड्राइवर क साथ बैठे हुए साँवले रग के आदमी न मुझ पर दृष्टि डाली। निश्चय ही यह डिस्ट्रिक्ट फारस्ट आफीसर था।

शाम को उसस मिलन के लिए मैं बँगल म गया। यद्यपि सरकारी अफसरो स मुझे घृणा है, परन्तु भारत म भद्र जीवन व्यतीत करन के लिए अनिवाय है कि सरकार स दुआ-सलाम रखी जाए।

नवयुवक डी० एफ० ओ० कालेज स निकलन क बाद सीधा वन विभाग म भरती हुआ था। वन के बारे म उसकी जानकारी शून्य के समान थी। इसीलिए शेरो, चीतो और अन्य जन्तुओ स वह साधारण व्यक्ति की तरह भयभीत नजर आता था। अलीम कुत्ते की दुघटना उसको बता चुका था, किन्तु धूतता से काम लत हुए उसने मरा वणन तक न किया, न ही यह बताया कि पिछल दिन मुझे बँगला खाली करना पड़ा था।

डी० एफ० ओ० न बढ़ा चढ़ा कर कहानी सुनाने म हद कर दी। उसने साधारण-सी घटना एस हृदयविदारक ढग स सुनाई कि मर स्थान पर कोई और होता, तो उस पर आतक छा जाता। उसके कथनानुसार कुत्ता अलीम के साथ चारपाई पर सोया हुआ था कि चीत न साहस का प्रदशन करत हुए उसे मुह मे दबोच लिया और अलीम देखता रह गया।

सारांश यह कि डी० एफ० ओ० ने मुझे चीते के शिकार का निमत्रण दिया और साथ ही अपने साथ बँगले म ठहरने की प्राथना की। मैंने बताया कि मरे पास उच्चाधिकारी का अनुमति पत्र नही है तो उसके

ललाट पर बल पड गए— क्या मैं डी० एफ० ओ० नही ! क्या मेरी अनुमति पर्याप्त नही ?' वह लाल पीला होकर बोला, भाड म जाएँ उच्चाधिकारी, तुम यहाँ आ जाओ।

निमत्रण स्वीकार किए विना कोई उपाय न था।

डी० एफ० ओ० ने अलीम की गाडी भेजकर एक अन्य कुत्ता मगवाया। उस डाइनिग रूम के सामने वाँध दिया ताकि चीता इस पर हमला करने के लिए आए, तो मैं उसे निशाना बना सकू। यह सब कुछ मरी इच्छाआ क प्रतिकूल था। कुत्ता कभी अच्छा भोजन सिद्ध नही होता। उसे जजीर पहना दी जाए तो वह भौकने लगता है। इस प्रकार शेर या चीत सचेत हो जात है और हुआ भी यही। ज्यो-ज्यो रात का अधकार बन्ता गया कुत्ते की चीखा स सारा वन गूज उठा। डी० एफ० ओ० भी नर साथ डाईनिग रूम म वैठा था। ग्यारह वजे वह ऊघन लगा और वेड रूम म चला गया।

दो वजे रात को चाँद उदय हुआ और पडा की लम्बी परछाइयो न उत को ढाँप लिया जो अब तक अपन आपको भाग्य के हवाले कर चुका था और गहरी नीद सो रहा था। मुझ उस पर बडी दया आई आर थोडी देर वाद मैंने उसकी जजीर खोल दी। उसने कृतन दष्टि स मरी ओर देखा और कमरे म घुस कर एक कोने न लट गया। मैंन प्रभात तक चीत की प्रतीक्षा की। अत म निराश होकर सो गया।

दोपहर क भोजन के वाद डी० एफ० आ० ननदियाल वापस चला गया। मैंने भी आधी रात की गाडी स बगलार जाने के लिए सामान वाधा। चलत समय अलीम को अपना पता द दिया ताकि कोइ दुघटना घटित हो तो वह तत्काल मुझे पत्र लिख सके।

चार महीने वाद सहसा मुझ उसका पत्र प्राप्त हुआ। लिखा था कि पुल और नदी क वीच बाहरी सिगनल क पास एक रलवे-कमचारी मत पाया गया। उसकी लाश विकृत थी। कई लोग उसकी मत्यु का उत्तर दायी शेर को ठहराते। कई सफद रीछ पर आरोप लगात। कुछ उस जिन भूत की शरारत कहत पर अलीम का मत था कि यह चीत का करतूत है। उसन मुझे शीघ्रातिशीघ्र यहाँ आन का निमत्रण दिया था।

मैंने उत्तर दिया कि मर आने तक एक तो लाश भी सड-गल जायगी दूसर चीता किसी और तरफ निकल जाएगा और उसे ढूंढना आसान न होगा पर यदि कोइ और दुघटना घटे, तो मुझे तत्काल लिखा जाए ताकि ज तु को मारा जा सके ।

अगला पत्र एक महीने वाद मिला । उसम नदी की देखभाल करन वाले कमचारी की मौत का जिक्र था । वह एक और रेलवे कमचारी के साथ, जिसकी ड्यूटी बाहरी सिगनल पर लैम्प जलाना था, मिल कर छ वजे शाम वहाँ मे गाँव आया करता था । मुद्दत से उनका यही नित्य का नियम था । घटना के दिन रेलव-कमचारी ने सिगनल के पास उसकी देर तक प्रतीक्षा की । फिर वह उस आवाजें दकर बुलाता रहा—'राम राम राम ' कोई उत्तर न पाकर नदी की ओर चल दिया । एक जगह वन के पास राम मुरदा पडा था । नरम रेतीली जमीन पर चीन के पदचिह्न स्पष्ट थ ।

रलव कमचारी सरपट भाग खडा हुआ और स्टेशन पर पहुँच कर दम लिया ।

जल्दी आइए ।' पत्र के अ त म उसन प्राथना की थी—'हमारे बीच नरभक्षी चीता मौजूद है ।

दुर्भाग्य से उस दिन मैं तनिक व्यस्त था । इसलिए रान को कार द्वारा जान का प्रोग्राम बनाया । शाम के समय अपना सामान बाँध रहा था कि बाहर दरवाजे पर घटी बजी । नौकर दौडकर गया । हरकारा एक टलिग्राम लाया था । उसमे लिखा था— चीन न बहन के एक बच्चे को मौत के घाट उतार दिया है । भगवान के लिए अब देर मत लगा इए ।' अलीम

प्रात से पहले मैं यात्रा पर चल चुका था ।

यदि आपको वगोमाता फारेस्ट रेस्ट हाऊस जाने का सयोग हो, तो इमारत क दक्षिण पूर्वी कोने पर वीस गज दूर एक उभरी हुई कब्र अवश्य होगी जिस पर यह समाधि-लेख लगा हुआ था— शरारती'। कई वष पूव ब्रिटिश काल मे एक अगरज फारेस्ट-आफीसर अपन कुत्ते शरारती' के साथ वगल म ठहरा था कि एक रात किसी जन्तु न कुत्ते पर हमला

कर लिया। अगरेज ने जल्दी म बदूक चला दी। जन्तु के साथ कुत्ता भी मारा गया। उसन कुत्ते को कब्र म दबाकर उसके नाम का समाधि-लेख लगा दिया।

जसे ही मैंने कार स उतरने के लिए दरवाजा खोला अलीम ने नवीनतम दुघटना का विवरण सुनाना शुरू कर दिया मरी बहन की बडी लडकी रोज़ाना 'शरारती' की कब्र पर फूल रखा करती थी पर एक दिन वह ऐसा करना भूल गई। शाम को उसे याद आया तो अम्मी से कहन लगी, 'मैं शरारती की कब्र पर जा रही हूँ।

प्यारी अधेरा छा गया है। अब सुबह वहाँ फूल रख आना। इस समय चीता तुम्हे निगल जायगा। प्यारी उस लडकी का नाम था।

प्यारी जवाब दिए बिना कब्र की ओर चली गई। वह वहा अवश्य पहुँच गई क्योंकि फूल की पत्तियाँ कब्र के आस-पास बिखरी हुई थी। किसी न भी चीख-पुकार या चीत की गुर्राहट न सुनी परन्तु प्यारी वापस न आई। माँ ने खतर की व सूघत हुए शोर मचाया और वे सब लालटेन हाथ म लिए लडकी को ढूढने लगे। कब्र स कुछ दूरी पर खून की बूदें दिखाई दी। उनकी चीख-पुकार सुनकर गाँव के लोग भी आ गए पर चीते के भय स कोई व्यक्ति भी वन म घुसने का नाम न लेता था।

अलीम ने तजवीज पेश की कि मैं देशी कपडे पहन कर 'शरारती' की कब्र पर जाऊँ और चीत के पुन आगमन की प्रतीक्षा करूँ। कपडे बदलने का मतलब यह था कि चीता पतलून और बुशर्ट से भय खा सकता था जबकि देशी कपडे म वह मुझे सीधा-सादा ग्रामीण समझता और हमला करने की अवस्था म मैं उसे निशाना बना सकता था।

सघन वन और ठड की पृष्ठभूमि म सूर्यास्त का दृश्य बडा मनमोहक होता है पर कान प्राकृतिक सगीत सुनने और आँखें क्षितिज के रग देखने के बजाय चीते पर केंद्रित थी। ऐन उसी समय चीते ने गत साँझ 'प्यारी' पर हमला किया था। इसीलिए मुझे आशा थी कि एक और शिकार मिलने की आशा म वह आज फिर इधर आएगा।

शीघ्र ही अँधेरा बढने लगा। पास ही रेस्ट हाऊस होने के बावजूद

धुंधलाहट-सी छा गयी थी, ऊपर सितारे झिलमिला रहे थे और उसकी किरणें ऊँचे-ऊँचे पेड़ों में से छन-छन कर जमीन पर पड़ रही थी।

मेरे बाइं ओर एक झाड़ी में सरसराहट हुई। मैंने आँखें फाड़-फाड़ कर देखने का प्रयत्न किया पर सब व्यर्थ। कुछ नजर न आ सका। मेरे हाथ अनजाने रूप में भरी हुई राइफल की ओर बढ़ गए। मैंने टार्च का बटन दबा दिया। सूखे हुए पत्तों के बीच काला साँप रेंग रहा था। एक ढेला फेंक कर उसे दूर भगा दिया, पर उससे स्थिति खराब हो गई। संभव है, चीता वहीं आस-पास ही हो। टार्च की प्रकाश ने मेरी पाजीशन प्रकट कर दी थी। उससे वह सचेत होकर सहसा मुझ पर वार कर सकता था।

इसी क्षण बाहरी सिगनल के पास मालगाड़ी के इन्जन ने लम्बी सीटी दी और फिर छक छक की आवाज आनी बन्द हो गई। लगता था, गाड़ी खड़ी हो गई है क्योंकि इन्जन ड्राइवर और फायरमैन की तेज तेज बातें साफ सुनाई दे रही थी। उनकी आवाज में घबराहट थी। शायद ननदियाल जाने वाली यात्री गाड़ी को रास्ता देने के लिए मालगाड़ी बाहरी सिगनल पर रोक दी गयी थी। मेरा अनुमान ठीक निकला। थोड़ी देर बाद यात्री-गाड़ी अति तीव्रगति से निकल गई। इसका मतलब यह था कि रात के बारह बज रहे थे। पहले मुझे अनुभव ही न हो सका कि समय कितनी तेजी से बीत रहा है।

गाड़ी चले जाने के बाद आशा थी कि वातावरण पर निस्तब्धता छा जाएगी, पर अति खेद। यह आकांक्षा पूरी न हुई। बहुत से लोग लालटेनें लिए बंगले में दाखिल हुए क्योंकि इस शोरगुल में मेरा बैठा रहना किसी प्रकार भी हितकर न था, इसलिए मैं वहाँ से उठकर उन लोगों की ओर आया।

उस पार्टी में स्टेशन मास्टर, फारेस्ट रेंजर, मालगाड़ी के ड्राइवर, गार्ड और फायरमैन शामिल थे। ड्राइवर ने बताया कि जैसे ही गाड़ी सुरंग से बाहर निकली इंजन के प्रकाश में रेलवे लाइन के बीच में एक मुड़ी-तुड़ी लाश दिखाई दी। पहले तो यह विचार आया, शायद किसी और गाड़ी ने उस व्यक्ति को कुचल दिया है पर फिर नीचे उतर कर

प्रोग्राम के अनुसार दो बजे अलीम वापस आ गया। अब हमने छुपकर बैठने के लिए उपयुक्त स्थान ढूढा। सुरग के मुख से उपयुक्त स्थान कौन सा हो सकता था? वहाँ लाइन स जरा हटकर कम्बल बिछाया और बैठ गए। हम अधेरे मे थे। चीता हम नही दख सकता था। इसके प्रतिकूल हमारी आँखो के सामन पूरा दश्य था। चार बजे अपराह्न तक हर तरह स तैयार होकर हम वहाँ बैठ चुके थे। सुरग के अदर उमस के कारण बुरा हाल हो रहा था। नीचे से जमीन दहक रही थी।

शाम तक एक मालगाडी वहाँ से गुजरी, पर वह बिना रुके आगे बढ गई। शायद ड्राइवर हमे न देख सका। अब धीरे धीरे अधेरा फैलने लगा। यहाँ तक कि हमे लाश भी नजर नही आ रही थी।

सहसा सुरग के ऊपर से पत्थर का एक टुकडा ढलक कर नीचे गिरा। मैं सचेत हो गया, शायद चीता हमे छुप कर बैठे देख चुका था और रेंग रेंग कर हमारी ओर बढ रहा था ताकि सहसा झपट कर हममे से किसी एक की गरदन दबोच ले। उसन यह पडाव बडे रहस्यपूर्ण ढग से तय कर लिया। हमे वह उस समय नजर आया, जब वह सामने की टागें आगे फैलाकर और पिछले पजे सख्त जमीन म मजबूती से गाड कर हमारी ओर झपटने के लिए तैयार हो रहा था। वार करने से पहले वह गुर्राया ताकि हम पर दहशत छा जाए। अलीम तो सचमुच घबरा गया और दुबक कर सुरग की दीवार से जा लगा। मैं इतनी देर म राइफल तान चुका था। जस ही चीते न अगले पजे जमीन स उठाए, मैंने अधाधुध फायर कर दिया। जन्तु एक क्षण के लिए पीछे की ओर गिर पडा। इससे पहले कि वह सभलता मैं निशाना ले कर दूसरी बार घोडा दबा चुका था।

आधी रात को आने वाली यात्री गाडी का ड्राइवर सुरग के बाहर दो आदमियो को चाय पीते देखकर अवश्य विस्मित हुआ होगा।

—कनेथ एण्डरसन

आदमखोर शेर

सामान्य भ्रमो मे हम चाहे कितना ही कम विश्वास हो, सामान्य भ्रमो से मेरा अभिप्राय—तेरह का अक मनहूस है, बिल्ली का रास्ता काट जाना, यात्रा पर जाते समय किसी का छीक देना आदि स है, किन्तु हमारे निजी वहम जो दोस्तो को हास्यास्पद प्रतीत होते है, हमारी नजर म बहुत यथार्थ होते हैं।

मैं यह तो नही कह सकता कि शिकारी अन्य मनुष्यो से अधिक भ्रमी होते है, किन्तु इतना अवश्य है कि व भ्रमो को बहुत गम्भीरता से दखत हैं। मेरा एक मित्र है जो बडे शिकार के लिए निकलते समय सदा पाच कारतूस—न कम न अधिक—साथ लेता है। एक अन्य महाशय केवल सात कारतूसो के कायल है। मेरा अपना वहम यह है कि किसी आदम खोर शेर या चीते को मारने से पहले एक न एक सॉप अवश्य मारता हूँ। उसके बिना मुझे विश्वास है कि मैं अपने उद्देश्य मे सफल नही हो सकता।

यह एक मई की जिक्र है। बेहद गर्मी पड रही थी। मैं एक बहुत चालाक आदमखोर शेर की खोज मे कई दिन से सुबह शाम तक बेहद खडी चट्टानो और घनी कॉटेदार झाडियो मे मारा-मारा फिर रहा था। मेरे हाथ और घुटन खराशो से छिल गए थे। पन्द्रहवी शाम को जब मैं बुरी तरह थका हुआ उस फॉरेस्ट बगले मे लौटा जहाँ मैं ठहरा हुआ था तो वहाँ ग्रामीणो के एक प्रतिनिधि मण्डल को अपनी प्रतीक्षा मे पाया वे यह शुभ-समाचार लेकर आये थे कि शेर उस दिन उनके गाँव

बाहर नजर आया था। उस रात का तो कोई कदम उठाना सम्भव न था अतएव प्रतिनिधि मण्डल का सामटन दफ्तर विदा कर दिया।

जिस पर्वत पर वह बंगला स्थित था, उसके अन्तिम छोर पर वह गाँव था। चूंकि अलग-थलग स्थित था और चारों ओर से घने जंगल से घिरा हुआ था इसलिए शेर ने गढ़वाल अधिक मुसीबत वहाँ ढायी थी। हाल ही में यह दो औरतों और एक पुरुष का खा गया था।

अगली सुबह मैं उस गाँव का एक चक्कर पूरा कर चुका था और चौथाई मील नीचे उतर कर दूसरा चक्कर लगा रहा था कि मुझे एक छोटा-सा नाला नजर आया जो ऊँची पहाड़ी पर बसा था। पानी के तेज प्रवाह से बन गया था। मैंने नाले में इधर उधर देख कर सन्तोष कर लिया कि शेर वहाँ नहीं था, किन्तु पच्चीस फुट दूर एक छोटे-से झुण्ड के पास कोई चीज चमकती नजर आई। देखा तो एक साँप फन फैलाये हुए था। उससे अधिक सुन्दर साँप मैंने नहीं देखा। उसका निचला भाग गहरा नारङ्गी-सुर्ख था जो हलका होकर सुनहरे-पीले में परिवर्तित हो गया था। ऊपर का भाग काफी सब्ज था जिस पर हाथी-दाँत के समान लकीरें थीं। यह साँप कोई तेरह-चौदह फुट लम्बा था।

मैं उस राइफल से नहीं मारना चाहता था, क्योंकि फायर की आवाज से शेर के भाग जाने की आशंका थी। इतने में वह साँप मुड़ कर दूसरी ओर जाने लगा। मैंने जल्दी से क्रिकेट की गेंद जितना बड़ा पत्थर उठाकर पूरे बल से उसकी ओर फेंका। कोई छोटा साँप होता तो मर जाता मगर वह चोट खाकर बड़ी तेजी से मेरी ओर पलटा। मैंने एक और पत्थर मारकर उसे खत्म कर दिया। उसे मारकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ और मैंने दिल में सोचा कि अब अवश्य आदमखोर शेर को मारने में सफल हो जाऊँगा।

दूसरे दिन मैंने फिर गाँव के आस-पास के जङ्गल की गश्त की। शाम के समय मुझे एक हल चले खेत के किनारे पर शेर के ताजा पग चिह्न नजर आये।

अगली सुबह जब मैं गाँव पहुँचा तो लोगों का एक हुजूम मेरी प्रतीक्षा में था और यह शुभ-समाचार सुनने में आया कि रात शेर ने

एक भैंस को मार डाला। भैंस को गाँव में मारने के बाद शेर उस कुछ दूर घसीट कर एक बहुत तङ्ग, गहरी और पेडों से पटी हुई घाटी में ले गया था। यह घाटी गाँव से नीचे स्थित थी।

घटना-स्थल का देखने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि खड ढलान पर से उतर कर मरे हुए जानवर के पास जाना उचित नहीं। बस यही सूरत थी कि मैं बहुत लम्बा चक्कर काटकर घाटी में नीचे की ओर से प्रवेश करूं। ऐसा करने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई और दो-पहर के समय उस जगह पहुँच गया जहाँ घाटी सौ गज तक बिल्कुल समतल थी। सौ गज के उस धरती के टुकड़े के बाद खड़ी चट्टान शुरू हो जाती थी। इस समतल टुकड़े के ऊपरी सिरे पर मुझे मरे हुए जानवर और अगर भाग्य ने साथ दिया तो शेर से मुठभेड़ होने की आशा थी। कँटीदार घनी झाड़ियों और बँसवाड़ी से गुजर कर यह लम्बा और कठिन रास्ता पार करने के बाद मैं घाटी में पहुँचा तो पसीने पसीने हो चुका था। चूंकि शेर को मारने के लिए तेजी से फायर करने की जरूरत होती है इसलिए पसीने में भीगे हुए हाथों को प्रयुक्त करना ठीक न था और मैं सुस्ताने और सिगरेट पीने के लिए बैठ गया।

मेरे सामने जमीन पर हर तरफ बड़े-बड़े चिकने बोल्डर बिखरे हुए थे और इनके बीच एक छोटा सा झरना बल खाता बह रहा था। मैंने बेहद पतले सोल के जूते पहन रखे थे जो इन बोल्डरों पर चलने के लिए बहुत उपयुक्त थे। जब पसीना सूख गया और मैं ताजा-दम हो गया तो मरे हुए जानवर की तलाश में चला। मुझे आशा थी कि शेर जानवर के आस पास ही कहीं सोया हुआ मिल जायेगा। तीन चौथाई फ़ासला तय करने के बाद मुझे जानवर की लाश नजर आयी। इस जगह से खड़ी चट्टान पच्चीस गज दूर थी। शेर कहीं नजर न आ रहा था। फूंक फूंक कर कदम रखता हुआ मैं मरे हुए जानवर के पास पहुँचा और एक चपटे बोल्डर पर खड़े होकर चतुर्दिक गौर से देखने लगा।

कोई संकट सामने हो तो प्रायः उसका एहसास पहले ही से अपने आप हो जाता है। कोई तीन चार मिनट तक मैं बिल्कुल निश्चल खड़ा रहा और मुझे खतरे का कोई ख्याल न आया। फिर सहसा मुझे पता

चला कि शेर बहुत निकट से मुझे देख रहा है। शायद मेरी तरह उनके दिल में भी अपने आप खतरे का एहसास पैदा हो गया था और वह सोते से जाग उठा था। मुझसे बाइं और मात्र पन्द्रह-बीस फुट के फासले पर कुछ घनी झाड़ियाँ थीं। इतने में झाड़ियाँ धीरे से हिली और अगले क्षण मैंने शेर को देखा जो पूरी गति से खड़ी चट्टान पर चढ़ रहा था। मैं निशाना भी न लेने पाया था कि वह एक लताओं से भरे पेड़ की आड़ में गायब हो गया। कोई साठ गज दूर पहुँचकर वह मुझे पुनः नजर आया। मैंने जो गोली चलाई तो वह पीछे को जा गिरा और फिर असंख्य पत्थरों समेत दहाड़ता हुआ पहाड़ी से लुढ़कता नजर आया। मैंने सोचा कि उसकी कमर टूट गई है। मैं हैरान ही हो रहा था कि दहाड़ना बन्द हो गया और अगले क्षण वह पहाड़ी का पहलू पार करता दिखाई दिया। प्रकटतः, वह जख्मी न हुआ था। इस बात से मुझे सान्त्वना भी हुई और निराशा भी। वह केवल क्षणभर के लिए नजर आया था और उस पर फायर करना निरर्थक था। वह पहाड़ी पार करके परली घाटी में गायब हो गया।

बाद में मुझे पता चला कि मेरी गोली उसकी बायीं कुहनी में लगी थी और उसकी हड्डी का जरा-सा कोना टूट गया था। उसके बाद चट्टान से टकरा कर पलटी और बड़े जोर से शेर के जबड़े पर लगी। इन जख्मों से उसे कष्ट तो बहुत हुआ, किन्तु कुछ हानि न पहुँची। जब मैं खून के निशान देखता हुआ परली घाटी में दाखिल हुआ तो वह एक बहुत ही घनी काँटेदार झाड़ी में से गुर्राया। इस झाड़ वन में कदम रखना अपनी मृत्यु को आमन्त्रित करना था।

मेरे फायर की आवाज गाँव में सुन ली गई थी और एक आशापूर्ण हुजूम मेरी प्रतीक्षा में था और जितना खेद अपनी बहुत ही सावधानी से बनाई योजना के विफल होने का मुझे हुआ था उससे अधिक उन्हें हुआ।

अगली सुबह जब मैं मरे हुए जानवर को देखने पहुँचा तो इस बात से मुझे बड़ी प्रसन्नता और पर्याप्त आश्चर्य हुआ कि शेर ने रात को आकर उसका थोड़ा सा माँस खाया था। अब पुनः उसका शिकार खलने

की यही सूरत थी कि वहां घात लगाई जाय। यह काम मुश्किल था। आस-पास कोई पेड़ उसके लिए उपयुक्त न था और जमीन पर बैठ कर आदमखोर शेर की प्रतीक्षा करते हुए मुझे पहले कई दुखद अनुभव हो चुके थे। अभी मैं सोच ही रहा था कि क्या करूँ कि घाटी की निचली दिशा में शेर ने आवाज़ दी। शेर की आवाज़ सुनकर मुझे एक तरकीब की परीक्षा करने का अवसर हाथ आया। इस किस्म के जानवरों को मारने का यह तरीका बहुत उम्दा है कि उनकी आवाज़ की नकल करके अपनी ओर बुलाया जाता है किन्तु यह केवल दो अवस्थाओं में सफल रहता है। एक यह कि शेर जंगल में जोड़े की तलाश में फिर रहा हो दूसरा यह कि वह थोड़ा-सा जख्मी हो। यह कहना अनावश्यक है कि शिकारी में शेर की आवाज़ की नकल उतारने की कुशलता होनी चाहिए।

आखिर मैंने एक ऐसा पेड़ चुना जिसकी एक डाल जमीन से आठ फुट ऊँची थी। जिस बोल्डरों से भरी घाटी से शेर के आने की आशा थी, वह वहां से तीस फुट दूर और बिल्कुल सामने थी। चुनांचे शाम के चार बजे मैं डाल पर चढ़कर आराम से बैठ गया। मैं पेड़ पर बैठकर जब चाहूँ सो सकता हूँ और चूंकि मैं थका हुआ था, इसलिए शाम मज़े से कट गई।

जब सूर्यास्त की सुनहरी धूप ऊपर की पहाड़ियों को रक्तिम कर रही थी तो एक लंगूर मुझे शीघ्र ही नजर आ गया। वह पहाड़ी के परले सिरे पर पेड़ पर बैठा था। शायद उसने मुझे चीता समझ लिया था। वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद चीख चीखकर खतरे की घोषणा करता रहा किन्तु अँधेरे के फैलते ही उसकी आवाज आनी बन्द हो गयी।

घण्टा मैं आंख फाड़ फाड़कर अँधेरे में देखता रहा। फिर एकाएक एक पत्थर पहाड़ी से लुढ़कता हुआ उस पेड़ से टकराया जिस पर मैं बैठा हुआ था। पत्थर के बाद किसी भारी भरकम नरम पंजों वाले जानवर की चाप सुनाई दी। निश्चय ही यह शेर आ रहा था। पहले तो मैंने यह सोचकर दिल को सान्त्वना दी कि सामने से आने की बजाय उसके दूसरी ओर से आना केवल संयोग था, मगर जब उसने पीछे निकट आकर जोर-

जोर से गुर्राना शुरू कर दिया तो मेरी गलतफहमी दूर हो गयी। ज़ाहिर है कि वह पहले से घाटी में कहीं मौजूद था और उसने मुझे पेड़ पर चढ़ते हुए देख लिया था। मुझे यह आशा न थी कि परिस्थितियाँ इस प्रकार परिवर्तित हो जायगी। बड़ा नाजुक मौका आ गया था और सावधानी की परमावश्यकता थी। जिस डाल पर मैं बैठा था वह दिन के प्रकाश में तो बड़ी उपयुक्त थी किन्तु अँधेरे में उस पर अपनी पोज़ीशन बदलने की गुंजाइश नज़र न आती थी। मैं चाहता तो हवा में फायर कर सकता था। मगर मुझे अनुभव था कि शेर यदि बहुत निकट हो तो खाली फायर करके उसे भगाने की कोशिश के परिणाम बहुत खतरनाक निकलते हैं। इसलिए मैंने ऐसा न किया। यह भी सम्भव था कि इतनी भारी राइफल (४५०।४००) के धमाके से वह कहीं इस इलाके को न छोड़ दे और मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाय।

मुझे मालूम था कि शेर कूदेगा नहीं क्योंकि, दूसरी ओर तीस फुट गहरा खड्ड था और उस छलांग लगाने की ज़रूरत ही क्या थी। वह पिछली टांगों पर खड़ा होकर बड़ी आसानी से मुझ तक पहुँच सकता था। मैंने गोद में रखी राइफल उठाकर उसकी दिशा बदली और नाली को बाईं बाहु और बायें पहलू के बीच रखकर राइफल का सफ्टी कैच ऊपर चढ़ा दिया। इस हरकत को देखकर शेर और भी ज़ोर से गुर्राया। अब अगर शेर ऊपर की ओर आने की चेष्टा करता तो उसका शरीर राइफल से लगभग छू जाता। लबलबी पर मेरी उंगलियाँ रखी हुई थीं और मैं उसे मार न सकता तो भी फायर के बाद की गड़बड़ में मुझे और ऊपर चढ़ जाने का अवसर मिल जाता। वक्त बेहद सुस्त गति से गुज़रता रहा और आखिर शेर पेड़ के गिर्द फिरने और गुर्राने से उकताकर मेरे पास से हट गया और कुछ क्षण बाद मैंने उसे मुर्दा जानवर की हड्डियाँ चबाते हुए सुना। वह आवाज़ शुभ सूचक थी। मुझे अपनी कष्टदायक पोज़ीशन बदलने का अवसर मिल गया और रात भर मैंने मुर्दा जानवर के खाये जाने की चपड़ चपड़ के सिवा कुछ न सुना।

अभी सूर्योदय हुए कुछ ही मिनट हुए थे कि गाँव के आदमियों ने मेरे आदेशानुसार पहाड़ी पर से मुझे आवाज़ दी और तुरन्त ही बाद मुझे शेर

नजर आया जो बाइं ओर की पहाडी पर दौडा जा रहा था। प्रकाश कम था और रात भर जागने के कारण मेरी आँखें थक गयी थी। निशाना लगाना बहुत कठिन था, किन्तु मैंने राइफल चला ही दी। गोली निशाने पर बैठी और शेर बडे जोर से दहाड कर मेरी ओर पलटा और मुझ पर दौडकर छलाँग लगाने वाला ही था कि सौभाग्यवश दूसरी गोली चटसे उसके सीने पर पडी। उस भारी गोली की चोट से वह अपनी छलाँग पूरी न कर सका। वह पेड से टकराया तो सही किन्तु मुझ तक न पहुँच सका। पेड से टकराने के बाद वह सीधा खड्ड में जा गिरा। वहाँ वह पानी में भरे हुए गड्ढे में गिरने के कारण मरा नहीं। जब वह गड्ढे से बाहर निकला तो पानी उसके रक्त से सुर्ख हो चुका था। वह लडखडाता हुआ आगे बढा और मेरी नजरों से ओझल हो गया।

पन्द्रह घण्टे एक ही डाल पर बैठे-बैठे मेरे शरीर का जोड-जोड अकड गया था। पेड से नीचे उतरते हुए मेरे कपडे शेर के खून में भर गये। नीचे पहुँचकर मैंने अपने बदन की मालिश की। तब कहीं इस योग्य हुआ कि शेर का पीछा कर सकूँ। वह जरा सी दूर ही जा सका था और एक चट्टान के किनारे एक कुण्ड में मरा पडा था।

जब गाँव वालों ने फायरों की आवाज सुनी तो मेरे आदेश को भंग करते हुए घाटी में उतर आये। वहाँ उन्होंने पेड को खून से सना हुआ पाया और मेरा हैट भी वहीं पडा देखा। आश्चर्य ही क्या जो वे समझे कि शेर मुझे दबोच कर ले गया है। उन्हें शोर मचाते सुनकर मैंने आवाज दी। वे मेरी ओर दौडे और जब उन्होंने मेरे खून में भरे कपडे देखे तो उनकी अन्दर की सांस अन्दर और बाहर की बाहर रह गयी। मैंने उन्हें सान्त्वना दी कि मैं जख्मी नहीं हुआ हूँ और यह मेरा खून नहीं है। वे सब फिर शेर के गिर्द एकत्रित हो गये। उन्होंने एक छोटा सा पेड काटा और लताओं से शेर को उससे बाँधकर कठिनतापूर्वक शोर गुल मचाते हुए गाँव की ओर ले चले।

—जिम कार्बेट

रेम्बा

व्यक्ति को अपने जीवन मे असख्य वस्तुओ से दिलचस्पी हो सकती है, मगर सच्ची मुहब्बत केवल एक ही बार सम्भव है। कम से कम रजनीश का तो यही खयाल था इसलिए कि उसने अनेक कुत्ते पाले और सधाए थे। मगर उन सब मे से उसे अपने प्राणो से भी अधिक प्रिय एक ही था और वह था—रेम्बा।

रजनीश ने उसे एक सराय मे खरीदा था जहा वह अपने मालिक के पावो मे चुपचाप बैठा था। पहली ही नजर मे वह रजनीश को इतना अच्छा और प्यारा लगा कि वह ठगा सा रह गया। उसने उसके मालिक को जरा गौर से देखा, जो सराय के मालिक से शराब उधार लेने पर झगड रहा था। छोटा कद, तराशी हुई दाढी परेशान बालो और धूल से अटे हुए लिबास मे वह नवयुवक सा व्यक्ति पूरा बदमाश लग रहा था।

रजनीश स्वभाव से ही ऐसे लोगो से मिलना जुलना पसन्द नही करता था मगर फिर भी वह बढकर उसकी मेज पर बैठ गया। तनिक-सी बातचीत के बाद ही रजनीश को पता चल गया कि वह एक फजूल-सा निरुद्देश्य जीवन बिताने वाला आदमी है जो सराय मे दो चार बार आने के बाद अपनी बन्दूक और दूसरी सब चीजें सराय के मालिक के पास गिरवी रख चुका है और अब वह अपने कुत्ते को भी गिरवी रखने आया है। मगर सराय का मालिक कोई ऐसी चीज गिरवी रखने को तयार न था जिस पर उसे बराबर कुछ खर्च करना पडे। थोडी ही देर मे सौदा तय हो गया और शराब की बारह बोतलो के बदले उसने कुत्ते की जजीर रजनीश के हवाले कर दी। जजीर देते समय उसका हाथ काँप रहा था।

रजनीश चुपचाप बैठा मुत्ते को देखता रहा। वह अधिक स अधिक दो वप का होगा। उसका रग मटियाला था और माथे पर एक सफेद सा दाग था जिसके आस पास ग्रागेक लकीरें भी फैली थीं जैस फूलझडी छूटती ह। उसकी वडी वडी काली आँखा म आग-सी भरी थी। लम्ब कान और दुवली टाँगें जा पूरे हिरण का बोध उठा सकती थी। ऐस बेदाग जानवर का सबध वस्तुत कुत्ता की उच्चतम नस्ल स था। यह सोचकर रजनीश का दिल खुशी से भर गया कि उसन ऐसा सुन्दर कुत्ता इतने सस्ते दामो खरीद लिया है।

उठत हुए उसन पूछा, 'इसका नाम क्या है ?'

'रम्बा !'

'बहुत खूब ! चला भई रम्बा अव चले। चलो। अरे चलो, चच् चच् !'

मगर रेम्बा ने चलन म इवार कर दिया। वस यो लगता था जैस वह सुन ही नहीं रहा। रजनीश की सीटियाँ, प्यार और जजीर खीचना सब व्यथ था। वह दुबक कर एक एस व्यक्ति के पैरा मे बैठा था जो उसके खयाल म अभी तक उसका मालिक था और जब उसके भूतपूव मालिक ने उस क्रोध से लात द मारी ता वह हौले स गुर्राया।

अन्तत बडी कठिनाई स रजनीश उस ले जान के लिए तैयार हुआ। मगर वह भी ऐसे कि मुँह पर छिक्का चढाकर उसकी टाँगें बाध कर उस एक थल म डाल देना पडा और फिर सारा रास्ता रजनीश ने वह थैला अपन कधे पर रखकर घर तक का सफर तय किया।

रेम्बा का अपन नए मालिक म घुल मिल जान म दो महीन लग और ये दो महीन इस प्रकार बीत कि कई बार उस मार-मार कर अधमरा कर दिया गया। जब भी वह घर स भागता, उसे नुकीले काँटा वाला पट्टा पहना दिया जाता, मगर जब वह उस नय स्थान से परिचित सा हो गया तो वह गवमोग्य वन गया। वह एक साथ नौकर, दोस्त, रखवाला और शिकार का साथी था।

बहुत अच्छे और सधाय गए कुत्ता के बार मे कहा जाता है कि वह पूरे नौकर हैं, केवल पालन मे असमथ है। रेम्बा के मालिक रजनीश

खयाल था कि रम्वा बोल भी सकता है। अत वह सारा समय उसके पास बठ कर एकतरफा बातचीत करता रहता। परिणाम यह हुआ कि रजनीश की पत्नी ईर्ष्या के मार जल मरी। वह घणा से उसे 'बूला' कहा करती थी और फिर एक रात जल भुन कर वह चीख उठी, क्या मेरे साथ बात करने के लिए तुम्हारे पास काई विषय नही? हर वक्त 'बूला' से बातचीत करते-करत तुम इसाना के साथ बात करना ही भूल गये हो।

उस महसूस हुआ कि उसकी पत्नी ठीक कह रही है। मगर फिर उसने साचा कि आखिर वह अपनी पत्नी स किस चीज के बारे म बात करे? उनके पास कोई औलाद नही थी। शिकार के सबध म बातचीत स उसकी पत्नी को कोइ दिलचस्पी नही थी और वह स्वय गाय भैंसो के दूध आदि के बार मे या घर-गहस्थी की बहस करने स नफरत करता था।

सोच-सोच कर उसन निश्चय किया कि अब वह अपनी पत्नी स रम्वा की बातें किया करगा। उसके स्वास्थ्य, उसकी चुस्ती उसकी सूझ-बूझ और शिकार करत हुए उसकी सफलताओ की बातें।

इस प्रकार दो वष बीत गए और एक दिन एकाएक शिकारगाह की मालकिन उसके घर चली आई। रजनीश उसके आगमन का अभिप्राय समझ गया।

मैं इसलिए आई थी कि कल मरे पति का जन्म दिन है और ।'

वह बीच म बोल पडा और आप उन्हे उपहार दने क लिए रम्वा को खरीदने आई है? खुशी के मार मालकिन का रग रक्तिम हो गया और वह कोई भी कीमत देने को तयार हो गयी।

आप या कीजिए' रजनीश न उत्तर दिया, आप रम्वा को ल जाइए और अगर वह आपकी काठी म खुशी से रह ले, जजीर तोडन-तोडत अपना गला न घाट ले तो फिर आप इसे रख लीजिए क्योकि उस हालत म वह वाकई मेरे काम का न होगा। अगर दशा इसस विपरीत हो तो मुझे लौटा दीजिए ।'

रेम्वा कोठी म चला गया मगर वहाँ उसन इतना ऊधम मचाया कि मालकिन का पति बोर हो गया। जो भी उसके निकट जाता वह उसे

काट लेता। उसने खाने-पीने की चीज़ों की ओर आँख उठाकर देखना भी बंद कर दिया। नतीजा यह हुआ कि वह कुछ दिनों में ही सूखकर हड्डियों का पिंजर रह गया। नये मालिक ने पहले प्यार से और फिर मारपीट से उसका दिल जीतना चाहा मगर हर कोशिश बेकार साबित हुई। तंग आकर उन्होंने रजनीश को पैगाम भेजा कि वह आकर उसे ले जाय।

जब रजनीश उसे लेने के लिए वहाँ पहुँचा तो वह दृश्य दर्शनीय था। मालिक को देखते ही रेम्बा के मुँह से एक दीर्घ चीख निकली और लपक कर उसने अगले पंजे उसके सीने पर रख दिये। रजनीश के तो खैर आँसू निकल पड़े मगर रेम्बा भी रोता हुआ प्रतीत होता था।

वह शाम उन दोनों ने उसी सराय में गुज़ारी। रजनीश बड़ी देर तक अपने दोस्तों के साथ ताश खेलता रहा और रेम्बा अपना सिर पंजों पर रख कर लेटा रहा। कभी-कभार खेल के बीच रजनीश चौंक कर इधर उधर देख लेता और रेम्बा की आँखें यद्यपि बन्द थीं फिर भी वह टप-टप अपनी दुम फर्श पर मारने लगा जैसे कह रहा हो 'उपस्थित महोदय'। या फिर यदि बेख्याली में वह गुनगुनाने लगता, 'मेरा रेम्बा अब कैसा है?' तो वह लपककर बड़े आदरपूर्वक उठकर बैठ जाता जैसे वह कह रहा हो, 'बिल्कुल ठीक है।'

इन्हीं दिनों रजनीश की शिकारगाह और आस पास के पूरे इलाके में कुछ लोगों ने तबाही मचा दी। यों तो हर शिकारगाह और जंगलों में गैर-कानूनी शिकार खेलने वाले मौजूद होते हैं मगर इन लोगों ने जो नुकसान करना शुरू किया तो उसका अनुमान लगाना कठिन था। उनका नेता अनूपसिंह कहलाता था और हर रोज़ असंख्य जानवरों का शिकार खेल कर ले जाता। आस पास के लोग उससे भयभीत थे। नतीजा यह हुआ कि इलाके के जंगलों और शिकारगाहों के हेड इंचार्ज ने अपने नौकरों की कठोरतापूर्वक प्रताड़ना की।

यह हेड इंचार्ज अपने बाप के निधन पर इस पद तक पहुंचा था और लड़कपन में उसे शिकार खेलना और शिकारियों-जैसा जीवन बिताना रजनीश ने ही सिखाया था और अब भी जब कभी उसे उसकी लड़कपन की हिमाकतें याद आतीं तो वह हँस पड़ता। यही कारण था कि जब

कभी शिष्य अपने गुरु की कठोरता से प्रताडना करता तो वह बुरा न मानता। एक हद तक उस अपन शिष्य पर गव था।

एक दिन रजनीश अपन हड इचाज और दूसरे मातहता के साथ जगल म जा रहा था कि उन्ह कुछ लडक पडा पर टहनियाँ तोडते नजर आए। पडा के नीचे दो औरत वहाँ फेंकी हुई टहनियाँ चुन चुन कर इकट्ठी कर रही थी। यह दृश्य देखते ही हड इचाज क्रोध स पुकारने लगा और उसन अपन मातहता को आदेश दिया कि इन लडका को लिहाज और बुलदी की परवाह किय बिना पेडा से नीचे फेंक दो। एक लडके का सिर फट गया। दूसर की टाग और तीसर की बाँह टूट गयी। मगर हड इचाज का क्रोध फिर भी शान्त न हुआ। उसन दोना औरता को खुद मारना शुरू किया। उनके हमात और टोकरियाँ छीन लीं। जब वह इन औरता को पीट रहा था तो रजनीश ने उनम स एक औरत को पहचान लिया। लोग कहत थ कि वह अनूपसिह की प्रेयसी थी और निकटवर्ती गाव म रहती थी। व औरतें और जख्मी लडके आखिर चल गय मगर रजनीश का दिल आशका से परिपूर्ण हो गया।

एक सप्ताह बाद रजनीश की अपन हड इचाज स भेंट हुई मगर इस बार हड इचाज मुर्दा पडा था। लाश से जाहिर होता था कि उसे बडी दूर तक घसीटा गया है। उसकी बन्दूक गायब थी तथा कारतूसो का थैला भी और उसके स्थान पर एक पुरानी जग लगी ब दूक पडी थी। लाश की आकृति विकृत कर दी गयी थी। यह दृश्य देखत ही रजनीश विस्फारित एव स्तम्भित रह गया। दुख और गम स उसकी चेतना जवाब द गयी।

बडी देर तक वह आँखें फाड फाड कर देखता रहा, और फिर एका एक उसकी नजर रेम्बा पर पडी जो यो लगता था, पागल हो गया है। कभी वह लाश को सूघता। फिर खुशी के मारे कूदन लगता जैसे कोई भूली हुई सुखद स्मृति पुन मस्तिष्क म आ जाए जसे बीत दिना की खुशियाँ लौट आई हो।

इधर आओ, रजनीश चीखा और रेम्बा न यह आज्ञा मान ली। मगर उसकी बेचनी बढती जा रही थी। वह उछल उछल कर अपने

मालिक की ओर देखता, जैसे वह रहा हो 'क्या तुम नही सूघ रहे? जरा गौर करो। अपनी नाक का उपयोग करो। भगवान के लिए तुम्हे क्या हो गया मालिक, तुम समझते क्यो नही?' और फिर उसने लपककर वह बन्दूक पकडी और खुशी से उस इधर उधर घसीटने लगा। रजनीश समझ गया। उस यह जान लेने म कोई कठिनाई न हुई कि कातिल कौन है। रम्बा न कातिल को पहचान लिया है, 'मगर में अपने कुत्ते को क्या ख्वाह मख्वाह पुलिस की तहकीकात म घसीटता फिरूँ?'

उसने सोचा, 'यह पुलिस वाला का काम है। वह आखिर छापा मारकर उसे कही न-कही पकड ही लेंगे। मैं किसलिए अदालती चक्करो म पडू।' यह सोच कर वह आश्वस्त हो गया। और जब कत्ल की आरम्भिक कागजी कार्यवाही पूरी हो गयी तो वह घर चला आया।

हेड इचाज के कत्ल को दस दिन गुजर चुके थे और एक शाम को जब वह शिकारगाह के निरीक्षण के बाद घर लौट रहा था, उसे झाडियो म एक सरसराहट सी सुनाई दी। वह चौक कर देखने लगा मगर फिर खामोशी छा गयी। सभव है वह इसे अपना वहम समझ कर आगे बढ जाता। मगर रेम्बा की दशा भिन्न हो गयी। गदन सीधी और दुम हवा म उठाकर वह झाडियो पर जस लपकन के लिए तैयार हो गया था।

रजनीश ने एकदम एक पेड की ओट ले ली और साँस रोक कर प्रतीक्षा करने लगा। थोडी ही देर के बाद झाडियाँ हिली और अनूपसिह कूद कर बाहर आ गया। दो खरगोश उसके कधो पर लटक रहे थे और बगल म स्वर्गीय हड इचाज की बन्दूक थी। वह अपने रास्ते चलने लगा। जहाँ रजनीश खडा था, वहाँ से अनूपसिह को आसानी स निशाना बनाया जा सकता था मगर गाफिल दुश्मन पर हमला करना रजनीश की प्रकृति के विरुद्ध था। इसलिए उसने अपनी बन्दूक सीधी की और दरख्त की ओट न निकल कर ललकारा, अभागे आदमी बन्दूक फेक दे और हाथ ऊपर उठा ले।

अनूपसिह ने मुडकर देखा, और अपनी बन्दूक की तरफ हाथ बढाया। इस क्षण रजनीश ने घोडा दबा दिया मगर कोई धमाका न हुआ। एक टिक-सी आवाज आयी और बस। वास्तव मे बन्दूक में मुद्दत तक

पड़े हुए कारतूस का बारूद बरसात के कारण खराब हो गया था। इतने में अनूपसिंह ने बन्दूक सीधी कर ली।

'चलो छुट्टी हुई अब आज जिंदगी का खेल खत्म हो गया,' रजनीश ने सोचा और साथ ही उसकी टोपी हवा में उड़ गयी। अनूपसिंह का निशाना चूक गया। दूसरी गोली भरने के लिए अनूपसिंह ने हाथ थैली की ओर बढ़ाया ही था कि रजनीश चीखा 'रम्बा रेम्बा पकड़ लो इसे।'

रेम्बा यहां आओ आओ इधर रम्बा आओ,' एक नरम और वही परिचित-सी आवाज़ दूसरी ओर से आई।

और रेम्बा?

उसके बाद जो कुछ हुआ वह या तो निनिमेष में ही गया था, मगर उसे लिखते हुए और पढ़ते हुए बड़ी देर लगती है।

रेम्बा ने अपने पहले मालिक को पहचान लिया था। वह उसकी ओर दौड़ा मगर अभी दरम्यान में ही था कि रजनीश ने सीटी बजाई। वह रुक गया और मुड़कर देखने लगा। अनूपसिंह ने सीटी बजाई तो वह उधर को मुड़ा। रजनीश ने पुकारा तो फिर ठहर गया और फिर जैसे वह अहमक सा हो गया। पागलों सी हरकत करते हुए और कुछ न समझते हुए वह वहीं बैठ गया। फिर उसने खुद पर नियन्त्रण सा पा लिया और भौंकते हुए चीखते हुए ज़मीन पर घिसटते हुए और आसमान को देखते हुए जैसे वह उसे अपनी विवशता का साक्षी मान रहा हो, वह रेंगता रेंगता अपने पहले मालिक के पास चला गया।

रजनीश का खून खौल गया। कांपते हुए हाथों से उसने दूसरा कारतूस निकाला और बड़ी शांति से अपनी बन्दूक भरी। इतने में अनूपसिंह भी बन्दूक भर चुका था। एक दूसरे के सामने भरी हुई बन्दूकें लिये खड़े-खड़े वे द्वन्द्व-युद्ध लड़ने वाले दो प्रतिद्वन्द्वियों की तरह लग रहे थे।

एक साथ दोनों ने एक-दूसरे पर निशाना लिया और घोड़े दबा दिये। एक समय दो गोलियाँ चलीं। रजनीश की गोली अनूपसिंह के सीने में उतर गयी मगर अनूपसिंह का निशाना चूक गया। इसलिए कि उसने घोड़ा दबाते समय रेम्बा ने खुशी के मारे अपने पहले मालिक से

लिपटने की चेष्टा की थी और हस्तक्षेप करने पर उसका हाथ हिल गया था।

जमीन पर गिरते गिरते उसके मुंह से निकला, 'कमबख्त !' और फिर वह चैतन्यशून्य हो गया सदा के लिए। थके थके कदमों से रजनीश आगे बढ़ा। उसने फिर बन्दूक भरी और रेम्बा की ओर देखा जो जबान निकाले लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ अगले पंजों के बल बैठा था कुछ न समझते हुए।

वही वार्तालाप, जो दोनों के मध्य बिना कुछ कहने के केवल आंखों से हुआ करता था, फिर शुरू हुआ—

जानते हो मैंने यह गोली बन्दूक में किसलिए भरी है ?'

'हाँ मालिक !!'

'हरामजादे ! गद्दार ! कमीने !!'

'तुम ठीक कहते हो मालिक !'

तुम मेरी जिन्दगी की पूंजी थे। मगर अब ? मैं कभी तुम्हें साथ रख सकूंगा ? तुम पर भरोसा कर सकूंगा ?'

तुम ठीक कहते हो मालिक !' उसने अपना सिर जमीन पर रख दिया और इस प्रकार रजनीश की ओर देखा कि उसका बढ़ता हुआ हाथ रुक गया। वह एक नजर तीर की तरह रजनीश के दिल में उतर गयी। आँसुओं से भरी हुई आँखों वाले कुत्ते पर वह गोली तो न चला सका, केवल गालियाँ देकर रह गया। मरे हुए अनूपसिंह के कन्धे से उसने कारतूस उतारे। अपनी बन्दूक बगल में दबाई और चल पड़ा। जब तक वह नजर आता रहा, रेम्बा बैठा देखता रहा और जब पेड़ों के झुंड में विलीन हो गया तो उसके कण्ठ में एक चीख-सी निकली।

वह इधर एक दायरे में फिरने लगा, फिर चुप होकर सीधा लाश के पास बैठ गया जैसे रक्षक हो !

बहुत देर के बाद जब पुलिस के सिपाही रजनीश के निर्देशन में वहाँ पहुँचे तो वह वैसे ही बैठा था पहरेदार की तरह। सिपाहियों में से एक ने उसे पहचान लिया और रजनीश से कहा, 'अरे यह तो आपका कुत्ता है।

हाँ, मैं इसे सुरक्षा के लिए छोड़ गया था,' लज्जा के मारे वह सच

न बता सका। मगर वास्तविकता शीघ्र ही प्रकट हो गयी। जब वह अनूपसिंह की लाश को गाड़ी में रख कर ले जाने लगे तो टाँगों में दुम दबाए हुए रेम्बा सिर झुका कर गाड़ी के पीछे पीछे चला गया।

दूसरे दिन कोतवाल ने उसे मुर्दाखाने के दरवाजे पर बैठे देखा जहाँ अनूपसिंह की लाश पड़ी थी। घर जाओ कोतवाल ने उसे लात मारते हुए कहा। रेम्बा गुर्राया और रजनीश के घर की ओर चल पड़ा।

मगर वह वहाँ न पहुँचा। उसने आवारा कुत्ते की जिन्दगी ग्रहण कर ली। वह आस-पास के देहात की गलियों में मारा मारा फिरता। सूख कर वह काँटा सा हो गया था। नौबत यहाँ तक पहुँची कि मामूली-मामूली कुत्ते उसे मार भगाते।

एक शाम सोने से पहले रजनीश अपने शयनकक्ष की खिड़की में खड़ा था। पहले उसे सन्देह सा हुआ, मगर जब उसने गौर से देखा तो सन्देह ठीक निकला। सामने मैदान में रेम्बा बैठा था अपने पुराने मकान की ओर मुँह किए।

रजनीश ने खिड़की बन्द कर दी और आकर लेट गया मगर नींद उससे कोसों दूर थी। वह न रह सका और फिर उठकर खिड़की खोल कर देखने लगा। मैदान खाली पड़ा था और रेम्बा जा चुका था।

रजनीश फिर लेट गया, मगर दिल में एक चुभन उसे सोने न देती थी। करवटें बदलते बदलते उसने फैसला किया कि जहन्नुम में जाय सब कुछ, मैं सुबह उसे वापस ले आऊँगा। उसका जीवन वास्तव में रेम्बा के बिना आधा रह गया था। फिर उसे नींद आ गयी।

सुबह के सुनहरे प्रकाश के साथ वह जाग पड़ा। उसने कपड़े बदले और बाहर जाने के लिए दरवाज़ा खोला। दरवाजे के साथ रेम्बा की लाश पड़ी थी। उसका सिर उस दहलीज से साथ लगा था, जिसे वह जीवन में पुनः लाँघ न सका था।

नरभक्षी रीछ

हारव को पता नही था कि यह दिन उसके जीवन का अंतिम दिन है और उसके बाद वह दमकते हुए सूर्य और चमकते हुए चन्द्रमा को देख न सकेगा। सम्भवत, उसने अनुमान लगा लिया था कि उसका पर-मोद्देश्य बेहद कठिन है और वह बर्फ की मोटी तहो से खूखार रीछ के ठिकाने का पता लगाने मे असफल रहेगा। इसके बावजूद वह यह भयानक अभियान जीतने पर कमर कस चुका था। मजबूत और गठे हुए शरीर का यह उन्नीस वर्षीय नवयुवक कई बार मरुस्थलो, जगलो और बियाबान मैदानो मे अपने शिकार की तलाश मे निकल खडा हुआ और हर बार सफलता ने उसके चरण चूमे, किन्तु यह अभियान न केवल खतरनाक था अपितु उसमे प्राणो के विनाश की भी सभावना थी।

जनवरी की एक कपकपा देने और खून जमा देने वाली सुबह को उसने सफरी बिस्तर बाँधा और उस विशाल फैले हुए रेगिस्तानी प्रदेश मे पहुँच गया जहाँ दृष्टिसीमा तक बर्फ की चादर तनी हुई थी और गत दस दिनो से तापमान शून्य से भी कम था। हारव के अनुमान के अनुसार इन मौसमी परिस्थितियो मे रीछ को अपनी गुफा के अन्दर होना चाहिए था किन्तु स्थानीय निवासियो से यह सुन कर कि उन्होने रीछ को टहलते और बर्फ पर कुलेलें भरते हुए देखा, वह विस्मित-सा हो गया। वह सोचने लगा, सम्भवत गर्म प्रदेशो मे शिकार और खुराक की कमी के कारण उसे इधर का रुख करना पडा है। बर्फ की बेदाग चादर पर उसके पदचिह्न इस बात को प्रकट कर रहे थे कि यह खूखार जन्तु बेहद भारी है और अपने पैर के अगले पजे मे किसी कष्ट या जख्म के कारण

लगडा कर चलता है।

दूसर दिन सूर्योदय हात ही वह खोजियो क बताए हुए निशानों की ओर चल दिया। गाँव क लाग रात गय तक उसकी प्रतीक्षा करत रह। व उन उदास टेढी मेढी पगडडियो पर उसके पदचाप की प्रतीक्षा करत रह जो दष्टिसीमा तक क्षितिज क दूसर सिर तक फली हुइ थी। आखिर सुबह उनका सन्देह इस विश्वास म बदल गया कि हारव अब इस ससार म नही रहा और खूखार जन्तु की खुराक बन चुका है। गाँव क छह जवानो को अभाग शिकारी की तलाश म भेजा गया। व बर्फीली हवाओं के थपडे सहत, और बफ म जगह जगह धसत एस स्थान पर पहुँच जहाँ उस अभाग शिकारी की विक्षत लाश पडी थी। लाश के इद गिद ताजा मानवीय खून बिखरा हुआ था। कपडे तार तार होकर उसके शरीर स बस अटके हुए-स थे। आँखो म बला की दहशत और व्यग्रता थी। हारव न पराजित होन और हथियार डाल दन क अदाज म अपन दोनो हाथ ऊपर उठाय हुए थ। उस कुशल और अनुभवी शिकारी की मात न सब पर प्रकम्पन जसी अवस्था अच्छादित कर दी और व अपन अत म भयभीत होकर एक दूसर को निराश-से देखन लग। वह जन्तु मानवीय खून चख चुका था और नरभक्षी बन कर उनक लिए एक खतरा बन गया था। खोजी उलट पाव वापस चले गय और उस दुघटना की सूचना स्थानीय पुलिस को दे दी। जब पुलिस की गश्ती पार्टी घटनास्थल पर पहुँची तो हारव के भयानक अत को देखकर वह ठिठक सी गयी। मनुष्य का भयानक रूप देख कर व विस्मय की मूर्ति बन गय। हारव पर जन्तु ने पीछे से विद्युत गति के साथ अकस्मात हमला किया था और अपने अगले खूखार पजे से उसके सिर पर एसी घातक चोट लगायी थी कि सिर की हड्डी टूट कर अलग हो गयी थी। पुलिस के अनुमान के अनुसार हारव उस दुष्ट जानवर की खोह के पास मे असावधानी की अवस्था म गुजरा होगा और अभी वह सभलन भी न पाया होगा कि मौत ने उस दबोच लिया और शिकार की हसरत मन म लिय वह स्वय शिकार बन गया।

हारव के दुखदायक अत न सबको चौंका दिया और वह जन्तु को

समाप्त करने की योजनाएँ सोचने लगे। उस प्रदेश में इससे पहले भी इक्का-दुक्का घटनाएँ हो चुकी थी, पर इन घटनाओं में किसी मानवीय प्राणी का विनाश नहीं हुआ था। वह अपनी प्रकार की पहली घटना थी। इन परिस्थितियों में जंतु का जीवित रहना बेहद खतरनाक सिद्ध हो सकता था।

पुलिस न हारव की मौत के बाद अपनी गतिविधियाँ तेज कर दीं और उसे शीघ्र ही चार ऐसे कुशल और अनुभवी शिकारी और निशानेबाज मिल गए जो उस नरभक्षी रीछ को समाप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकते थे। इन शिकारियों ने दो हेलिकाप्टर किराये पर लिए और अपने शत्रु की तलाश में निकल खड़े हुए। हेलिकाप्टर का चालक ऐसे कई अभियान देख चुका था। उनके नेतृत्व में उसने अपना हेलिकाप्टर ऐसी खतरनाक जगहों पर उड़ाया था जहां मौत निश्चित थी। कभी वह नील आकाश से एकदम सघन पेड़ों के झुंड के ऊपर गोता लगाता और कभी बियाबान जंगल में दौड़ते जानवरों के सिरों पर से फर्राटे भरता हुआ गुजर जाता। वह हेलिकाप्टर इतना नीचे लाता कि उसके हेलिकाप्टर में बैठे हुए शिकारी जानवरों के लिंग तक पहचान लेते। इन वीरों ने दूर-बीन की सहायता से नरभक्षी को ढूँढना शुरू कर दिया, किन्तु उस विशाल क्षेत्र में चारों ओर बर्फ ही बर्फ बिखरी हुई थी। जहाँ कहीं उन्हें कोई उभरा हुआ टीला नजर आता, वे हेलिकाप्टर को नीचे ले जाते, पर वहाँ अस्त व्यस्त सरकंडों या अपने आप उगी वन्य घास-फूस के अतिरिक्त कुछ न होता। उनकी खोजी नजरें उन मनहूस पदचिह्नों को ढूंढती रहीं जो एक खूंखार नरभक्षी रीछ के हो सकते थे, पर न पदचिह्न नजर आते थे और न वह खूनी जंतु। वह एक मानवीय शरीर हड़प कर चुका था। एक बार जैसे ही हेलिकाप्टर ने गोता खाया, उन्हें एक बेतरतीब-सी रेखा दिखाई दी। वे सोचने लगे कि कहीं ये नरभक्षी के पदचिह्न न हों? सचमुच वे नरभक्षी के पदचिह्न थे, पर नरभक्षी कहां था? उसका दूर-दूर तक कहीं पता न चलता था।

हेलिकाप्टर उस आठ मील चौड़े बर्फानी मार्ग पर चार घंटे तक उड़ता रहा। सहसा हेलिकाप्टर में बैठा हुआ एक शिकारी चिल्लाया—

'वह देखो ! भूरी, भारी और एक मलिन-सी वस्तु ! यह गतिशील है। वह हमारे दाएँ हाथ की ओर भाग रही है।'

हेलिकाप्टर के चालक ने बड़ी होशियारी से एक गोता लगाया। सचमुच एक कुरूप रीछ सरपट भागता चला जा रहा था। आकाश की ऊँचाइयों से किसी तेज रफ्तार जहाज या हेलिकाप्टर में बैठ कर निशाना लगाना सरल नहीं होता, किन्तु यह समय तर्क वितर्क और सोचने का न था। उस क्षण न तदबीरें काम आ सकती थीं न तकरीरें। यह क्षण तो बिना सोचे समझे संकट में कूद जाने का क्षण था। इधर या उधर जीवन या मौत, सफलता या असफलता, इसके अतिरिक्त वहाँ धरा ही क्या था ? चारों शिकारियों ने नरभक्षी को एक अपने निशाने की परिधि में आते देख कर अपनी राइफलों के मुँह खोल दिए और देखते ही देखते वह रीछ बिना मीन की तरह तड़पने लगा।

चालक ने हेलिकाप्टर को सरकंडों की एक मोटी तह पर होशियारी से उतार दिया और चारों विजेता अपने शिकार का अन्तिम समय देखने के लिए अपनी सीटों से कूद कर नीचे उतर गये। जन्तु अभी तक धीरे-धीरे तड़प रहा था, पर उस सफलता और खुशी के तत्काल बाद जो दुर्घटना घटित हो गयी, उसने उस सफलता पर पानी फेर दिया और प्रत्येक व्यक्ति दुख में डूब गया।

बात यह हुई कि चारों शिकारी उल्लास, उत्सुकता और उत्साह की मिली जुली भावनाओं के साथ हेलिकाप्टर के रुकते हुए परों से टकरा गये। उनमें से एक का सिर फट गया, दूसरे का चेहरा लहूलुहान हो गया, तीसरा एक बाँह से हाथ धो बैठा और चौथा अपनी एक आँख से वंचित हो गया। बाद में डाक्टरों की टीम ने जब उस दुष्ट का पोस्ट मार्टम किया तो उन्हें यह एहसास हो गया कि शिकारियों ने सचमुच एक दुष्ट को नरक में पहुँचा दिया है। उसके पेट से मानवीय बाल और हारवे की फटी हुई कमीज के कुछ टुकड़े बरामद हुए। यह एक बहुत ही घृणित और कुरूप रीछ था, जिसका वजन पाँच सौ पौंड के लगभग था। मुँह पर जख्मों के निशान थे जो संभवत, किसी दूसरे दुष्ट रीछ

से लड़ने हुए पड़ गये थे । यह जख्म बहुत पुराने थे जो अब भर चुके थे। पांव का अगला पंजा कटा हुआ था । अगले दो दांत कट गये थे और पेट आहार से भरा हुआ था । नरभक्षी तो अपने अन्त को पहुंच गया किन्तु यह पहेली अभी तक हल नहीं हो सकी कि जनवरी के कंपकंपा देने वाले जाड़े में यह नरभक्षी क्यों अपने शरण स्थान से बाहर निकला ? और क्या हेलिकाप्टर की आवाज सुनकर अपनी गर्म खोह को छोड़ कर गोलियों का निशाना बन गया ? हालांकि रीछों की यह जाति बेहद निर्मम, होशियार और चालाक समझी जाती है ।

काला भालू

आलम बख्श से मेरी पहली भेंट अजीब परिस्थिति में हुई थी। मैं एक नरभक्षी शेर का पीछा कर रहा था जो शमोगा के प्रदेश में घूम रहा था। एक रात मैं बंगलौर से अपनी मोटर में बैठकर शमोगा जा रहा था। जब मैं शमोगा से थोड़ी दूर रह गया तो सहसा मेरी मोटर का पिछला टायर धमाके से फट गया। मोटर फौरन रुक गयी। शाम सिर पर आ गयी थी। मैं हैरान परेशान मोटर से उतर कर टायर को देखने लगा। जंगल में भयावह नीरवता थी और मेरी समझ में कुछ न आता था कि अब क्या होगा। इधर उधर नज़र दौड़ाने पर मैंने देखा कि उसी जंगल के एक कोने में छोटी-सी इमारत मौजूद है। मैं समझ गया कि यह अवश्य किसी पीर फकीर की खानकाह है। सम्भवत, खानकाह के मुजाविर आलम बख्श ने मोटर का टायर फटने का धमाका सुन लिया था। कोई पाँच मिनट के बाद ही वह अपने हाथ में लालटेन लिये आ गया। मैंने जल्दी जल्दी फटा हुआ टायर पहिये से निकाल कर दूसरा अच्छा टायर उसमें लगा दिया। फिर बूढ़ा आलम बख्श मुझे खानकाह में ले गया। उसने चाय बनाकर पिलायी। आलम बख्श की इस सहृदयता का यह परिणाम निकला कि हम दोनों में शीघ्र ही गहरी मित्रता हो गयी।

शमोगा के इस मजार के पीछे कोई चार ऊँचे ऊँचे पर्वतीय टीलों का एक लम्बा सिलसिला फैला हुआ था। इन्हीं पर्वतीय टीलों के मध्य कहीं कहीं जमीन खासी समतल और उपजाऊ थी जिसमें मानसून की

बारिशो के बाद स्थानीय किसान मूगफली आदि बो देत थे । भालू मूग-फली के बहुत शौकीन होते हैं, अत हमारे इस भालू न भी इन्ही पर्वतीय टीला मे कही अपना घर बना रखा था । सूर्यास्त होते ही वह भूख से व्याकुल होकर अपनी गुफा से निकलता और मूगफली के पौधो को उजाडता हुआ दूर तक निकल जाता । रातभर वह अपना पेट भरता और सुबह सूर्योदय से थोडी देर पूर्व वह मस्ती म झूमता हुआ अपनी गुफा की ओर वापस चला जाता और दिनभर आराम से सोता । उसके घर के पास ही एक छोटा-सा तालाब था जिसम वर्षा का पानी एकत्रित रहता था । भालू यही स अपनी प्यास बुझाता । जीवन की सभी सुविधाएँ प्रकृति न उस प्रदान कर दी थी ।

आलम बख्श का एक लडका था जिसकी आयु बाइस वर्ष होगी । इस पूरे खानदान म केवल चार व्यक्ति थे । आलम बख्श, उसकी पत्नी लडका और उसकी छोटी बहन । एक रात का जिक्र है । छ बजे क करीब इन सबन खाना खाया और फिर सोन की तैयारियाँ करन लग । इसी बीच लडका किसी काम के लिए मजार स बाहर गया । रात बहुत ही अँधेरी थी । हाथ को हाथ सुझाई न देता था । उसी समय भालू कही निकट ही घूम रहा था । उसन लडके को अपनी ओर आत देखा तो क्रोध म आकर उसकी ओर लपका औरअपना पजा पूरी शक्ति म लडके के चेहरे पर मारा, किन्तु पजा उल्टा पडा और लडके के गले स खून की धारें बह निकली । लडका चीखा और भालू को लातों और घूँस म मार मार भगान की चेष्टा करन लगा, मगर भालू का क्रोध बढता ही जाता था । इस बार उसने लडके के चहर म नाक और एक आँख नाच ली और छाती, कन्धा और पीठ पर भी गहरे जख्म लगाये । उसक बाद वहाँ म भाग गया । भाग्यहीन लडका खून म नहाया हुआ और लड-खडाता हुआ मजार तक पहुँच गया । उसकी गर्दन की रग भी कट चुकी था और खून निरन्तर बह रहा था । आलम बख्श और उसकी पत्नी अपन बच्चे की यह दुर्दशा देखकर सख्त परेशान हुए । उन्होंन धज्जियाँ पानी म भिगोकर लडके के जख्मा पर बाँधी ताकि खून रुक जाय, मगर खून किसी तरह न रुका । घर म जितन भी पुरान कपडे थ, सब समाप्त

उन्होंने लड़के के शरीर पर बाँधे और सभी खून में भीग गये। किन्तु सुबह को लड़के ने अंतिम साँस ली और संसार से विदा हो गया।

आलम बख्श इतना गरीब था कि वह इस दुर्घटना की सूचना न तो मुझे तार के द्वारा दे सकता था और न उसके पास बंगलौर तक आने के लिए बस या रेल का किराया था फिर भी उसने मुझे पोस्टकार्ड पर यह सारी दर्दनाक कहानी लिख कर भेज दी। उसके आँसुओं की तरलता पोस्टकार्ड पर साफ महसूस होती थी। उसका पत्र मुझे दो दिन बाद मिला और मैं तीन घंटे के अन्दर-अन्दर अरसीकरी की ओर चल पड़ा। मेरा ख्याल था कि भालू को मारना बायें हाथ का खेल है। वह जालिम वहीं कहीं छिपा होगा। अधिक से अधिक एक या डेढ़ घण्टे में मैं उसे मार डालूँगा। यही सोच कर मैंने कुछ अधिक लम्बी चौड़ी तैयारी न की। टार्च, वचस्टर राइफल और कपड़ों के दो जोड़े—कुल यह सामान मैंने अपने साथ लिया और उसी दिन शाम के पाँच बजे में आलम बख्श के मजार में पहुँच गया। आलम बख्श, उसकी बूढ़ी बीवी और छोटी बच्चों के चेहरे शून्य और आँखें रो रोकर सूजी हुई थी। वे फटी फटी नजरों से मुझे देख रहे थे। मैंने उन्हें सान्त्वना दी और कहा कि जब तक इस हत्यारे भालू को मार न लूँगा, यहाँ से हरगिज़ न जाऊँगा।

रात अँधेरी और सर्द थी। चाँद निकलने में अभी कई दिन बाकी थे। आठ बजे मैंने जंगल में जाने की तैयारी की। अंधकार में टार्च के द्वारा भालू को ढूँढना इतना कठिन काम न था। मैंने टार्च को राइफल की नाल के सिरे पर बाँध दिया था ताकि उसकी रोशनी में सही निशाना ले सकूँ। मेरे चारों ओर ऐसा घुप अँधेरा था कि स्वयं मुझे अपनी राइफल तक दिखाई नहीं दे रही थी। इसलिए मुझे टार्च जलानी पड़ी और उसका संक्षिप्त सा किन्तु बहुत शक्तिशाली प्रकाश का दायरा दूर तक फैल गया। मैंने अपने इर्द गिर्द नजर डाली। मेरे बाएँ हाथ पर मूँगफली के पौधे और दाएँ हाथ पर सड़क के साथ-साथ इंजीर के पेड़ दूर तक चले गये थे। भालू का कहीं नाम निशान न था और अब मुझे घूम फिर कर उसे तलाश करना था। सड़क के दोनों ओर इंजीर के वृक्ष फैले हुए थे। मैंने प्रारम्भ इस ओर से किया और सड़क के बीच चलने लगा।

टाच का प्रकाश कभी बायी ओर फेंकता, कभी दायी ओर। इस तरह मैं डेढ मील तक निकल गया, किन्तु भालू का कोई पता न था। आखिर वापिस लौटा और मजार की ओर आकर सामन की दिशा म उमे तलाश करता हुआ फिर डेढ मील दूर चला गया किन्तु भालू इधर भी न था। मैंने सोचा, वह अवश्य मूगफली के पौधों म हागा।

इस स्थान पर पहुँचकर जब मैंन टाच जलाई तो मुझे बहुत सी नन्ही नन्ही आखे चमकती दिखाई दी। यह जगली खरगोश और गीदड थे जो मुझे देखन ही छलागे मारत हुए गायब हो गये। इन पाधा म भालू को तलाश करता हुआ मैं पानी के तालाब तक पहुँच गया। यहा मैंने सूअरो के चीखन की आवाजें सुनी, मगर भालू इनम न था। आखिर आगे बढता हुआ मै पहाडी के टीले के नीचे आ पहुँचा। वहा रुककर मेन एक बार फिर टाच के प्रकाश म ऊपर नीच चारा ओर भालू का देखा की चेष्टा की किन्तु भगवान जाने वह मूजी कहाँ जा छिपा था। मैं और आगे बढा। एकाएक मरे कदमा तल सरसराहट सी पैदा हुइ और उसी क्षण अगर नैं उछलकर पीछे न हट जाता ता मेरा काम तमाम था। टाच के प्रकाश मे म क्या देखता हूँ कि सिफ एक फुट के फासले पर एक भयानक साप मेरी आर घूर रहा है। उसका मुह खुला हुआ था और गले से एक तेज़ सीटी की भाँति आवाज़ निकल रही थी। उसन अपना शरीर समेट लिया और गदन उठाकर मरी ओर लपका। मैं चाहता ता एक ही फायर मे उसको समाप्त कर सकता था, मगर यह साचकर पीछे हट गया कि इस तरह भालू सचेत हो जायगा। मैंन निकट पडा हुआ पत्थर उठाया और साप की ओर लपका। साप को रोकन के लिए यह आवश्यक था। वह मुडा और पवतीय टीला म घुस गया।

मैं यह सोच रहा था कि आज भालू कहाँ गायब हो गया। दो ही बातें मस्तिष्क मे आती थी। एक तो यह कि शायद शाम से ही वह अपनी गुफा के बाहर निकल कर किसी अन्य दिशा म निकल गया या अभी तक उसका पेट भरा हुआ है और वह गुफा म बसुध पडा सो रहा है। यह सोचकर मैं मजार की ओर वापस हुआ। आलम बख्श मेरी प्रतीक्षा मे जाग रहा था। मैंन उससे कहा कि थोडी देर बाद मैं फिर

एक बार भालू की तलाश मे जाऊ गा ।

आधी रात को मैं फिर भालू की तलाश म घूम रहा था । इस बार भी मैंने उसे चारो ओर ढूढा, मगर सब व्यथ । भगवान जान उस धरती खा गयी थी या आकाश निगल गया था । थक हार कर मैं मजार मे आया और विस्तर पर गिर कर बेखबर सो गया । आँख खुली तो सूय अपना आधा सफर तय कर चुका था । जगल और पहाडी टील तज चमकीली धूप म जगमगा रहे थे । आलम बख्श की बीवी न मर लिए पुलाव पकाया था जो कि बहुत स्वादिष्ट था । खान और चाय स निपट कर मैंन फिर कमर कसी । दिन के उजाले मे भालू को खाज निकालना अपेक्षाकृत सरल था । मैं जानता था कि वह निश्चय ही उस समय अपनी गुफा म पडा सो रहा होगा । आलम बख्श मरे साथ पहाडी तक आया और हाथा के इशारे से उसन मुझे वह गुफा दिखायी जहाँ उसक ख्याल के अनुसार भालू रहता था । मैंन उस तो विदा किया और स्वय धीर धीर गुफा की ओर बढन लगा । मरे पैरा म रबड सोल के जूत थे जिनस कदमा की ज़रा सी आहट भी पैदा न होती थी । गुफा के मुख पर जाकर मैं रुक गया और कान लगाकर सुनन की चेष्टा की । भालू की आदत है कि वह सोत हुए ज़ोर-ज़ोर स खर्राटे लिया करता है, किन्तु गुफा म बिल्कुल सन्नाटा था । मैंने दस मिनट तक प्रतीक्षा की कि शायद कोई आवाज़ सुनाइ दे । तग आकर मैंन कुछ पत्थर उठाय और गुफा म फेंके । मुझे यकीन था कि भालू अगर गुफा म कहीं मौजूद है तो यह पत्थर उस जगाने क लिए पर्याप्त है किन्तु सब व्यथ । मैं और निकट गया । अन्दर झाँका । गुफा म भालू न था ।

म मजार पर पहुँचा और आलम बख्श को बताया कि भालू शायद यहाँ स कहीं और चला गया है और अब मैं बगलौर वापस जा रहा हूँ । मैंन आलम बख्श को कुछ रुपये दिये और ताकीद की कि जैस ही भालू उस आस-पास म दिखाई दे वह तुरन्त तार के द्वारा मुझे सूचित कर द । इस तरह एक माह बीत गया और भालू की कोई सूचना मुझ तक न पहुँची ।

एक दिन मुझे चकमगोर के ज़िला अधिकारी की ओर स एक तार इस विषय का प्राप्त हुआ कि सीकरी पटना के निकट एक भालू न हमला

करके दो लकडहारो को सख्त जख्मी कर दिया है जिनमे से बाद मे एक लकडहारा जख्मो की ताब न लाते हुए मर गया । तार म निवेदन किया गया था कि अगर मैं वहाँ पहुँचकर इस भालू को खत्म कर दू तो यह बहुत बडी सेवा होगी ।

बाबा आलम बख्श की मजार से कोई बीस मील दूर उत्तर-पश्चिम की ओर चक मगोर का जगल विद्यमान है । चक मगोर मैसूर क जिला खादर का प्रसिद्ध स्थल है और सीकरी पटना का छोटा सा कस्बा चक मगोर और खादर के मध्य है। मैने तार म यह निष्कर्ष निकाला कि वह वही आततायी भालू है जिसने आलम बख्श के बेटे को मारा है। मगर अब प्रश्न यह था कि इतने लम्बे चौडे प्रदेश मे जो सैकडो ही दरिन्दो से पटा पडा है एक विशेष भालू को कसे ढूढा जा सकता है? मैंन जिलाधिकारी को लिखा कि वह इस भालू के बारे मे अन्य जानकारी भेजे कि पहले वह किस स्थान पर देखा गया और क्या उसन किसी और पर तो हमला नही किया? दस दिन बाद जवाब आया कि भालू के बारे मे यह अनुमान है कि सीकरी पटना म तीन मील दूर वह एक पहाडी गुफा म रहता है। उसके करीब ही एक चौक 'लोनकेरी' स्थित है जिसके साथ साथ सडक जगल म से जाती है। हाल ही म भालू न जगल का एक चौकीदार भी मार डाला है । वह इस सडक पर नित्य की भाँति निगरानी के लिए गश्त लगा रहा था ।

मेरे लिए यह सूचना पर्याप्त थी। मन आवश्यक सामान अपनी मोटर म रखा और चक मगोर पहुँचा । वहाँ स महकमा जगलात के जिला अधिकारी को साथ लिया और सीकरी पटना पहुँचकर रेस्टहाऊस म डेरे डाल दिये । यह मेरा सौभाग्य था कि उसी दिन तीसरे पहर जबकि हम सफर की थकान उतार रह थे, एक व्यक्ति दौडता हुआ रेस्ट हाऊस म आया और कहन लगा कि भालू ने उसके भाई पर हमला कर दिया है । मालूम हुआ कि उस व्यक्ति का भाइ उसी पहाडी के निकट अपने पशु चरा रहा था कि भालू एक ओर से प्रकट हुआ और उसन चरवाहे पर हमला किया । चरवाहा सहायता के लिए चीखन चिल्लान लगा, किन्तु उसकी आवाज भालू की गुर्राहटो मे दब कर रह गयी। चरवाह का

छोटा भाई जो यह समाचार मेर पास लाया। पहाडी के नीचे बठा था, उसन चीखा की आवाज सुनी और डर क मारे उधर जाने के बजाय सीधा हमार पास दौड आया।

यह समाचार मेरे लिए विस्मय का कारण था। म भालुआ की प्रकृति एव स्वभाव से भलीभांति परिचित हू और जानता हूँ कि व कभी दिन के वक्त अपन घर स बाहर नही निकलत। उन्ह या तो सूय अस्त हान समय या सुबह घर स बाहर देखा जाता है वरन सारा दिन व सोकर गुजारते है। अब ऐसा प्रतीत हाता था कि वह बेचारा चरवाहा पशु चरात चरात निश्चय ही एसी जगह जा पहुचा जहाँ भालू खर्राटे ले रहा हागा। भाल की आँख खुली और उसन क्रोध म आकर चरवाहे पर हमला कर दिया। इस घटना की यही एक सम्भावना हो सकती थी।

उस समय साढे चार बजे थ। मैंने तुरत राइफल सँभाली। तीन-चार सहायका को साथ लिया और चरवाह की तलाश म निकल खडा हुआ कि शायद भालू न उस जख्मी करके छोड दिया हो। मेरा खयाल था कि वह स्थान अधिक दूर न होगा मगर हम जगल मे निरतर छ मील तक चलना पडा आखिर हम एक पहाडी क नीचे पहुँच जिसक चारा ओर ऊपर घनी झाडियाँ थी और बास क वक्षा का झुण्ड था। वहाँ तक पहुँचते पहुचत शाम के छ बज गय थे। सदिया क दिन थ और सूय अस्त हो चुका था।

सर्दी और अधकार क्षण प्रतिक्षण बढता जा रहा था। लुत्फ की बात यह कि गाव क वे आदमी जो सहायता क लिए मेर साथ यहाँ तक आए थ, सहसा भयभीत स दिखाई देन लग। उन्हाने और आग बढने स साफ इकार कर दिया और कहन लग कि हम तो गाँव वापस जा रहे ह। खुद उन्होन मुझ भी नसीहत की कि अब तो अधेरा हो गया है, भालू का मिलना कठिन है। कल सुबह आकर उस तलाश करेंगे, किन्तु चर-वाहे के भाई न कहा कि वह यही ठहरगा। आग जाने स उसका दम निकलता है। उसने हाथ के इशारे स बताया कि चीखा की आवाज वहा से आयी थी। मैं आग बढ गया और उस व्यक्ति का नाम पुकारन लगा जिस पर भालू न हमला किया था, मगर मरी आवाज वहो गूजकर रह

गया। कोई जवाब न आया। जगल म भयानक नीरदता थी। मुझे अँधेर की चिन्ता न थी क्योंकि टाच मरे पास थी जिस में जलाकर अपना रास्ता तय कर रहा था। मैं आगे बढता चला गया और रास्ता तग म तग, ज्यादा मुश्किल और घना हाता गया। एक स्थान पर पहुच कर कँटिदार झाडिया न मरा रास्ता रोक लिया ? मैं वहा खडा यह सोच रहा था कि वापस जाऊँ या क्या करूँ कि सहसा मर कानो म कराहने और हिचकियाँ लेने की बहुत धीमी सी आवाज आयी। म चोक गया और कान लगाकर वह आवाज सुनन लगा। आवाज निश्चय ही आ रही थी, कि तु दूर स। मै जिस स्थान पर खडा था, वह काफी ऊँचाइ पर था और नीचे मेर कदमों तले दो पहाडी टीला के मध्य एक छोटी सी घाटी थी। आवाज वहीं से आ रही थी।

अब मेरे सामन इसके सिवा और कोइ चारा न था कि किसी न किसी तरह इन झाडियो को पार करूँ और उन आदमी को तलाश करके अपन साथ ल आऊँ जो न जान किस सकट म ग्रस्त है। टाच के प्रकाश म मुझ एक स्थान ऐसा दिखाई दिया जहा झाडियाँ अपक्षा कृत कम घनी थी। काँटा स उलझा हुआ म कठिनतापूवक दूसरी ओर निकला। मेर सामन अब एक ढालू और फिसलवा रास्ता था जिस पर मुझे उतरना था। यहाँ रुककर मैंने अपन दोना हाथ मुह पर रखकर पूरी शक्ति स चरवाह का नाम लेकर आवाज दी— चिम्मा ! चिम्मा !'

मुझे विश्वास था कि मेरी आवाज वह अब अवश्य सुन लेगा। पहाडी टीला म टकराकर मरी आवाज वापस आयी और सोया हुआ जगल एकाएक गूज उठा। मैं कान लगाए जवाब की प्रतीक्षा म था। कोई दो मिनट बाद ही मेर दायें हाथ पर घाटी के अन्दर स कराहन की आवाज आयी। मैंन ढलवाँ रास्ता तय किया। एक जगह पैर फिसला और मैं गिरत गिरत बचा। वह सारा रास्ता झाडियो स अटा पटा था और काँटो न मेर कपडे तार-तार कर दिय थे। जिस्म पर कई जगह खराशें आ गयी थी। कई सौ गज का फासला तय करक मैंन फिर आवाज दी। इस बार जवाब मे कराहन की जो आवाज सुनाई दी वह बिल्कुल करीब स आयी थी। कुछ ही मिनट के बाद मैंन उस ढूढ लिया।

बदनसीब चरवाहा एक वृक्ष के तने के साथ अपने ही खून में नहाया हुआ था। मैंने झुककर उसे देखा। उसके चेहरे पर इतने घाव थे कि गालों की हड्डियाँ साफ दिखायी देती थीं और गाढ़ा-गाढ़ा खून चेहरे पर जमकर स्याह पड़ गया था। भालू ने उसके पेट पर भी पंजा मारा था और अंतड़ियाँ बाहर निकाल दी थीं। कभी कभी उसके गले से कराहने की ऊँची आवाज बुलन्द हो जाती जिससे पता चलता कि वह सख्त जख्मी होने के बावजूद अभी तक जिन्दा है।

यह स्थिति इतनी शोचनीय और संकटमय थी कि मेरा मस्तिष्क चेतनाशून्य हो गया। सरसरी निगाह डालते ही मुझे यह अनुमान हो गया कि वह बदनसीब चरवाहा रातभर यहाँ इसी तरह पड़ा रहा तो सुबह तक इसका जिन्दा रहना कठिन है। कुछ समझ में न आता था कि क्या किया जाय सिवाय इसके कि उसे उठाकर वहाँ तक पहुँचाया जाये जहाँ उसके भाई को मैं छोड़ आया था। और कुछ नहीं किया जा सकता था किन्तु जख्मी और ऐसे भारी स्वस्थ व्यक्ति को उठाकर अपने कन्धे पर लादना भी एक समस्या थी। उसका वजन लगभग मेरे बराबर था, फिर भी ज्यों त्यों करके मैंने उसे उठाया और अपनी राइफल का सहारा लेता हुआ वापस बुलन्दी पर चढ़ने लगा। वह रात शायद मैं कभी भुला न सकूँ। ऐसा खतरनाक और जानलेवा अनुभव मुझे अपने दीर्घ शिकारी जीवन में कभी पेश न आया था। टार्च के प्रकाश में एक एक कदम बड़ी सावधानी से रखता हुआ मैं बड़ी मुश्किल से ऊपर चढ़ रहा था और जब दो चार कदम ही रह गयी थी मंजिल कि सहसा मेरा बायाँ पाँव फिसला और थिम्मा सहित मैं लुढ़कनियाँ खाता नीचे गिरा। पन्द्रह-बीस मिनट तक हम दोनों लुढ़कते हुए चले गये। अगर काँटेदार झाड़ियाँ हमें न रोक लेतीं तो उसी दिन मेरी समाप्ति हो चुकी थी। मेरे बाएँ टखने में दर्द की एक टीस उठी और फिर एकदम आँखों के सामने अँधेरा छा गया। राइफल मेरे हाथ से निकलकर न जाने किस खड्ड में जा पड़ी थी।

मालूम नहीं, मैं कितनी देर बेहोश रहा। शायद दस या पन्द्रह मिनट। होश आया तो मैंने उठने की चेष्टा की। टाँग में फिर दर्द की जबर्दस्त

टीस उठी और मेरे मुह से चीख निकल गयी। सौभाग्यवश टार्च मेरे निकट ही पडी थी और उसका सफेद पालिश किया हुआ खोल चमक रहा था। मैं घिसटकर आगे बढा और टार्च उठाकर जलाई तो थिम्मा को पाच फुट दूर पडे पाया। मैंने उसके दिल पर हाथ रखा, वह जीवित था। मने वही लेटे-लेटे जोर जोर स थिम्मा के भाई को आवाजें देनी शुरू की कि शायद वह आवाज सुन ले और इधर आ जाय, किन्तु एक घण्टा तक चीखन का कोई परिणाम न निकला। म समझ गया कि वह डरपोक आदमी आवाज सुनन के बावजूद भी इधर आने का साहस नही करेगा। मुझे अब यह रात इस अँधेरे जगल म एक अधजीवित और जख्मी व्यक्ति के साथ व्यतीत करनी थी। इस जगल म जिसम एक खूख्वार भाल मौजूद था। सर्दी क्षण प्रतिक्षण बढ रही थी, यहाँ तक कि मेरा शरीर सर्दी म बिलकुल सुन्न हो गया। अब मैं हाथ पाँव भी न हिला सकता था। भालू अगर उस समय उधर आ निकलता तो बडी आसानी से मुझे मार जाता। खुदा-खुदा करके वह सनसनीखेज रात कटी। पूर्व की ओर स जब सूर्योदय का प्रकाश हुआ और इर्द गिर्द का दृश्य साफ दिखाई दिया तो मैंने चरवाहे को टटोला। वह न जाने कब का मर चुका था। मैंन साहस बटोर कर पहाडी पर चढना चाहा तो हड्डी टूटन के कारण टाग बुरी तरह सूज गयी थी और जरा सी ठेस लगने पर इतनी तीव्र पीडा होती कि वह मेरे लिए असहनीय हो जाती थी। मुझे विश्वास था कि फौरेस्ट आफिसर अवश्य कुछ आदमियो को लेकर मेरी तलाश म आयगा। मैं वही झाडियो के साये में दोपहर तक पडा रहा। फौरेस्ट आफिसर एक दजन ग्रामीणो के साथ मुझे ढूढता हुआ इधर निकल आया। उसके साथ चरवाह का भाई भी था। मुझे उन्होंने उठाकर सीकरी पटना के बगले म पहुँचाया। वहाँ से रात को नौ बजे फौरेस्ट आफिसर मुझे अपनी कार मे चक मगोर के अस्पताल म छोड गया। एक माह तक मैं मौत और जिन्दगी के द्वन्द्व मे ग्रस्त रहा। इसी बीच भालू की हत्याकारी सरगर्मियो की सूचनाएँ बराबर मेरे कानो तक पहुँचती रही। मैं अपने बिस्तर पर पडे पडे यह कसम खा चुका था कि धिक्कार है मुझ पर यदि स्वस्थ होन के बाद एक सप्ताह के भीतर भीतर इस भालू को न

जैसे ही मैं इस काबिल हुआ कि कुछ कदम चल सकूँ, आसानी से चल सकूँ, मैंने अपना बोरिया बिस्तर उठाया और सीधा मीकरी पटना पहुँचा। गाँव वाले भालू की आतंककारी हरकतों से इतने परेशान थे कि उन्होंने मुझ दया का फरिश्ता समझा। मालूम हुआ कि इस अर्से में भालू छः सात व्यक्तियों को मौत की नींद सुला चुका है और वह प्रतिदिन शाम के समय गाँव से एक मील दूर अपने शिकार की तलाश में घूमता है।

मैं शाम को पाँच बजे अपनी राइफल समेत वहाँ पहुँच गया और एक घने से पेड़ के नीचे डेरा जमा लिया। मुझे पूर्ण विश्वास था कि आज भालू की मौत उसे अवश्य इधर ले आयेगी। पेड़ के तने से टेक लगाकर और राइफल अपने घुटनों पर रख कर मैं इस तरह जमकर बैठ गया जैसे सदियों तक भालू की प्रतीक्षा करने का इरादा हो।

आखिर रात के ग्यारह बजे सहसा भालू की गुर्राहट और पाँवों की सरसराहट से अनुमान हुआ कि जालिम आ पहुँचा। उधर मैं प्रतीक्षा में बैठा था। तारों के धीमे प्रकाश में मैंने देखा कि वह मुझसे केवल पचास गज के फासले पर है। काफी कद्दावर और हट्टा-कट्टा जानवर था। उसकी छोटी छोटी सुर्ख आँखें चमक रही थीं। मैंने फौरन टार्च जलाई। तेज प्रकाश की एक लम्बी रेखा भालू के जिस्म पर पड़ी। वह उछला और अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा होकर मेरी ओर घूरने लगा। उसके गले से एक भयानक चीख निकली। ऐसी चीख कि कोई और सुनता तो खून रगों में जम जाता। किन्तु मेरा वास्ता ही जाने कैसे कितने आदमखोरों से पड़ चुका था। मैं इस भालू को क्या महत्त्व देता था। बड़े इत्मीनान से मैंने उस मूज़ी की छाती का निशाना लिया और राइफल का घोड़ा दबा दिया और एक साथ दो फायर किये। भालू ने कलाबाजी खाई और फिर वह जमीन से पुनः न उठ सका। इस तरह चक मगोर के इस खूनी दरिन्दे की समाप्ति हुई जिसने अर्से तक इस विशाल प्रदेश पर अपनी हुकूमत कायम कर रखी थी।

—कनेथ एण्डरसन

खूनी साड

बिल पिकेट समार का पहला व्यक्ति था, जिसने साड से निहत्था लडने का मेल शुरू किया। पिकेट ही सबसे पहला और अखिरी व्यक्ति ही हुआ था जो खूनी साड से निहत्था कुश्ती लडता था, पर उसे सपने मे भी आशा न थी कि एक दिन उसका शुरू किया हुआ यह लोमहर्षक खेल एक लोकप्रिय तमाशा बन जाएगा।

१८८० मे जब पिकेट बच्चा था तो विस्मयकारी खेल दिखा कर ख्याति प्राप्त करने के सपने देखता रहता था। अपनी जवानी मे उसे जानवरो से निहत्था लडने की सूझी। उसने सोचा, साड जैसे खूख्वार जानवर से बिना हथियार के दर्शको के सामने कुश्ती लडी जाए। यह कुश्ती कितनी रोमाचकारी होगी और कितनी आनन्ददायक।

उन दिनो के प्रतिकूल लोग शायद अधिक यातनाप्रिय थे। इसलिए शरीर के रोंगटे खडे कर देने वाले खेल मे वे केवल दिलचस्पी ही नहीं दिखाते थे, अपितु उसके लिए बहुत-सा धन भी खर्च करने के लिए तैयार रहते थे। बिल पिकेट ने जब खूनी साड से लडने की घोषणा की तो मैक्सिको के लोगो मे सनसनी फैल गयी। इससे पहले साडो को आपस मे लडाया जाता था और इस खेल-तमाशे का खात्मा किसी भी एक साड की मौत से होता था।

मैक्सिको के लोग बिल पिकेट के इस लोमहर्षक खेल को देखने के लिए भारी सख्या मे टूट पडे। वे बहुत सा धन देकर भी इस कुश्ती को देखना चाहते थे। इस विस्मयकारी दृश्य के लिए उनके मत

मे हर कीमत कम थी।

नगर से बाहर एक शानदार वाडा बनवाया गया। उसम कई हजार आदमियो के बैठने का प्रबन्ध था। शाम के समय यह खूनी खेल शुरू हुआ। बिल पिकेट एक छोटे स घोडे पर सवार होकर बाडे म आया। कुछ मिनट बाद बाडे म उस समय का सबस खूख्वार साड तेजी से पिकेट की ओर दौडा, पिकेट न बडी सफाई से अपन आप को बचाया और साड की गदन पर न्याय स वार किया। साड इस आकस्मिक वार मे और अधिक बिफर गया। पिकेट के कन्नी काट जाने से वह बाडे स टकरा कर जख्मी हो चुका था इसलिए और भी अधिक तैश मे आकर वह फिर बिल की ओर दौडा। बिल पिकेट न इस बार भी झपट कर एक ओर हटना चाहा। पर साड उसकी चालाकी को भाँप चुका था। उसन बिल पिकेट विजेता को सीगा पर उठा ही लिया। अब तक लोग प्रशसात्मक नारे लगा रहे थे। अब एकदम सन्नाटा छा गया। दशक दहशत की अवस्था मे उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थ जब साड पिकेट के पेट को फाडकर घसीटता हुआ बाडे स बाहर ले जाएगा।

पर ऐसा न हुआ। जैसे ही साड न बिल पिकेट को उछालकर सीगा पर उठाया पिकेट ने साड की गरदन मे हाथ डालकर उसे दबाना शुरू कर दिया। उसन एक हाथ से ऐसा जोरदार दबाव डाला कि साड पीडा स दहाड उठा। दशक जोश से पागल हुए जा रहे थे। उन्होंने जोर-जोर से चीखना शुरू कर दिया। पिकेट की पकड और मजबूत हो गयी और अन्तत खूख्वार साड मात खा गया। इस लोमहर्षक कुश्ती न पिकेट के लिए ख्याति की राह खोल दी। अखबारो म उसकी दिलेरी की खूब चर्चा हुई। अब बिल को चुनौती दी गई कि मक्सिको के पहले से अधिक एक और खूख्वार साड से कुश्ती लड कर दिखाए। यदि पाँच मिनट तक उसके सीगो को वह पकडे रहा तो उसे ससार का सबसे बडा बहादुर समझा जाएगा और बहुत-सा पुरस्कार दिया जाएगा।

इस चुनौती पर अपना मत प्रकट करते हुए वहीं के 'हेराल्ड' अखबार के सम्पादक न लिखा कि यह खूख्वार साड विस्मयकारी शक्ति का तूफान है। यदि पिकट ने उसे काबू म करन का प्रयत्न किया तो उसकी

मौत निश्चित है, पर पिकेट न "स चुनौती को स्वीकार कर लिया।

उस समय के सबस खूखार साड चकाटयफर जेले का पिकट के साथ लडन क लिए चुना गया। उस खूनी कुश्ती को देखन के लिए दशक पहले स भी अधिक सख्या म उमड पडे । अब दकों को सेना का प्रबन्ध करना पडा। तब कही जाकर दशका पर काबू पाया जा सका।

बिल पिकेट अपनी भडकीली रग बिरगी पोशाक म एक छोट स कद के घोडे पर सवार होकर बाडे मे आया। उसन सिर पर हैट और शरीर पर जाकेट पहन रखी थी। दशका न उसका एक विजेता की तरह स्वागत किया पर उसके साथ उन्होन नार लगाकर अपनी यह इच्छा प्रकट की इस कुश्ती की समाप्ति दोनो म स किसी एक की मौत पर हो।

साड न बाडे म घुसत ही पिकट की ओर खौफनाक नजरा स दखा। भीड का दखकर साड पहले ही उत्तेजित हो चुका था क्योकि भीड मे से किसी ने उस पर बोतल खीच मारी थी। जब उसके सामन पिकेट खडा था। क्रोध से पागल होकर उसन पिकेट पर सीधा हमला किया। पिकट किसी प्रकार उस वार को बचा गया पर साड के एक सीग न उसकी कमर के एक हिस्से को चीर दिया। उसक बाद साड के दूसर वार को भी पिकेट न असफल बना दिया।

पिकेट बराबर इस ताक मे था कि किसी ओर स वह खूखार साड के सीगा का पकड सके, पर चौथी बार भी जब पिकेट साड के सीग न पकड सका तो उसे कुछ निराशा हुई। उधर दशको न शोर गुल मचाना शुरू कर दिया। व पिकेट को खूनी साड के सीग पकडन के लिए जोश दिला रहे थ।

कुछ निराश होन हुए पिकेट न तय किया कि अपन छोट घोडे को ही मौत के मुह म धकल कर वह हाथ से जाती हुई बाज़ी जीत सकता है। इसलिए साड जसे ही तजी स उसकी ओर लपका, उसने अपन घोडे को रास्त के बीच मे खडा कर दिया। साड न घोडे पर हमला कर दिया। उसका सीग घोडे के पेट म घुस गया। पिकेट न उस अवसर स लाभ उठाया। उसन साड के दूसरे सीग को पकड लिया और उसकी गरदन पर सवार हो गया। वह बराबर सीग को झटका देकर साड को चित करने का प्रयत्न करता रहा पर साड किसी प्रकार भी काबू म नही आ

रहा था। वह तो गुस्से में पागल होकर पिकेट को पूरी शक्ति से जमीन पर पटक देने का प्रयत्न कर रहा था।

आखिर किसी प्रकार पिकेट ने सांड के दोनों सींगों को पकड़ ही लिया। सभी दर्शक जोश में चिल्लाने लगे। वे अब सांड को जिंदा मार डालने की मांग कर रहे थे। वे इस खेल को चरम सीमा तक पहुँचाना चाहते थे।

पिकेट अपनी विस्मयकारी शक्ति और कुशलता के बल पर सांड के सींगों को पकड़े रहा, यहाँ तक कि कुश्ती के लिए पूर्व निर्धारित पांच मिनट का समय भी पूरा हो गया, पर फैसला करने वाले बिल्कुल चुप्पी साधे रहे। किसी ने घंटी नहीं बजायी। उनके इस बरताव से साफ प्रकट हो रहा था कि वे दोनों प्रतिद्वंद्वियों में किसी एक की मौत चाहते थे।

छठा मिनट। सातवां मिनट। प्रबंधक मिलर आखिर घबरा उठा क्या फैसला करने वाले पिकेट की मौत चाहते हैं। उधर दर्शक चारों ओर से चिल्लाने लगे, सांड को जान से मार दो।

इतने में मिलर ने सैनिकों को हुक्म दिया कि वे सांड को पीछे से जाकर काबू में करें। इस पर भीड़ फिर जोश में चिल्लाने लगी कि कुश्ती मौत तक चलेगी।

पर मिलर को कुश्ती की शर्त याद थी। पिकेट ने विस्मयकारी कुशलता और शक्ति का प्रदर्शन किया था। इसलिए सांड को बाड़े से बाहर निकाल दिया गया। दर्शक बाद में भी चिल्लाते रहे सांड को मारो। उन्होंने बाड़े में पत्थर और चाकू फेंकने शुरू कर दिये। इस पर पिकेट को भी बाड़े से बाहर निकाल लिया गया।

सांड से निहत्थे लड़ने का पिकेट का लोमहर्षक एवं विस्मयकारी कारनामा अपने ढंग का अनूठा था। इसलिए बरसों बाद जब पिकेट की मृत्यु हुई, तो उसकी शानदार समाधि पर ये शब्द अंकित किए गए—खूनी सांड से निहत्था कुश्ती लड़ने वाला इस शताब्दी का पहला और आखिरी व्यक्ति।

अफ्रीकी गोरिल्ला

यह उन दिना की बात है जब मैं कैमरून म था जहा फ्रास का राज्य था।

सरकार को यह सूचना मिली थी कि अमवम नाम क एक कस्ब के आसपास एक बहुत बडा गोरिल्ला स्थानीय लोगा का बहुत परेशान कर रहा है और फसला को बरबाद करके जन सम्पत्ति को बहुत क्षति पहुचा रहा है। मैं बहुत प्रसिद्ध शिकारी था इसलिए स्वभावत मैंने इस खबर म दिलचस्पी ली। मन या उस प्रदेश क किसी श्वेत आदमी ने अब तक कोई कद्दावर गोरिल्ला नही देखा था।

मैंने कुछ ही दिना म स्थानीय अधिकारिया को उस गोरिल्ले को जीवित पकडने पर राजी कर लिया और स्थानीय आदमियो को जो अमवम के जगला से अच्छी तरह परिचित थे साथ लेकर अमवम की ओर चल दिया।

अमवम पहुँचने पर मुझे पता चला कि गोरिल्ला रोजाना सुबह केला का नाश्ता करने आता है और यदि लोग उसको रोकन का प्रयत्न करत ह तो बहुत जोर-जोर स चीखता है और उसकी यह चीखे सुनकर लोग भयभीत होकर भाग जाते ह। मुझे यह भी बताया गया कि उसकी य चीखे कई मील तक सुनी जाती है।

यह बिलकुल सयोग था कि जिस सुबह को मैं उस गोरिल्ले की प्रतीक्षा कर रहा था उस सुबह वह केला क बाग म नही आया। परिणाम यह हुआ कि मैं उसकी खोज म जगल म प्रविष्ट हो गया। जगल की गीली

धरती पर मुझे शीघ्र ही गोरिल्ले के पद चिह्न नजर आये। उसका पाँव १३ इंच लम्बा और ६ इंच चौड़ा था। अतः मुझे यह अनुमान हो गया कि उस गोरिल्ले का वजन कम से कम छः सौ पौण्ड अवश्य होगा।

सारा दिन मैं अपने साथियों के साथ उस गोरिल्ले की खोज करता रहा। हद यह कि शाम हो गयी और मैं विवशतः अपने कैम्प में वापस आ गया।

कैम्प में एक स्त्री मेरी प्रतीक्षा कर रही थी।

इस स्त्री ने मुझसे कहा, 'जो जो मेरे खेत में आया था। उसने मुझे बरबाद कर दिया है।' इस स्त्री का खेत जंगल से एक मील दूर था। सुबह तड़के मैं वहाँ पहुँच गया, लेकिन मेरी निराशा की सीमा न रही जब दोपहर तक वहाँ मुझे गोरिल्ले की झलक तक नजर न आयी।

जो-जो ने मुझे धोखा दे दिया था।

अमरम की स्थानीय भाषा में गोरिल्ले को 'जो जो' कहा जाता है इसलिए मैंने भी उसका यही नाम प्रयुक्त किया और अपने गाइड से कहा, 'ऐसा लगता है कि तुम्हारे जो जो को मेरे आगमन का पता चल गया है।' उत्तर में गाइड ने कहा 'जो जो जरा बुद्धिमान होता है और खतरे की बू तत्काल सूंघ लेता है।'

दोपहर को मुझे सूचना मिली कि जो जो यहाँ से पाँच मील की दूरी पर नजर आया है और उसने एक किसान स्त्री पर हमला करके उसको जख्मी कर दिया है। मैं अपराह्न तक उस गाँव में पहुँच गया। जख्मी स्त्री ने मुझसे कहा 'मैं अपने खेत में काम कर रही थी कि गोरिल्ला दबे पाँव मेरे बिल्कुल निकट आकर खड़ा हो गया और उसके बाद उसने मुझे उठाना चाहा। मैं डर कर भागी तो उसने मेरा पीछा किया, लेकिन मैं जख्मी होने के बावजूद आबादी में प्रवेश करने में सफल हो गयी।

स्त्री की यह कहानी सुनने के बाद मुझे उस गोरिल्ले में और अधिक दिलचस्पी हो गयी। मैंने सोचा कि यदि मुझे यह दैत्यकाय और कद्दावर गोरिल्ला जीवित मिल गया तो मुझे इसके बदले में अच्छे खासे पैसे मिल जायेंगे।

अब मैंने उसी स्त्री के गाँव में कम्प लगा लिया। दो दिन तक मैं उस

गाव के खेतो मे जो जो की प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन हमे केवल जो-जो के पदचिह्न ही मिले जो जो नजर नही आया। इस असफलता पर मेरे गाइड जोजफ ने कहा—'लगता है जो-जो को हमारी उपस्थिति का पता चल गया है। वह हम से छुप रहा है।'

जोजफ ने मुझ से और कहा, 'यहाँ के गोरिल्ल बहुत अधिक समझदार होते है और सामान्य जानवरो की अपेक्षा खतरे की गन्ध अधिक तीव्रता से महसूस कर लेते है।'

मैं जो-जो के सबध मे बिल्कुल निराश हो चुका था। सहसा मुझे यह समाचार मिला कि कल सुबह जो जो यहा से तीन मील की दूरी पर देखा गया है और उसने एक किसान की तैयार फसल बरबाद कर दी है। सूचना मिलते ही मैं उस गाव मे पहुँच गया। जो जो ने वाकई बडी तबाही मचाई थी। खेत और जगल मे जो जो के असख्य पदचिह्न मौजूद थे। उस गाँव मे मुझे गिलबट नामक एक कबायली शिकारी भी मिला था। उसने मुझ से कहा, 'दस वर्ष पूर्व मैंने शिकार खेलने से तोबा कर ली थी, लेकिन जो जो की इनसान दुश्मन कार्यवाहियाँ मेरे लिए असहनीय हो चुकी हैं इसलिए मैं आपका साथ दूगा।'

गिलबट केवल शिकारी ही नही था, वह उन जगलो से पूरी तरह परिचित भी था। इसके इलावा जानवरो की सूझ-बूझ मे भी वह प्रवीणता रखता था। सारा दिन गिलबट उन जगल मे घूमता रहा और उसके बाद मुझसे बोला जो जो इस जगल से जा चुका है।

गिलबट के इस निर्णय के बाद अब जगल मे रुकना बेकार था। मैंने गिलबट से पूछा 'फिर अब हम क्या करना चाहिए?' गिलबट ने उत्तर दिया, 'आप निश्चित रहिए। वह जहाँ भी होगा, मैं उसे ढूँढ लूगा। उसके पदचिह्न देखकर मैं उसका पीछा करूँगा।'

और दो दिन तक हम जो जो के पदचिह्नो को देखकर उनका पीछा करते रहे। इन दो दिनो मे हम ने कम से कम बीस मील का फासला तय किया। हम जो-जो के पदचिह्न मिलते रहे और हम आगे बढते रहे और फिर बिल्कुल अकस्मात् एक स्थान पर गिलबट रुक गया। उसने कहा, 'जो जो हमारे बिल्कुल निकट किसी जगह मौजूद है।' गिलबट के

इशार पर उसके बाद हम एक ऊच पड पर बिना आवाज किय चढ गय। मैंन अपनी शक्तिशाली दूरबीन निकाली और जगल का निरीक्षण करन लगा और फिर जस भर गले स खुशी और उल्लास की एक हल्की-सी चीख निकल गयी। जो-जो लगभग दो सौ गज पर एक पड स लग कर खडा था और बडी निश्चि तता से फल खा रहा था। वह बडा निश्चित दिखाइ दे रहा था।

इतना बडा गारिल्ला मैंन आज तक नही देखा था।

कुछ क्षण तक विस्मय म उसकी ओर देखन के बाद मैंन गिलबट को दूरबीन दी और जा जा की ओर इशारा किया। गिलबट ने भी उसको देख लिया और उसके बाद मुझस कहा, 'आप उसको गोली मार दीजिए।'

लेकिन वह मरी बदूक की परिधि से दूर है। मैंन कहा इस समय उस पर गोली चलाना बेकार है।' इतना कहकर हम दोनो पड म उतर आय और बहुत धीम कदमा के साथ जो जो की ओर बढन लग। मैं बयान नही कर सकता कि य पद्रह मिनट हम पर किस दुविधा म बीत थ।

पद्रह मिनट बाद जब म उस पेड के पास पहुँचा जहा मैंन जा जो को बैठे हुए दखा था तो यह देखकर मेरी निराशा की सीमा न रही कि जो जो वहाँ स गायब था। शायद उसने हमे आते हुए देख लिया था या हमारी पदचाप सुन ली थी।

जो जो को पड के नीचे न पाकर मुझ स अधिक निराशा गिलबट को हुई। उसन मुझ स कहा, 'आप इसी जगह मरी प्रतीक्षा करें। मैं इस शतान की बू सूघने आग जा रहा हूँ। वह पास ही किसी जगह होगा।' गिलबट इतना कहकर आगे बढ गया।

मरे सपन म भी यह न था कि मैं जीवित गिलबट को अतिम बार देख रहा हू। वह मरे सामन सघन जगल म गुम हो गया। दो घटे तक मैंन उसी जगह जोजफ की प्रतीक्षा की। और फिर मुझे जसे चि ता होन लगी। मैंने जोजफ स कहा मुझे डर लग रहा है कि गिलबट किसी दुघटना का शिकार न हो गया हो।

'मुझे भी अब कुछ सन्देह होने लगा है।' जोजफ ने उत्तर दिया।

'आओ फिर उसे ढूंढें।' मैं इतना कह कर आगे बढ़ गया।

अभी हम जंगल में कठिनता से एक ही मील आगे गये होंगे कि एक जगह मेरे कदम जमीन पर जम कर रह गये। मेरे सामने एक पेड़ के नीचे गिलबट की लाश पड़ी थी। मैं उसके निकट आया तो सबसे पहले मेरी नजर उसके चेहरे पर पड़ी। उफ! मैं बयान नहीं कर सकता कि वह दृश्य कितना भयानक था। गिलबट की आँखों के डेले बाहर निकल आये थे। जो जो ने उसकी गरदन दबा दी थी।

गिलबट के शरीर पर जगह जगह जो जो के शरीर के लम्बे लम्बे बाल भी चिपके हुए दिखाई दे रहे थे, जो इसका प्रमाण था कि गिलबट और जो जो में कुश्ती भी हुई थी।

गिलबट की लाश देखने के बाद मैंने भी अपना निश्चय बदल दिया।

मैं जो जो को जीवित पकड़ना चाहता था, पर अब मैंने निश्चय कर लिया कि मैं हर मूल्य पर उससे अपने साथी की हत्या का बदला लूंगा। मैंने जो जो को गोली से मारने का निश्चय कर लिया था।

अभी शाम होने में तीन घंटे बाकी थे। मैंने जोजफ से कहा, 'हम दोनों शाम तक इस हत्यारे गोरिल्ले को ढूंढ लेंगे।'

मैंने यह वाक्य इतने कठोर और दृढ़ स्वर में कहा था कि जोजफ इंकार न कर सका।

गिलबट की लाश के पास जो जो के पदचिह्न स्पष्ट मौजूद थे, इसी-लिए मैं उन्हीं पदचिह्नों के सहारे आगे बढ़ने लगा, पर यह मेरा दुर्भाग्य था कि एक जगह सूखे पत्तों के कारण ये चिह्न गायब हो गये। अब शाम के चार बज रहे थे।

जोजफ ने कहा, 'मेरा खयाल है, हम वापस चलें।'

'नहीं!' मैंने कहा, 'मैं इस जंगल में रात व्यतीत कर लूंगा। मैं अब जो जो की लाश के बिना इस जंगल से वापस नहीं जाऊँगा, पर यदि तुम चाहो तो वापस जा सकते हो।' जोजफ वापस तो जाना चाहता था लेकिन अकेले जाते हुए वह डर रहा था। इसलिए वह विवशता मेरे साथ ही रहा। जोजफ और मैं आगे बढ़ गये। मैं उस समय यह भी

नही कर सकता था कि जो जो अब स्वय मेरा पीछा कर रहा था। अब यह भयकर जतु स्वय हम दोना शिकारियो का शिकार करने का निश्चय कर चुका था, अत हम दोना अधिक से अधिक दो सौ गज दूर ही गय हाेंगे कि पास की झाडी से 'जो जो न एक चट्टान की तरह उछल कर दोनो हाथा से जोजफ को पकड लिया।

मैं उसके इस हमले के लिए बिल्कुल तैयार नही था, लेकिन भरी बदूक बहरहाल मरे हाथ म थी। दूसरे ही क्षण मेरी बदूक आग उगल चुकी थी और गोरिल्ला ढेर हो चुका था।

मुझे आज भी उस छह फुट लम्बे गोरिल्ले की मौत का दुख है।

—टामस जकब

बलि लिए बिना भैंसा नहीं मरता

रात खूब गहरी और अंधेरी हो चुकी थी। टार्च के प्रकाश से पक्षी जाग कर बेचनी से चीख रहे थे। मैंने देखा कि क्रीजा के अलावा उसके दोनों साथी सहम सहम कर कदम उठा रहे थे और उनके चेहरे तनिक भयभीत थे। जिम ने धीरे से मेरा हाथ दबा कर कहा ये सब भयभीत हैं। मुझे एकदम जंगली भैंसे का खयाल आया। मैंने धीमे स्वर में जिम से कहा 'क्या न हम रास्ता बदल कर पहाड़ी झील की ओर निकल जाएँ।

वह साहसी आदमी था। तत्काल राजी हो गया। एक फर्लांग चलने के बाद मैंने धीरे से क्रीजा को हिदायत दी कि वह अपने साथियों को बताए बिना झील की ओर चल दे। मामा यतया जंगली भैंसे अपनी रातें झील के किनारे या किसी गीले स्थान पर व्यतीत करते हैं और किसी एक स्थान पर दो से अधिक हरगिज नहीं होते। मैं चाहता था कि बाकी रात की यात्रा निरुद्देश्य न रहे।

लगातार तीन घण्टे चलने के बाद काली पहाड़ियाँ दिखाई दीं और वातावरण में तरल सड़ांध महसूस हुई। यह इस बात का द्योतक थी कि हम झील के निकट हैं। सामान्यतया ऐसे ही वातावरण में भैंसे रहते हैं। बेहद अँधेरे और सघन वन कुंज में निकल कर हमने टार्च बुझा दी। क्रीजा के दोनों साथी कबाइली भाषा में कुछ कह रहे थे। वे हमारे इरादों को समझ चुके थे और शायद अपनी अरुचि प्रकट कर रहे थे।

क्रीजा हम सब से आगे था। सहसा उसके कदम रुक गये और वह उल्टे कदम लौट कर हम से आ मिला। मैंने समझा कि कोई संकट आन

वाला है। मैंने जिम क कन्धे पर हाथ रखा। उसन फुर्ती के साथ राइफल कन्धे स उतार कर हाथ मे थाम ली। इससे पहले कि श्रीजा कुछ कहता, हम सब न धरती की ओर से उठने वाली भयानक और भारी धमक सुन ली। बिल्कुल ऐसी आवाज थी जस धरती पर गोले बरस रह हो। श्रीजा हमारे चेहरा को देखन लगा मानो समझन का प्रयत्न कर रहा हो कि हमन इन आवाजा का पहचाना या नही। मैंने धीरे स कहा, यह भैंसो की पदध्वनि है।

हम जल्दी स पेड के साये म सिमट गय। श्रीजा और उसके साथिया न बिजली जसी तजी के साथ भाले तान लिये। आवाज तजी से समीप आती जा रही थी। मैंन अनुमान लगाया कि यह एक भसे की आवाज नही हा सकती। अवश्य ही यह दो या इसस अधिक भसा की आवाज है।

मैंन सावधानी के रूप म जिम और उसके साथ एक क्वाइली को कुछ दूरी पर दूसरे पेड की आड मे भेज दिया। मुझे आशा नही थी कि झील के किनार पहुँचे बिना भस स सामना हो जाएगा। अलबत्ता हम पूरी तरह तैयार हो चुके थ।

कुछ देर के बाद सामने स काले रग का टीला-सा हिलता हुआ दिखाइ दिया जिसन धीमी सी सीटी बजाई। दूसर क्षण ही उसके पीछे दूसरा भैंसा भी प्रकट हो गया।

मन राइफल उठा कर टाच के स्विच को टटोला। लगभग पचास गज की दूरी पर आ कर दानो भसे रुक गय। उन्होने हमारी उपस्थिति को महसूस कर लिया था और व धरती की ओर मुह झुकाए हुए जोर-जोर स सास लेकर हमारी ग ध ल रहे थे। मै उनके और आग बढन क लिए अधीर हा गया।

अगला भैंसा दाड आर मुटा। दाएँ बाएँ जल्दी-जल्दी गरदन हिलाकर उसन कुछ सूघा और फिर धीमे धीम कदमा स आगे बढन लगा। अब उसके भयानक साग साफ दिखाई द रह थे। उसकी सबसे अधिक खतरनाक और ध्वसकारी चीज यही सीग होत है, जिनस कई बार वह हाथी तक को मार डालता है।

मैंन भसे को बौखला देने के लिए खास तरह की आवाज निकाली।

भैंसे के उठे हुए कदम अकस्मात् रुक गये। मैंने पुनः आवाज की तो वह फिर आगे बढ़ने लगा। दूसरे भैंसे ने भी उसका अनुसरण किया। वह आगे वाले की अपेक्षा कद में छोटा था और घबराया हुआ भी। मैं उन दोनों को एक परिधि में लेने के लिए कोई तरीका सोच रहा था कि अगला भैंसा इतना आगे बढ़ गया कि मुझे फौरन टार्च जलानी पड़ी।

उसकी अगली टांगें हाथी के पांव की तरह भारी और भूरे रंग की थीं। टार्च का प्रकाश सीधा उसके मुंह पर पड़ रहा था। उसने तीव्र घुरघुराहट और आवेश की अवस्था में गरदन को कई झटके दिये। यह सोच कर कि शायद अब जिम भी उसका निशाना ले चुका होगा मैंने घोड़े पर उँगली रख दी किन्तु सहसा जिम की ओर से भाले की अनी चमकी और पलक झपकते भैंसे की टाँग में घुस गई। उस समय पीछे वाला भैंसा विरोधी दिशा में भाग खड़ा हुआ। मैंने जल्दी से एक फायर किया पर वह निष्फल चुका था। अगला भैंसा जोर से गरजा और पांव झटक कर उसने भाले को उछाल दिया। यह गलती शायद जिम के साथी कबाली की थी। जिम ने अपनी टार्च जलाई।

दोनों ओर से प्रकाश पड़ते ही भैंसा बेहद उत्तेजित होकर आगे बढ़ा। मैं निशाना लेने के लिए दो कदम पीछे हटा तो भैंसा सींग ऊँचा किये हुए पूरी शक्ति के साथ लपका। उसका मुख जिम की टार्च की ओर था। मैंने फौरन एक फायर किया और दूसरे क्षण भैंसे की गरज के साथ एक इन्सानी चीख भी उठी। फिर दूसरा फायर हुआ। यह जिम की ओर से था। पर मैं समझ न सका कि चीख किसकी थी। भैंसा गरजता हुआ जंगल की ओर भाग निकला।

जिम एकदम मेरे निकट आया और जब हमारी टार्च का प्रकाश इर्द-गिर्द फैला तो हमने देखा कि जिम के साथ खड़ा हुआ कबाली पांच-सात गज की दूरी पर पड़ा सिसक रहा था। उसकी पसलियों में कई इंच चौड़ी दरार से अंतड़ियां निकल रही थीं। उस भैंसे ने सींग पर उठा कर फेंका था।

जीना और उसका साथी फौरन उसकी ओर लपके। जंगल में दूर तक भैंसे के डकारने की आवाज आ रही थी। एक भाले के अलावा उ.

दहकती आँखो का रोमाच

मैं गस्ट हाऊस म वठा हुआ अपनी राइफल साफ कर रहा था तभी राजा न तीन ग्रामीणा के साथ अन्दर प्रवश किया। एक की वाह से खून वह रहा था और वह तीव्र पीडा से तडप रहा था। अन्य दोनो किसान भी वहुत घवराए हुए थे। राजा न हक्लात हुए वताया कि नरभक्षी शर ने वीम-पच्चीम मिनट पहले इन किसाना पर हमला किया था। वह तो अच्छा हुआ कि उसी समय एक चीता उधर आ निकला और शेर स उलझ पडा, वरना इनम स एक भी न वचता।

मुझे यहा आए हुए दो दिन ही हुए थे। असम सरकार की ओर से मुझे उस लगडे नरभक्षी को मौत के घाट उतारने के लिए नियुक्त किया गया था। राजा गेस्ट हाऊस का चौकीदार रसाइया, नौकर सव कुछ था। जैस ही उसने शेर और चीते का जिक्र किया, मैं अधीर हो उठा। असम सरकार की सूचनानुसार यह नरभक्षी पचास से अधिक मनुष्या को खा चुका था। मैंने राजा को चुप रहने का इशारा किया। मैं चाहता था कि किसाना के मुह से ही उनकी आपवीती सुनू। इतने मे वातावरण भयकर आवाज स थर्रा उठा। तीनो किसान सिमट कर एक कोने म दुवक गए। राजा, जो हक्लाता था और अधिक हक्लाने लगा। मने तत्काल राइफल उठाई और शेर की दूसरी गरज की प्रतीक्षा करन लगा। कई मिनट वीत गए पर वातावरण मे पुन कपन पैदा न हुआ।

किसाना ने वताया कि व अपन खेता मे काम कर रहे थे कि सहसा ऊँचे ऊँचे पौधा म सरसराहट हुई। शेर धीरे धीरे गुर्राता हुआ उन की ओर वढ रहा था। उन्होंने शेर की खूनी आँखें देख ली थी और उन

इतना भय छा गया था कि वे जड़ हो गए। मेरे न पहुंचने तो शेर फिर लपक कर बीनू को बाहर को चबा डालता। बीनू ने चीख मारी और उसके साथ ही एक चीता उन्हीं पौधों के बीच में प्रकट हुआ। वह शेर पर टूट पड़ा। शेर ने बीनू को छोड़ दिया और अपने प्रतिद्वन्द्वी से मुकाबले के लिए आ गया। चीते का यह हमला हमारे लिए वरदान सिद्ध हुआ और हम भाग खड़े हुए।

मैंने किसानों से कहा कि वे गाँव जाने के लिए वह रास्ता न अपनाएँ जहाँ शेर और चीते में लड़ाई हुई थी। यह गाँव गेस्ट हाऊस से पाँच मील पूर्व की ओर था। चारों ओर वीरानगी छाई थी। यहीं कहीं ही हरे भरे खेत नजर आते थे। किसानों ने बताया कि यह वीरानी नरभक्षी शेर के कारण है। किसानों ने उस क्षेत्र में काम करना बन्द कर दिया है। *राशू और जीयू ने बीनू को सहारा दे रखा था। हम आधे घंटे के बाद* उन खेतों में पहुँच गए जहाँ चीते ने शेर पर हमला किया था।

यहाँ पहुँचकर किसानों के कदम रुक गए। वे उन पगडण्डियों पर चलने से घबरा रहे थे। उनकी यह दशा देखकर मैं उनके आगे-आगे चलने लगा। मेरे एक हाथ में राइफल थी तथा दूसरे हाथ में मैं पगडण्डी पर झुकी हुई झाड़ियों और पौधों को हटा रहा था। थोड़ी दूर चलकर अनजाने में ही मेरे शरीर में भय की लहर दौड़ गई। मुझ से केवल दस ग्यारह कदम की दूरी पर शेर सो रहा था। मुझे उसकी पूछ और पिछली टाँगें नजर आई थीं। मुझे रुका देख कर किसान भी रुक गए।

सहसा मुझे लाल मुँह वाली बड़ी बड़ी मक्खियों की भिनभिनाहट सुनाई दी जो सोए हुए शेर पर मंडरा रही थीं। अब मैंने ध्यान से देखा। *मक्खियाँ उड़ाने के लिए शेर अपनी दुम भी नहीं हिला रहा था।* मैं धीरे से एक कदम और आगे बढ़ा और झुककर देखा, यह तो चीता था। अंतड़ियाँ पेट से बाहर निकली पड़ी थीं और निचला भाग खाया जा चुका था। मैंने निश्चिन्तता की सांस ली। पीछे मुड़कर अपने साथियों को देखा। वे थरथर काँप रहे थे। मेरे चेहरे पर मुस्कराहट देखकर वे एकदम मेरी ओर लपके। मैंने मुर्दा चीते की ओर इशारा किया तो खुशी से उनकी बाछें खिल गई। अपने राज्य में हस्तक्षेप करने वाले चीते को शेर ने

चीर फाड कर रख दिया था ।

शेर की यह आदत होती ह कि वह शिकार खान के बाद काफी दर तक आराम करता है । चीत का शिकार केवल एक घण्टा पहले हुआ था इसलिए मुझे विचार आया कि नरभक्षी कही निकट ही आराम कर रहा होगा । पेट भरन क बाद शेर बहुत कम हमला करता ह और यदि उसस आख मिलाए बिना सफर जारी रखा जाए तो वह हमला नही करता । यह जानत हुए भी हम सावधानी स फूक फूक कर कदम रख रह थ ।

शाम के चार बजे हम मोगरा गाँव मे पहुँच गए । गाँव के बाहर बहुत बडी भीड जमा थी । वहा एक और हृदयविदारक दश्य दिखा । लगभग १४ वष का एक लडका मरा पडा था । पिता की आखे पथराई हुइ थी और वह मौन खडा था । मृतक के परिवार की स्त्रिया रो रही थी । गाव वालो न बताया कि कुछ मिनट पहले कुछ लडके इस स्थान पर खेल रह थे । किसी को यह खयाल भी न था कि नरभक्षी यहा हो सकता है । सहसा वह गरजा और छलाग लगा कर इस लडके को दबोच लिया । लडको का शोर और शेर की दहाड सुनत ही गाव वाले कुल्हाडी आदि लेकर बाहर निकले और उन्होने शोर गुल मचाकर शेर को भागन पर विवश कर दिया, किन्तु उस समय तक लडका दम तोड चुका था ।

एक एक क्षण मूल्यवान था । मैंन तुरन्त शेर का पीछा करन का निश्चय कर लिया, किन्तु कठिनाई यह हुइ कि राशू और उसके भाइ न मेरे साथ चलने से इकार कर दिया । दूसर गाव वाले भी साथ दन का तैयार नही थे और मेरा अकेले पीछा करना सकट से खाली नही था । अब इसके सिवा और कोई उपाय न था कि मैं गेस्ट हाऊस चला जाऊँ ।

गेस्ट हाऊस म राजा ने आग का बहुत बडा अलाव जला रखा था और वह उसके पास ही उदास बैठा था । मुझे दखत ही उसने हकलात हुए बताया कि थोडी देर पहले उसने शेर की गरज सुनी थी । मैं विस्मित था कि शेर के दहाडने की आवाज मैने क्यो नही सुनी । मैं बहुत अधिक दूर तो नही था ! खाना खाने के बाद मैंन राजा स शेर के बार म और अधिक जानकारी प्राप्त करन के लिए पूछा, तुमन कभी इस लगडे शेर को देखा है ?

मरे इस प्रश्न पर उसका पीला चेहरा और भयानक हो गया। घणा ओर उपेक्षा की परछाइयाँ फैलने लगी। उसन लगभग काँपत हुए उत्तर दिया, 'साहब आप यह पूछ रहे है? आप तो मुझे शाप द रह है। भगवान न कर कि मैं उस शेर की शक्ल दखू। वह शेर नहीं, भूत ह जो शक्ल बदल-बदल कर सामने आता है। यदि उसन मुझे देख लिया तो पता नही मरी शक्ल म क्या परिवतन आ जाएगा। उसकी कायरता तथा मूखता पर मुझे बहुत क्रोध आया।

राजा न तडके ही मुझे जगा दिया। वह मज पर चाय और सण्डविच रख चुका था। मने उससे पूछा कि रात का उसने शेर की गरज नहीं सुनी। उसन हकलात हुए उत्तर दिया कि वह रातभर जागता रहा है और उम बहुत दूर स आती नरभक्षी की दहाड सुनाई देती रही है। फिर उसन ताजी हवा के लिए खिडकी खोल दी। हवा का एक ठडा झोका आया आर दरवाजे के पर्दो म सरसराहट पैदा कर गया। मन प्याली मे चाय उडेली और उसे पीन ही वाला था कि राजा चीख उठा। वह थर-थर काँप रहा था। उसन खिडकी की ओर इशारा करत हुए कहा, शेर

मरे हाथ से प्याली छूट गई। मैंने घूमकर खिडकी की ओर देखा। बाहर अधकार मे दो चमकीली आखें हम घूरती हुई आगे बढ रही थी। मैन राइफल उठाई और खिडकी स शेर का निशाना लिया। सहसा मुझे खयाल आया कि अधकार म शेर की आँखें अगारा की तरह दहकती नजर आती हैं। इन आखो म वह धधकती लाली नही थी। मैं अब बहुत सावधान हो गया। इतने मे किसी ने राजा को आवाज दी। उसके होश उड गए और वह एक कोने म दुबक गया। मैंने आवाज देने वाले स कहा कि वह अदर चला आए। एक दुबले-पतले लडके ने अदर प्रवेश किया। दखते ही राजा उससे लिपट गया। वह शिकार विभाग का कमचारी फेरी था जो मचान के लिए एक बैल लाया था। खिडकी के बाहर चमकन वाली आखें उसी बैल की थी। यह पहला व्यक्ति था जिसे सरकार ने मर पास भेजा था। मैंने उससे कहा कि वह शेर के शिकार मे मुझको सहयोग दे। यह सुनत ही उसके कहकह रुक गए और चेहरे का रग उड

गया। बिना कुछ बोल वह बाहर चला गया।

फरेरी के इस तरह चले जाने से मुझे खयाल आया कि कही राजा भी मेरा साथ न छोड दे, पर मेरा अनुमान गलत निकला। वह अपनी कुल्हाडी उठा कर मेरे साथ चलने का तैयार हो गया। चलन समय मैंने अपना राइफल राजा को पकडा दी थी। मैं उसकी प्रतिक्रिया देखना चाहता था। अब उसम काफी विश्वास आ गया था। नरभक्षी उत्तर-पूर्वी भाग म रहता था और अधिकतर उन्ही प्रदेशा के लोग उसका शिकार बनत थे। दूसरी दिशाओ म वह कभी-कभी ही जा निकलता था। पूव म सात मील पर एक छोटी-सी नदी बहती थी। मैंन नदी के निकट ही मचान बाधन का निश्चय किया।

दोपहर हो गई। हम चुपचाप आगे बढ रह थे। हम नदी के निकट पहुँच गए। नदी के निकट ही पीपल का एक बहुत बडा वृक्ष था। उसकी डाले मजबूत और दूर तक फैली हुई थी। मैंन उसी वक्ष पर रात व्यतीत करने का निश्चय किया और राजा से कहा कि वह वापस चला जाए। पीपल का तना बीस-पचीस फुट सीधा उपर चला गया था। उस पर चढन के लिए कठोर परिश्रम करना पडा। इस बात से आश्चय हुआ कि वक्ष पर पहले ही से मचान बँधा हुआ था। यह देख कर आश्चय और भी बढ गया कि मचान बाँधन मे एक भी रस्सी का उपयोग नही किया गया था। टहनियो को एक-दूसरे मे फँसा कर स्थान बनाया गया था। उस पर पीपल के सैकडो सूखे पत्ते बिछे थे।

सूय अस्त हो रहा था और अन्धकार गहरा होता जा रहा था। मैं दो चार बिस्कुट खान के बाद लेट गया। राइफल मेरी बगल म थी। सार दिन का थका-हारा था, लेटते ही सो गया। रात के किसी भाग म सहसा वक्ष हिलन लगा, जस भूकम्प आ गया हो। मैं हडबडा कर उठ बैठा। मचान बुरी तरह काँप रहा था। या लगता था कि अब गिरा तब गिरा। सभलने का प्रयत्न किया, पर वक्ष और तजी से डोलन लगा। परेशान था और कुछ समझ मे नही आ रहा था। सहसा मुझे वाता-वरण म एक अजीब-सी गध महसूस हुई फिर तेजी से साँस लन की आवाज आन लगी। मेरी नजर वक्ष के तन पर पडी। एक बहुत बडा

भालू ऊपर चढ रहा था। उफ, मेरे तो प्राण ही निकल गए। अब पता लगा कि मैं जिस मचान पर बैठा था, वह उस भालू के सोने का स्थान था। वनो म भालू सामान्यतया ऊँचे वक्षो पर आराम करने क लिए स्थान बना लेता है। मैंने भालू क सिर का निशाना ले कर गोली चला दी। भालू गोली खाते ही धडाम स नीचे गिरा। इसस पहले कि मैं दूसरा फायर करता, वह तडप कर ठडा हो गया।

बाकी रात आँखो मे कट गई। उस रात शेर नदी पर पानी पीने न आया और न ही उसकी गरज सुनाई दी। वृक्ष से नीचे उतरने ही वाला था कि मुझे दूर से लोगो के बोलने और चलने की आवाजें सुनाई दी। राजा बहुत-से लोगो को साथ ले मेरी ओर आ रहा था। वह आगे-आगे अकड कर चल रहा था। लोगो के हाथो मे लाठियाँ, बाँस और रस्सियाँ थी। वे मुर्दा भालू को देख कर कुछ देर के लिए ठिठके। मैं वक्ष स नीचे उतर आया। राजा और गाँव वालो ने रात को राइफल चलने की आवाज सुनी था। उन्हें विश्वास हो गया था कि नरभक्षी मौत के घाट उतर चुका है। वे शेर की लाश देखने के लिए आए थे। उन्हें बडी निराशा हुई।

मैं और राजा गेस्ट हाऊस पहुचे। लोगो की एक भीड हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर भय छाया हुआ था। उनमे से एक बूढे ने अश्रुपूर्ण आँखो से बताया कि आज प्रात शेर गाँव से उसकी बहू को उठा ले गया है। ये लोग गरेनी गाँव से आए थे जो मोगरा के पश्चिम मे तीन मील दूर था। बूढे का जवान बेटा कलकत्ता की एक जूट मिल मे काम करता था और उसकी पत्नी त्योहार मनाने ससुराल आई थी। उनकी शादी को एक वर्ष हुआ था और दो महीने बाद ही वह मा बनने वाली थी।

मैं तुरन्त उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। जहाँ महिला पर शेर ने हमला किया था, वहाँ ताजा खून काफी मात्रा मे जमा हुआ था और दूर तक खून की बूदें टपकती हुई चली गई थी। पदचिह्न बताते थे कि शेर अधिकतर तीन टाँगो के सहारे चलता है। हम खामोशी से पदचिह्नों के साथ साथ चल रहे थे। आधा मील के बाद खून के

निशान खत्म हो गए। शेर के पंजे के निशान पूर्वी झाड़ियों की ओर मुड़ गए थे। शेर सामान्यतया अपने शिकार को किसी सुरक्षित स्थान पर उठा कर ले जाता है और पेट भरने के बाद बाकी भाग वहीं छोड़ जाता है। हम लाश झाड़ियों में ढूंढने लगे।

एक झाड़ी में उलझी हुई ओढ़नी मिली। उस झाड़ी से कुछ दूरी पर हमें लाश भी मिल गई। खरोंचों से उसका चेहरा बुरी तरह जख्मी था। गर्दन टूट चुकी थी। सीने टाँगों और बाँहों पर जगह जगह गहरे घाव थे। उसका पेट अभी तक सलामत था। गाँव वाले लाश को उठा कर ले गए और उसके पेट में से बच्चा निकाल लिया वह अभी तक जिन्दा था।

गाँव के दो युवक मेरा साथ देने को तैयार हो गए। मैंने उन्हें गेस्ट हाऊस भेज दिया ताकि वहाँ से वे मचान बाँधने का सामान और बल्ले ले आएँ। मैं उन झाड़ियों के निकट एक वृक्ष पर मचान बाँधकर शेर की प्रतीक्षा करना चाहता था। उनके जाने के बाद मैं ऐसा स्थान ढूंढने लगा जहाँ से छिप कर शेर पर गोली चला सकूँ। इस भयानक वन में मैं अकेला था। सहसा कुछ दूरी पर सरसराहट-सी महसूस हुई। मैं एक झाड़ी में दुबक गया और दूरबीन से चारों ओर का निरीक्षण करने लगा। झाड़ियों के सिवा और कुछ नजर न आया। अब सरसराहट की आवाज रुक गई थी। मैं झाड़ियों के पीछे से होता हुआ आगे बढ़ा। सहसा मेरे पैर अपने आप रुक गए। सामने शेर लेटा हुआ था और उसका मुँह मेरी ओर था। वह भयंकर आँखों से मुझे लगातार देखता रहा। मेरे और शेर के बीच दूरी बहुत ही कम थी। मेरे लिए आगे बढ़ना या पीछे हटना एक-सा घातक था। जरा पीछे हटा और एक पेड़ की आड़ ले कर शेर का निशाना लिया। राइफल को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ। इससे पहले कि वह कूद कर मुझे दबोच लेता, मैंने घोड़ा दबा दिया। वातावरण में गोली की आवाज गूँजी। शेर जोर से दहाड़ा और छलाँगें लगाता बहुत दूर निकल गया। मैंने दूसरी गोली भी दाग दी पर झाड़ियों की अधिकता के कारण निशाना चूक गया।

शेर को पहली गोली अवश्य लगी थी, वरना वह भाग जाने

बजाय मुझ पर पुन हमला करता। तभी राजा और ग्रामीण मचान का समान ले कर पहुँच गए। हमने बडी पुर्ती के साथ एक ऊँचे पेड पर मचान बांधा और थोडी दूरी पर बैल को बाध दिया। फिर तीनो को वापस चले जाने की इजाजत द दी।

चाद निकल आया था और म दूरबीन स बल की गतिविधि का ध्यान से निरीक्षण कर रहा था। बैल और गाय शत्रु को दखत ही सिकुड जात हैं और उनकी दुम दोना टांगा के बीच निर्जीव हो कर चिपक जाती है। व पिछली दोनो टागा को झुका कर बैठने का बार-बार असफल प्रयत्न करते हैं। रात का पहला प्रहर बीत गया। अचानक एक भयानक गरज न वन की निस्तब्धता को भग कर दिया। पहले तो बैल ने रस्सा तुडा कर भागन की कोशिश की और फिर पूछ दबाकर चुपचाप खडा हो गया।

आधी स अधिक रात बीत गई थी और नीद से मेरी आखें बोझिल हो रही थी। अकस्मात मुझे शेर की दहाड सुनाई दी। नीचे झाडियो म दहकती आँखें दिख रही थीं। अभी शेर का पूरा शरीर सामने नहीं आया था।

मैं सांस रोक कर झाडियो की ओट से शेर के निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था। शेर न झुरझुरी ली और वह उल्टे पाव पीछे हटने लगा। मैं यदि तुरत गोली चला देता तो निशाना चूक जाता। मैं अभी दुविधा मे था कि शेर जोर से दहाडा और कूद कर बल की गदन पर सवार हो गया। तभी मेरी राइफल गरज उठी। गोली शेर की गदन को छेदती हुई निकल गइ। नरभक्षी ने एक ऊँची छलाग लगाई। जैसे ही वह जमीन पर गिरा, दूसरी गोली उसके पेट म घुस गई। लगडा नरभक्षी तीन चार मिनट तडप कर चिर निद्रा म विलीन गया।

—ह्यू एसन

प्रलय के भयानक दस सेकंड

अफ्रीका के खतरनाक जंगलों का भेद अभी तक कोई मनुष्य नहीं पा सका है। विज्ञान अंतरिक्ष को खोज सकता है किन्तु अफ्रीका के सघन वनों के रहस्य को पा लेना विज्ञान के बस का रोग नहीं। वहाँ के मनुष्यों को हम केवल इसलिए मनुष्य कहते हैं कि उसकी शक्ल-सूरत और शरीर मानवों की तरह होता है, अन्यथा मनुष्य ऐसी परिस्थितियों में एक दिन भी जीवित नहीं रह सकता। सघन वनों के अन्दर जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुँच सकता वहाँ भी मनुष्य बसते हैं। वे वृक्षों और दल-दल से आहार प्राप्त करते हैं और ऐसे जन्तुओं के मध्य रहते हैं जिनकी केवल गरज और गुर्राहट से ही कलेजा मुँह को आ जाता है। ये मनुष्य बब्बर शेर की तरह खूंखार, लोमड़ी की तरह चालाक और बन्दर की तरह भागने दौड़ने और वृक्षों पर चढ़ने की योग्यता रखते हैं।

जो विदेशी शिकारी बन्दूकों राइफलों और हथियारों के पूरे जत्थे को साथ लेकर शिकार को निकलते हैं वे जब अफ्रीका के निवासियों को शेर बब्बर के आमने सामने आकर बिना बन्दूकों के मारते देखते हैं तो विदेशी शिकारी का सम्पूर्ण गर्व समाप्त हो जाता है।

मैं जब अफ्रीका में शिकार खेलने गया तो मुझे बताया गया कि यहाँ का एक कबीला नान्दी बब्बर शेर को घेर कर बिना बन्दूक के मार लेता है। तब मैंने विश्वास न किया। जब यह प्रदेश अंग्रेजों के अधिकार में आया तो ब्रिटिश सरकार ने इस प्रदेश से शेरों की संख्या को कम करने के लिए शिकारियों का एक दल भेजा और वहाँ के स्थानीय निवासियों

को इकट्ठा करके हिदायत दी कि य जगल म हांका करें। कोई आठ सौ हब्शी एकत्र हो गय, किन्तु सघन हाका करने से इन्कार कर दिया और कहा कि हम अपनी बरछियां से शेरा को मारेंगे, क्योंकि बन्दूक म शेर को मारना हमारे कबीले मे लज्जाजनक समझा जाता है।

इसस एक ही दिन पूव छ हब्शियो न एक शेर और शेरनी को मारा था। मैं भी ब्रिटिश शिकार-पार्टी मे शामिल था। मैंन कहा कि चलो, इन लोगो को एक-दो शेर मार लेन दो। देखें ता सही कि ये बिना बन्दूक के किस तरह शेर को मार लेत है। दूसर दिन धुध अधिक होन के कारण सघन वन मे जाना सकटपूण था। उससे अगले दिन हम छ शिकारी राइफलो स युक्त होकर चल पडे। हमार साथ हब्शियो की पूरी सेना थी। उनम से कइयों के पास लोहे की बरछियाँ थी, जो उन्होने स्वय ही बनायी थी। उनके पास मगरमच्छ की खाल की बनी हुइ ढाल भी थी। हर बरछो की लम्बाई कठिनता से चार फीट थी। अधिकतर हब्शी बिलकुल नगे थे। वे काटेदार झाडिया और पत्थरा को सामान्य घास की तरह रौंदत हुए चले जा रह थे। इसके प्रतिकूल हम घोडा पर सवार थे। हर घोडे के साथ तीन-तीन चार-चार हब्शी थ। फिर भी हम पाँव फूक फूक कर आगे बढ रहे थे।

हम अभी कुछ कदम ही आगे बढे होगे कि बरछिया वाले हब्शी नज़रा से ओझल हो गये। जब हम बारह मील का फासला तय कर चुके तो एक खुली-सी घाटी आ गयी। देखा कि वे हमसे आगे-आगे चले जा रह थे। उनके शरीर मानवीय शरीर प्रतीत नही होते थे। वे जन्तु लग रहे थे या शायद लोहे के बने हुए। वे इन्ही वना और इन्ही अमानवीय कठिनाइयो म उत्पन्न हुए और पल कर युवा हुए थे। उनका आहार हर प्रकार के जीव जन्तु का दूध खून और कच्चा मांस था। उनके चेहरो पर गव निर्भीकता, अहिंसा और निममता के चिह्न थे। स्पष्ट पता चलता था कि ये लोग न दया के याचक हैं और न दया करन हैं। हर प्रकार के जन्तु उनके आगे भागे चले जा रह थे।

हम और अधिक खुले स्थान पर जा पहुँचे जहां सघन झाडियां थीं और पेड कम घने। सहसा शेर की गरज सुनायी दी। हमारे घोडे बिदक

क्र रुक गये। बरछिया वाले हब्शी झाडियो मे गायब हो गये। हम घोडो से उतरे और राइफलो के सेफ्टी-कैच आगे कर लिये। शेर का कोई भरोसा न था कि किस ओर मे आ निकले।

शेर खुले मैदान मे आ गया। वह सचेत था। गदन तानकर इधर-उधर देख रहा था। बहुत बडा शेर था और उस समय जगल का बादशाह लग रहा था। जगल का कौन सा जन्तु है जो उसकी गरज सुनकर एक स्थान पर खडा रह सकता हो? हाथी और गेंडे तक भाग जात हैं।

शेर रुक गया और दबी-दबी गजना करता हुआ ऐसे अदाज स हर तरफ देखने लगा जैस कह रहा हो, मेरी बादशाही मे कदम रखने का दुस्साहस किसने किया है?'

हम विदेशी शिकारी झाडियो की ओट मे हो गये। शेर मेरी रेंज मे था। मैं उसे आसानी से गोली का निशाना बना सकता था किन्तु मैं मनुष्य और शर की लडाई देखना चाहता था। इतने म कबीले का सरदार अकेला शेर के पहलू से प्रकट हुआ। उसने बरछी तान रखी थी। यह उन लागा की रस्म थी कि पहला प्रहार कबीले का सरदार किया करता था। वह दबे पाव शेर की ओर बढता आया और इतना समीप आ गया कि शेर उसे एक ही छलाग मे पजो मे दबोच सकता था। हब्शी सरदार के चेहरे पर भय का तनिक भी आभास न था। शेर न गदन उसकी ओर घुमायी और उसे देखकर गुर्राया। इतनी देर म छह और हब्शी विभिन्न दिशाआ से शेर की ओर बढे। शेर ने दूसरी ओर दखा और क्रोध से गुर्राने लगा। हब्शी घेरा तग करने लगे। शेर खडे-खडे चारो ओर घूमने लगा, जसे देख रहा हो कि पहले किस पर हमला करे। हब्शी ढालो और बरछियो को आगे किये और जरा-जरा झुके हुए घेरा तग कर रहे थे। शेर और अधिक आक्रोश से गरजा तो सरदार न छलाग लगा कर बरछी मारी जो शेर की बगल मे लगी। जख्म खाकर शेर बम की तरह गरजा। जगल काप उठा। शेर घूमा और एक हब्शी ऐन उसके सामने आ गया। शेर धरती पर अडा और दूसरे ही क्षण वह उस हब्शी के ऊपर था। हब्शी ने मौत के मुह मे भी निर्भीकता का प्रदशन किया और बरछी शेर के शरीर मे उतार दी।

शेर ने पंजो से उसकी पीठ से मांस निकाल लिया। हब्शी ने सिर ढाल के पीछे छुपा लिया वरना शेर उसकी खोपडी को चबा डालता।

हब्शियो ने शेर पर हमला बोल दिया। वह अब जन्तुओं की तरह चीख और चिंघाड रहे थे। उनकी बरछियाँ शेर के शरीर में उतरती जा रही थी। शेर ने उस हब्शी को छोड कर एक और को पंजों में दबोच लिया और पलक झपकते ही उसकी पीठ से मांस के लोथडे निकाल कर उसके कंधे को दांत की तरह चबा डाला। ऐन उसी समय दो बरछियां शेर की एक बगल में लगी और दूसरी ओर निकल गयी। इसके बावजूद शेर ने एक अन्य हब्शी की बरछी को मुंह में लेकर विस्मयकारी ढंग से उसे कमजोर-से तार की तरह लहरा कर के परे फेंक दिया। यह सारा दृश्य ही आश्चर्यजनक था। शेर के शरीर से बरछियाँ पार हो गयी थी किन्तु वह गिरने के बजाय लड रहा था और जो इन्सान उसके दांतो और पंजो से चीरे फाडे गये थे, वे भी पाँव पर खडे शेर पर लपक रहे थे।

आखिर शेर गिर पडा और जरा सा तडप कर ठंडा हो गया। उसके साथ ही दोनो जख्मी भी गिर पडे और अचेत हो गये। दृश्य इतना भयंकर था कि मुझे यो महसूस हुआ जैसे कई घण्टे बीत गये हो, किन्तु लडाई शुरू होने ही मैंने समय देखा था और शेर के मरने तक कुल दस सकेंड बीते थे—केवल के भयानक दस सकेंड।

दूसरे हब्शियो ने भाग कर जख्मियो को उठा लिया और झाडियो में गायब हो गये। शेष चार बरछियाँ और ढालो को सिर से ऊपर लहरा-लहरा कर मरे हुए शेर के गिर्द नाचने और गाने लगे। कुछ दिनो बाद दोनो जख्मी, जिनके बारे मे मेरा विचार था कि मर गये होगे, मुझे चलते फिरते दिखाई दिये।

—थियोडोर रूजवेल्ट

उसने मेरे प्राण बचाये

हम असम मे हाथिया को पकडने के लिए आये थे किन्तु सबस पहले हमारा साक्षात्कार एक नरभक्षी शेर से हो गया। ६ जून १९६५ को हम गोहाटी पहुँचे और वहा से उन वनो की ओर चल दिये जहा हाथियो की अधिकता थी। हमारी पार्टी म स्थानीय शिकारी भी थे। 'हाची पी' नाम का एक शिकारी भी हमारे साथ था जो अब तक असंख्य शेरो का शिकार कर चुका था।

अभी हम कठिनता स पचास मील दूर गये होगे कि हम वामनी नाम के एक गाव के दुखी लोगो न घेर लिया। उन्होंने हमसे रो रोकर कहा कि एक नरभक्षी शेर हर दूसरे-तीसरे दिन उनके पशु उठाकर ले जाता है और अब उसने इसानो का शिकार भी शुरू कर दिया है। गाव के मुखिया ने बताया कि गत एक सप्ताह म यह नरभक्षी गाव की दो स्त्रियो और चार बच्चो को उठाकर ले जा चुका है।

गाव वालो की करुण-कथा इतनी प्रभावकारी थी कि मैंने निश्चय कर लिया कि सबसे पहले इस नरभक्षी से ही निपट लिया जाये। मुझसे अधिक 'हाची पी' प्रभावित हुआ था। उसकी भावनाओ की यह अवस्था थी कि मै उस नरभक्षी के शिकार का निश्चय न भी करता, तब भी वह वहा रुक जाता और वहाँ से नरभक्षी का अन्त करके ही चलता।

हमने उसी स्थान पर पडाव डाल दिया।

यहा से दो मील की दूरी पर रेलवे लाईन भी गुजरती थी। एक छोटा-सा रेलवे स्टेशन भी लगभग चार मील की दूरी पर था। शहर के

बारे म गाँव वालो की जानकारी बिल्कुल शून्य के समान थी। किसी ने शेर को देखा तक न था। उस शेर को केवल रेलवे स्टेशन के एक सिगनलमैन न देखा था। उसका कहना था—'मैं एक दिन अपन क्वाटर स निकल कर स्टेशन आ रहा था। एक रलवे इजन पानी लेने के लिए स्टेशन के बाहर टकी के पास मौजूद था। सहसा मैंने शेर की दहाड सुनी। मरे कदम जमीन पर जमकर रह गये और मैं जमीन पर लेट गया ताकि शेर की नजरो से सुरक्षित रहूँ। कुछ मिनट बाद मैंने शेर को भी देख लिया। वह रेलव इजन के निकट खडा हुआ दहाड रहा था। उसके बाद वह धीरे-धीरे कदम उठाता हुआ वहाँ से चला गया।'

और उसके वहाँ से जात ही न केवल स्टेशन बल्कि आस-पास म भी एक सनसनी और एक दहशत फल गयी।

वासनी गाँव के रहने वालो न निकटवर्ती गावो को भी हमारे इरादे की सूचना भेज दी और स देश पहुँचा दिया कि यदि उनक प्रदश म यह नरभक्षी दिखायी दे, तो वे तत्काल हम सूचना भेज दें। । हाची पी' न वासनी जाकर इन पशुशालाओ का मुआइना किया जहाँ से शेर पशुओं को उठाकर ले जाता था और उस कुएँ को भी जाकर दखा जहा से दो दिन पहले वह एक स्त्री को उठाकर ले गया था। वास्तव म वह वहाँ की गीली मिट्टी मे शेर के पजो के निशान देखने गया था, लेकिन वहाँ उसको एक भी निशान न मिला। 'हाची पी' का दावा था कि वह केवल पजो के निशान देखकर शर की आयु बता सकता है।

अभी हमे वहाँ पडाव डाले केवल चौबीस घण्टे हुए थे कि बाजापुर के एक किसान ने यह सूचना आकर दी कि वहाँ कल रात को नरभक्षी ने हमला किया और एक स्त्री को जो अपने झोपडे के बरामदे मे अपन बच्चे के साथ सो रही थी, घसीट कर ले गया।

बाजापुर हमारे पडाव स केवल चार मील दूर था। इसलिए मैं हाची पी' और दो मजदूरो के साथ उसी समय वहाँ से चल दिया।

बाजापुर म एक कुहराम सा मचा हुआ था।

जिस स्त्री को शेर उठाकर ले गया था, उसकी शादी को अभी केवल एक वष हुआ था और केवल दो महीन पहले वह माँ बनी थी। स्त्री के

माता पिता और पति सब रो रहे थे, किन्तु सबसे अधिक बुरी तरह उसका छोटा-सा दो माह का बच्चा रो रहा था। इसलिए नहीं कि उसकी माँ को शेर उठाकर ले गया था, बल्कि इसलिए कि उसको दूध पिलाने वाला कोई न था। बाजापुर के मुखिया ने बताया की इस नरभक्षी को फाँसने और मारने के कई प्रयत्न किये जा चुके हैं लेकिन यह शेर इतना धूर्त और इतना निर्भीक है कि सब तदबीरें असफल हो गयी। उस मुखिया ने शेर के बारे में एक कहानी यह भी सुनाई कि एक बार दो शिकारी कलकत्ता से आये थे और मचान पर बैठे हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। दुर्भाग्य से मचान अधिक ऊँचा नहीं था, इसलिए उसने दोनों को मचान से घसीट कर मार डाला। उसने कहा इस नरभक्षी का नियम है कि वह रात के अंधकार में गाँव में प्रवेश करके अपने शिकार को दबाकर और वन में भाग जाता है। अभागा इंसान चीखता चिल्लाता है, लेकिन दूसरे लोग उसकी सहायता नहीं कर पाते। अब तक इस शेर ने इस गाँव के जितने आदमी मारे थे, उनमें से किसी की लाश का पता नहीं चला था, क्योंकि इस जन्तु के भय से कोई भी आदमी वन में जाने का साहस नहीं करता था।

जब मुझे यह पता चला कि शेर स्त्री को वन में लेकर प्रविष्ट हुआ है तो हाथी पी के परामर्श से मैंने भी वन में प्रवेश किया। मेरे साथ गाँव के कुछ नवयुवक भी बरछे भाले लिये साथ हो लिये। वन इतना सघन था कि यहाँ दिन के समय भी अँधेरा था। कई दलदली क्षेत्र ऐसे थे कि यदि फूल-सा हल्का जीव भी उस पर पैर रख दे तो पलक झपकते में नीचे तह में पहुँच जाय। कई झाड़ियाँ इतनी बड़ी और इतनी घनी थीं कि उनमें एक नहीं, कई शेर बड़ी आसानी से छुप सकते थे।

'हाथी पी' केवल शिकार का ही प्रवीण नहीं था, वन का भी विशेषज्ञ था। वह ज़मीन भी देखता जाता था और हवा में गंध भी सूंघता जाता था। लगभग एक मील तक वन में चलने के बाद वह सहसा रुक गया और ज़मीन की ओर इशारा करके कहने लगा, शेर इधर से अवश्य गुजरा है। उसके नाखूनों के निशान यहाँ मौजूद हैं और ये निशान बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे कि बाजापुर की झोपड़ी के आगे पाये गये थे। अब

हम लोग सावधानी के साथ सचेत होकर आगे बढ़ने लगे लेकिन आगे हमें एक भी नया निशान नहीं मिला। हो सकता है उसका एक कारण यह हो कि वहाँ घास लम्बी थी और तरल भी थी।

हम वन में चलते हुए दो घण्टे से अधिक हो गये थे, किन्तु अब तक हमें न तो स्त्री की लाश मिली थी और न शेर के नये पदचिह्न। लेकिन इसके बावजूद हमने हिम्मत नहीं हारी थी। जब भी मेरे हौसले पस्त होने लगते, मेरे कानों में स्त्री के मासूम बच्चे के रोने की आवाजें आने लगतीं। मेरा खून रगों में तेजी से दौड़ने लगता। मुझमें एक नया उत्साह पैदा हो जाता और मेरे हौसले नये सिरे से जवान हो जाते।

अकस्मात हमारे एक नये साथी के गले से चीख निकल गयी।

चीख निकलने का कारण यह था कि उसने अपने गाँव की स्त्री की नुची हुई लाश देख ली थी जो अति करुणावस्था में हमसे कोई पन्द्रह गज की दूरी पर पड़ी हुई थी। लाश की छाती और पिंडलियों का मांस गायब था।

लाश का दृश्य इतना हृदयविदारक था कि मेरा दिल कांप गया, लेकिन मेरी अपेक्षा हाची पी के चेहरे पर एक मुस्कराहट सी फैल गयी। उसी मुस्कराहट के साथ उसने मुझसे कहा, 'लगता है आज बाजापुर के नरभक्षी के जीवन का अन्तिम दिन है। वह इस लाश को खाने अवश्य आयेगा।'

तत्काल मचान बनाया नहीं जा सकता था इसलिए हम दोनों एक वृक्ष पर चढ़ गये जहाँ से अभागी स्त्री की लाश बिल्कुल साफ दिखाई दे रही थी। बाजापुर से आये हुए नवयुवक दूसरे वृक्ष पर चढ़ गये। कुछ मिनट के बाद हाची पी' के मस्तिष्क में न जाने क्या तजवीज आयी कि वह वृक्ष से नीचे उतरने लगा। मेरे पूछने पर उसने कहा, 'मैं नीचे रहूँगा और बराबरी में शेर पर फायर करूँगा।'

मैंने कहा, 'लेकिन यह बहुत खतरनाक होगा। शेर तुम पर झपट सकता है।'

'नहीं साब' हाची पी' ने बड़े दृढ़ स्वर में कहा 'हाची पी को आमने सामने होकर ही शेर का शिकार खेलने में मजा आता है। शेर बड़ा बहा-

लेकिन मेरा निशाना चूक चुका था।

ठीक उसी समय एक दूसरा फायर हुआ। गोली शेर की गर्दन को फाड़ती हुई दूसरी ओर निकल गयी और शेर बिल्कुल मेरे कदमों के निकट ढेर हो गया।

ऊपर वृक्ष की डालों पर बैठे हुए ग्रामीण शेर को इस प्रकार गिरते हुए देखकर हर्ष के नारे लगाने लगे। जब वे नीचे उतरे तो उन्होंने शेर की लाश के चारों ओर नाच किया। लेकिन मेरे विचार कहीं और थे। मैं लाश की ओर देखता भी रहा और सोचता भी रहा। यदि 'हाची पी' का निशाना भी चूक जाता तो ।

'हाची पी' ने केवल वाजापुर के खूंखार नरभक्षी को ही नहीं मारा था, उसने मेरे भी प्राण बचा लिये थे।

—व्हाइट मोयम

मानस्वामी और चीता

वगलौर म मानस्वामी नाम का एक शिकारी बहुत ही मक्कार और बदमाश आदत का था। वगलौर म रहन वाले अग्रेज अफसरा को जो शिकार के फन मे अनाडी और अनुभवहीन होते थे शिकार की झूठी सच्ची खबरें पहुँचा कर पुरस्कार स्वरूप रुपय एठ लेना उसका खास काम था। इसम स देह नही कि जगल के बारे मे उसका अनुभव व्यापक था और इसीलिए वह शिकारियो को शीशे म आसानी से उतार लता था।

मानस्वामी न केवल एक बार मुझे भी ऐस ही काल्पनिक चीत का झाँसा देकर बेवकूफ बनाया था। वह तो सयोग एसा हुआ कि मैने उसके थैल म रखा हुआ चीटे का पजा देख लिया और जब मानस्वामी को जरा धमकाया तो उसने सचमुच सारा माजरा कह सुनाया और बाद म गिडगिडा कर कहने लगा, "साहब मुझे माफ कर दीजिये, मैं वायदा करता हू कि भविष्य मे आपसे कोई धोखा नही करूँगा। क्या करूँ साहब, इस पेट के कारण मजबूर हूँ। यही मेरा ध धा है। आप जैस साहबा के जरिये चार पैसे कमा लेता हूँ।"

मुझे हँसी आ गयी और मैने सच्चे दिल स उसे क्षमा कर दिया और कहा, 'मैं तुम्हारे ध धे को तबाह नही करना चाहता। तुम दूसर शिकारियो को जी भर कर बेवकूफ बनाते रहो, मुझे कोई सरोकार नही किन्तु अगर तुमने मेरे साथ भविष्य मे धोखा किया तो तुम जानोगे।

मगादी के चीते की खूनी सरगर्मियो का समाचार मानस्वामी के काना तक पहुँचा तो उसने सोचा कि अनाडी शिकारियो को फँसने का

यह एक सर्वोत्तम अवसर है। इस समाचार की तसदीक के लिए वह तुरंत बस द्वारा मगादी गया और लोगों से पूछताछ करके अच्छी तरह तसल्ली कर ली कि वाकई इस चीते ने कई बकरियों और गायों को मारा है किन्तु अब उसके सामने एक और कठिनाई आ खड़ी हुई। मानस्वामी का नाम यूरोपियन और गैर यूरोपियन शिकारियों में शैतान की तरह प्रसिद्ध हो चुका था। यद्यपि वह विभिन्न नामों से उन्हें धोखा देता रहा था, किन्तु उसकी शक्ल-सूरत से सभी परिचित थे। वह यह समाचार लेकर एक दर्जन शिकारियों के पास गया किन्तु किसी ने उसकी बात पर कान न धरा और यह कहकर दुत्कार दिया कि 'तुम सदा ही झूठ बोलते रहे हो। भाग जाओ वरन् तुम्हें पुलिस के हवाले कर दिया जायगा।

यह शोचनीय स्थिति मानस्वामी जैसे मक्कार व्यक्ति के लिए बड़ी निराशाजनक थी। उसे अपना धंधा संकट में दिखाई देने लगा, किन्तु वह आसानी से हार मानने वाला आदमी न था। सोचते सोचते एक तदबीर उसके मस्तिष्क में आ गयी। उसने निश्चय कर लिया कि अपनी सिमटी हुई ख्याति को सहारा देने के लिए इस चीते को क्यों न स्वयं ही मारा जाय। अगर चीता मेरे हाथों मारा गया तो पौ-बारह है। मैं फिर बड़े गर्व से इन शिकारियों को बता सकूंगा कि मैंने जो समाचार दिया था, वह सही था। इस मामले पर वह जितना गौर करता, उतना ही उसे अपनी सफलता का विश्वास होता गया। उसने प्रोग्राम बनाया कि चीते को मारने के बाद वह उसे एक जुलूस की शक्ल में सारे इलाके में प्रदर्शन के लिए ले जाएगा। उसके साथ अपनी तस्वीरें खिंचवा कर दूसरे यूरोपियन शिकारियों को डाक के द्वारा भेजेगा। फिर अपना विस्तारपूर्वक परिचय भी करायगा कि मानस्वामी शिकारी ने फलाँ जंगल में अमुक स्थान पर एक चीते को मारा।

मानस्वामी के पास किसी जमाने में एक बन्दूक हुआ करती थी। वह उसने ताड़ी पीने के लिए बेच दी। अब चीते को मारने के लिए उसे एक राइफल की जरूरत हुई। उसने एक अंग्रेज शिकारी की मिन्नत-समाजत करके कुछ दिन के लिए पुरानी बारह बोर की दोनाली बन्दूक प्राप्त की और अपनी पुरानी खाकी वर्दी पहन कर, जो किसी साहब

की वदशीश थी उसी गाँव में जा पहुँचा जहाँ चीते ने बकरियाँ मारी थीं। गाँव वालों पर उसने खूब रौब गाँठा कि 'मैं कोई मामूली शिकारी नहीं हूँ। मैंने अपनी जिन्दगी में सैंकड़ों शेर और चीते मारे हैं। बड़े-बड़े फौजी जनरलों, कर्नलों को शिकार खेलने के तरीके बताये हैं। अब मैं इस चीते का किस्सा खत्म करने आया हूँ जिसने तुम्हारी बकरियाँ और गायें मार डाली हैं और मैं उस समय तक इस गाँव से नहीं जाऊँगा जब तक इस चीते को मार न लूँगा। तुम लोगों का कर्तव्य है कि इस जान जोखिम के काम में मेरी सहायता करो। जैसे ही चीता किसी पशु पर हमला करे मुझे फौरन खबर करो।

ग्रामीणों पर इस भाषण का खासा प्रभाव पड़ा, इन्होंने मानस्वामी की बहादुरी और अनुभव की दास्तानें अक्सर सुनी थीं, इसलिए उन्होंने न केवल उसके ठहरने की सुव्यवस्था की बल्कि अपने पास से खाने-पीने का खर्च उठाने पर भी रजामन्द हो गये।

दो दिन बाद सूचना मिली कि चीते ने एक गाय को मार डाला है। मानस्वामी कील काँटे से आबद्ध होकर घटनास्थल पर पहुँचा। गाय की लाश से थोड़ी दूर उसने मचान बाँधा और चीते की प्रतीक्षा में बैठ गया सूर्य अस्त होने के थोड़ी देर बाद ही चीता भूख से व्याकुल होकर गाय की लाश पर आया और इत्मीनान से हड्डियाँ चबाने लगा। मानस्वामी ने टार्च जलाई। चीता उससे केवल पन्द्रह गज के फासले पर खड़ा हुआ था। इससे पूर्व कि चीता संकट की बू पाकर फरार होता, मानस्वामी ने बन्दूक चला दी। निशाने का कच्चा था, इसलिए गोली चीते को जख्मी करती हुई निकल गई। अब मानस्वामी साहब में इतना साहस तो न था कि वह जख्मी चीते का पीछा करते। सारी रात मचान पर बैठे रहने के बाद वह सुबह जब गाय की लाश के निकट गया तो वहाँ चीते के खून के धब्बे मौजूद थे। गाँव पहुँचकर उसने अपने कारनामे को खूब बढ़ा-चढ़ा कर बयान किया कि चीता सख्त जख्मी होकर भागा है और निश्चय ही किसी झाड़ी के अन्दर मर चुका होगा। ग्रामीणों ने मिल जुलकर जंगल का सारा हिस्सा छान मारा, किन्तु चीते की लाश न मिली। मानस्वामी किसी बहाने से गायब हो गया।

कई सप्ताह बीत गए। इस दौरान चीते के बारे में कोई नई खबर सुनने में न आयी। कई लोगों का ख्याल था कि वह वाकई मर चुका है, किन्तु यह गलतफहमी शीघ्र ही दूर हो गयी जब एक दिन दोपहर के समय मगादी से २२ मील दूर कलाजपत के स्थान पर एक चीते ने न केवल बकरियों के एक रेवड पर हमला किया अपितु चरवाहे और उसके कमसिन लडके को भी सख्त जख्मी किया। उसी दिन शाम को एक और दुघटना पेश आयी। मैसूर से रात को आने वाली एक गाड़ी से तीन यात्री कलाजपत रेलवे स्टेशन पर उतरे। उन्हें वहाँ से दस मील दूर एक गाँव में तुरंत पहुँचना था। चूंकि उस जमाने में बस-सर्विस शुरू नहीं हुई थी, इसलिए जंगल में यात्रा करने लिए टट्टू गाडी चलती थी। टट्टू गाडी इन तीन यात्रियों को लेकर कुशलतापूर्वक गाँव में पहुँच गयी। गाडीवान ने सोचा कि रात इस गाँव में गुजार कर वह सुबह कलाजपत वापस चला जायेगा। उसने टट्टू को गाडी से खोलकर एक ओर खड़ा कर दिया और थोडी-सी घास उसके सामने डालकर सोने के लिए गाँव चला गया टट्टू ने थोडी देर बाद घास खत्म कर दी किन्तु उसकी भूख अभी जोरों पर थी। घास की तलाश में वह धीरे धीरे चलता हुआ पहले गाँव की गलियों में घूमता रहा। फिर जंगल की ओर निकल गया। उधर खूंख्वार चीता अपने शिकार की तलाश में घूम रहा था। उसने टट्टू पर हमला किया और उसकी गर्दन अपने मुंह में दबा ली। टट्टू खूब पला हुआ था। उसने झटका देकर अपनी गर्दन चीते के जबड़े से मुक्त करा ली और तेजी से गाँव की ओर भागा। चीता गुर्राता हुआ उसके पीछे आया, किन्तु इतनी देर में गाडीवान और अन्य लोग चीख की आवाज सुनकर जाग चुके थे। वे सब अपने घरों से निकल आये तो चीता भाग गया। टट्टू लहू-लुहान हो चुका था। उसकी गर्दन में चीते के लम्बे दाँतों के दो बड़े-बड़े घाव पड़ गए थे। उसका सारा शरीर सूखे पत्ते की तरह काँप रहा था। थोड़ी ही देर बाद वह धम्म से गिर पडा और दम तोड दिया।

दूसरे दिन गाडीवान ने कलाजपत पहुँचकर पुलिस चौकी में थाने की रिपोर्ट की कि अगर उस चीते को शीघ्र मारा न गया तो वह आदमियों को भी अपना ग्रास बनाने लगेगा। उन दिनों उस इलाके में ऐसी ही खबरें

ज़रा देर से पहुँचती है, इसलिए ग्रामीण सकट की परवाह किये बगैर एक गांव से दूसरे गाव आते जाते रहते हैं। चुनांचे उसी दिन चीते ने एक राहगीर को जगल मे पा लिया। उसके सीने और पीठ पर चीते ने अपने पजा से गहरे ज़ख्म लगाये। चीता निश्चय ही उसे मार ही डालता अगर मौके पर सयोगवश दो राहगीर न पहुँच गये होते। उन्होंने उस अचेत जख्मी ग्रामीण को मगादी के अस्पताल मे पहुचाने के साथ-साथ पुलिस चौकी के रिवाज सार्जेण्ट को भी सूचना दे दी। सार्जेण्ट-पुलिस ने इस रिपोट पर तुरन्त कार्यवाही की। एक साइकिल सवार सिपाही को लेकर घटनास्थल पर जा पहुँचा। वहाँ चीते के पजो और इसानी खून के जमे हुए बडे बडे धब्बे यह यकीन दिलाने के लिए काफी थे कि चीते ने ग्रामीण पर खूब जोर आजमाई की है। वहाँ कुछ दर्शक ग्रामीण भी एकत्रित थे। एकाएक उनमे से एक ने सार्जेण्ट से कहा, 'यह देखिये जनाब, सामने इस पहाडी पर चीता बैठा है', वाकई दो फर्लांग दूर एक पहाडी टीले पर चीता निश्चिन्तता से बैठा उन्ही लोगो की ओर देख रहा था। सार्जेण्ट ने सिपाही को आदेश दिया कि पुलिस चौकी जाय और राइफल लेकर शीघ्रातिशीघ्र वापस आये किन्तु जितनी देर मे सिपाही राइफल लेकर आया, चीता वहाँ से गायब हो चुका था। यह ३०३ की राइफल थी। ऐसी राइफल उस ज़माने मे पुलिस और सेना मे अक्सर प्रयुक्त होती थी और उसमे केवल एक ही कारतूस मैगज़ीन मे भरना पडता था। सार्जेण्ट ने सोचा कि चीता अवश्य इस टीले के पीछे छिप गया है। अगर जरा कोशिश की जाये तो उसका सुराग लगाया जा सकता है अत उसने राइफल हाथ मे ली कुछ फालतू कारतूस जेब मे डाले और दो-तीन ग्रामीणो और सिपाही को साथ लेकर धीरे धीरे पहाडी टीले की ओर बढा। आध घण्टे तक सार्जेण्ट उस पहाडी के इर्द-गिर्द चीते को ढूढता रहा। जोश मे उसने अपने साथियो को काफी पीछे छोड दिया और स्वय काफी आगे बढ गया। एकाएक टीले के पीछे से पूँखार चीता दबे पाँव निकला और पीछे से सार्जेण्ट पर हमला कर दिया। सार्जेण्ट के हाथ उड गये। राइफल हाथ से छूटकर गिर गई। क्षणभर मे चीते ने उसे ज़मीन पर लिटाकर इतनी बुरी तरह पजे मार दि

सार्जेण्ट बेहोश हो गया। उसके शरीर से सरा खून निकल चुका था। उस की खुशकिस्मती थी कि चीता उस समय तक आदमखोर नहीं हुआ था। उसन जब महसूस किया कि प्रतिद्वंद्वी बेबस हो चुका है तो वह छलांग मारता और गुर्राता हुआ एक ओर भाग गया। ग्रामीणो और सिपाही न यद्यपि चीत को सार्जेण्ट पर हमला करते हुए दख लिया था किन्तु उन का साहस न हुआ कि व दौडत और चीत को डरान की कोशिश करन। जब चीता भाग गया तो व कांपते हुए वहाँ आये आर बेहोश सार्जेण्ट को उठाकर पहले पुलिस चौकी और फिर अस्पताल ल गय। अगले दिन उसे बगलौर के विक्टोरिया अस्पताल म भेज दिया गया क्योंकि जख्म बहुत गहरे थे। सार्जेण्ट को वहा खून दिया गया, वरन् वह निश्चय ही मर जाता।

चीते की इन सरगर्मियो से मगादी हिल्स के पूरे इलाके म भय और आतक की एक लहर दौड गयी। मामला बगलौर के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस तक पहुँचा और उसने तुरत जाँच पडताल का आदेश दिया। पुलिस ने आत ही मानस्वामी का टेटुआ दबाया क्योंकि उसन सबस पहले मचान बाँधकर चीत पर गोली चलाई थी। अब प्रश्न यह था कि मानस्वामी के पास बदूक कहा स आयी? किसने दी? क्या उसके पास लाइसेंस था? मानस्वामी के होश उड गये क्योंकि उसके पास बदूक का लाइसेंस न था। उसने पुलिस वालो की मिन्नत-समाजत की कि उसे छोड दिया जाये किंतु डी० एस० पी० इस व्यक्ति के बारे मे कई कहानियाँ सुन चुका था। उसने एक अजीब फैसला किया। मानस्वामी से कहने लगा, 'देखो तुम्हारे विरुद्ध अपराध बहुत सख्त है अगर सार्जेण्ट मर गया तो तुम्हे फाँसी की सजा होगी अब एक ही तदबीर से तुम्हारी जान बच सकती है मैं तुम्हे चार दिन की मोहलत देता हूँ। अगर इस अर्से मे तुम चीते को मारकर उसकी लाश हम दिखाओ तो तुम्हारी जानबख्शी हो सकेगी वरन मानस्वामी बेचारा करता क्या न करता। उसे वचन देना पडा कि दो चार दिन के अदर-अदर चीत को मारने की पूरी चेष्टा करेगा। अगर वह सफल न हुआ तो पुलिस को अधिकार होगा कि जसा चाहे व्यवहार करे। जेल स निकलते ही मानस्वामी दौडा-दौडा मेरे बगले

मानस्वामी का चेहरा उज्ज्वल हो गया। उसने झट चादर के पल्लू से अपने आँसू पोंछ लिये जो शायद मगरमच्छ के आँसू ही थे। वह बोला, 'वह कौन सी शर्त है, जनाब? मैं आपकी हर बात मानने के लिए तैयार हूँ।'

'शर्त यह है कि जब चीते पर गोली चलाऊँगा तो तुम मेरे पास रहोगे। यदि तुम डर कर भागे तो मैं तुम्हें वहीं गोली मार दूंगा।'

'मुझे स्वीकार है,' मानस्वामी चिल्लाया।

आपस में सन्धि' हो जाने के बाद मैं उस दिन शाम के समय मानस्वामी को अपने साथ लेकर डी० एस० पी० के घर गया और मानस्वामी का अपराध क्षमा कराने की चेष्टा की किन्तु डी० एस० पी० बिल्कुल न माना। वह कहता था कि इस व्यक्ति ने बहुत से लोगों को काल्पनिक किस्से सुना-सुनाकर लूटा है और जब इस व्यक्ति की बुरी हरकतों के कारण यह चीता जख्मी हुआ और उसने जानवरों और मनुष्यों को क्षति पहुँचाना शुरू कर दिया। अब यह आशंका हर वक्त मौजूद है कि अगर चीते ने एक बार भी इन्सानी खून का स्वाद चख लिया तो वह कितनी ही इन्सानी जानों की हत्या का कारण बनेगा। मैं इस बदमाश मानस्वामी को हरगिज़-हरगिज़ छोड़ने पर तैयार नहीं हूँ। अगर यह चार दिन के अन्दर-अन्दर चीते की लाश मेरे सामने लाकर डाल दे तो फिर मैं इसके बारे में रिआयत से काम लेने पर ग़ौर करूँगा।'

'वाकई यह व्यक्ति है तो कठोर से कठोर दण्ड का अधिकारी, किन्तु मैं आपसे इतनी सिफारिश करता हूं कि चार दिन की कैद उठा दीजिए। यह बेचारा चीते को क्या मार सकेगा खुद ही उसका ग्रास बन जायगा, किन्तु उसने मेरे साथ रहने का वायदा किया है और मैं जमानत देता हूँ कि जब तक चीता मारा नहीं जाता, यह व्यक्ति कहीं फरार नहीं होगा।

डी० एस० पी० ने मानस्वामी को बंगले से बाहर चले जाने का संकेत किया और फिर मुझसे हँसकर कहने लगे, 'मैं तो इस बदमाश को सदा के लिए सबक देना चाहता हूँ। मुझे ज्ञात था कि उसके परिजन भी

चीते को नही मार सकेंगे और यह जरूर आप ही की सेवायें प्राप्त करेगा। अब आप इसको अपने साथ ही रखिए। अगर आपको पुलिस से किसी प्रकार की भी सहायता की जरूरत हो तो तुरन्त सूचित कर दें। हम चाहते हैं कि शीघ्रातिशीघ्र समाप्ति हो जाये।'

दूसरे दिन सुबह मैंने अपना सामान तैयार किया और स्टडीबेकर स्टार्ट करके मगादी हिल्स की ओर चल दिया। मानस्वामी मेरे साथ था। रास्ते में जितनी छोटी बस्तियां दिखाई दीं, वहां हर जगह मैंने चीते के बारे में पूछताछ की। गाँव मगादी में पुलिस के सिपाहियों ने सार्जेंट के जख्मी होने की दास्तान विस्तारपूर्वक सुनाई। वहाँ से मैं क्लाजपत गया। राह में वह गाँव भी पड़ता था जहां चीते ने टट्टू पर हमला किया था। सब इंसपेक्टर पुलिस ने मेरी फरमाइश पर गाड़ीवान को बुलाया और उसने सब ब्यौरा सुनाया। साराश, इन चार दिनों में से एक दिन इसी प्रकार की जांच पड़ताल में लग गया। मानस्वामी के चेहरे पर फिर हवाइयां सी उड़ने लगीं मानो उसकी जिन्दगी के अब तीन दिन शेष रह गये हों।

वहां से हम लौटकर फिर मगादी आये और वह रात डाक बंगले में काटी। अगले दिन एक व्यक्ति मुझसे मिलने के लिए आया। वह जंगली जड़ी बूटियां और शहद एकत्रित करके बेचा करता था। उस व्यक्ति का बयान यह था—

'कुछ सप्ताह पहले का जिक्र है, मैंने जंगल में एक जख्मी चीते को देखा। वह जिधर से गुजरा वहाँ खून के बड़े-बड़े धब्बे भी मैंने देखे। मैंने उस दिन गांव जाकर पूछ-ताछ की तो पता चला कि किसी शिकारी ने उसे जख्मी किया था। संयोग की बात कि अगले दिन जब मैं पहाड़ी दर्रों में से गुजर रहा था तो वहाँ भी मैंने चीते के खून के खुश्क धब्बे देखे। एक चट्टान पर सम्भवतः, वह देर तक सुस्ताया था, क्योंकि वहाँ खून पर्याप्त मात्रा में फैला हुआ था। यहीं एक गुफा के ऊपर मुझे मधु-मक्खियों का छत्ता नजर आया। मैं जब उसे गौर से देखने के लिए आगे बढ़ा तो गुफा में से चीते के गुर्राने की आवाज आयी। मैं सिर पर पाँव रखकर भागा। मुझे यकीन है कि चीता अब भी वहीं होगा क्योंकि वह

हुए व्यक्ति का [illegible] मिट्ठू था। मिट्ठू को चूकि उसी गुफा से शहद का छत्ता उतारना था, इसलिए वह भी हमारे साथ आने पर तयार था। मैंने मानस्वामी से कहा, 'तुरत सामान तैयार करो। हम दोपहर तक अवश्य वहा पहुँचना है। चीता दोपहर को सोया हुआ होगा, इसलिए हमारे आने की आहट सुनकर फरार न हो सकेगा।'

अब मानस्वामी फिर रोने और गिडगिडाने लगा, 'मुझे न ले जाओ। चीता मुझे खा जायेगा।' मुझे उस कायर व्यक्ति पर वेहद क्रोध आया। मैंने कहा, 'बहुत अच्छा मैं भी नही जाता। तुम फाँसी पर मरना पसन्द करते हो तो मुझे क्या पडी है कि ख्वामख्वाह चीते को मारने के लिए अपनी जान सकट मे डालू ?'

मानस्वामी को मैंने अपनी एक फालतू राइफल दी। अपनी खाकी वर्दी पहनाई और मोटर मे विठाकर कलाजपत की ओर चल दिया। मिट्ठू हमारे साथ था। हम ठीक सवा दस बजे सडक के उस स्थान पर पहुँच गये जिसके सामने दूर से पहाड की दोनो चोटियो के दरम्यान ढलान मे जगल उतरता था। मिट्ठू ने परामर्श दिया कि अगर हम यहीं उतर कर बाकी यात्रा पैदल तय करें तो सुविधा रहेगी। मैंने एक सुरक्षित स्थान पर कार खडी की और मानस्वामी को आगे आगे चलने का सकेत किया। यह ढलवानी जगल सडक से कई मील दूर था, किन्तु देखने से यो मालूम होता जसे सामने ही कुछ फर्लांग के फासले पर है। आखिर एक जगह मिट्ठू न हमे रुकने का सकेत किया। फिर वह घुटनो के बल झुककर कुछ सूघने लगा। मानस्वामी भयभीत दृष्टि से इधर-उधर देख रहा था।

यह देखिए ये रहे खून के धब्बे, मिट्ठू ने मुझसे कहा। मैंने भी झुककर देखा। निस्सदह कई दिनो का जमा हुआ खून था। इन झाडियो से परे जगल इतना घना नही था। यहाँ बडे-बडे पहाडी टीले एक-दूसरे से जरा फासले पर खडे थे और जख्मी चीता इन्ही के बीच मे से गुजर कर अपनी गुफा तक गया था क्योंकि इन्ही टीलो पर जगह-जगह उसके खून के दाग मौजूद थे।

डेढ़ घण्टे के प्राणान्तक और कठिन प्रयत्न के बाद हम उस गुफा तक पहुँच जाने मे सफल हो ही गये जिसमे जख्मी चीता पनाह लिए हुए था। मैंने मानस्वामी से कहा, 'आगे बढो और गुफा मे दाखिल हो जाओ।' बेचारे का चेहरा दहशत से सफ़ेद हो गया। उसकी घिग्घी बंध गयी। मैंने फिर राइफल का इशारा किया तो वह मेरे कदमो पर गिर पडा और बच्चो की तरह दहाडें मार मार कर रोने लगा, 'सरकार मुझ पर दया कीजिए। मुझे क्यो मौत के मुह म आप भेज रहे है। मेरे बाप की तोबा, जो मैं भविष्य मे इस जगल का रुख भी करू।' मैने एक कहकहा लगाया और कहा, 'मानस्वामी तुमने तो कायरता की हद कर दी। खुदा के बन्दे, राइफल तुम्हारे पास है, दो आदमी तुम्हारी सुरक्षा के लिए साथ हैं और तुम फिर भी डर रहे हो।'

एकाएक मिट्ठू के मुँह से एक चीख निकली और वह बिदककर जगल की ओर भागा। यकीन कीजिए अगर तीन सेकण्ड की देर और होती तो वह मूज़ी चीता, जो न जाने कब से लम्बी घास मे छिपा हुआ था, हममे से एकाध को अवश्य ले मारता। बिजली की तरह तडप कर वह घास म स उछला और मानस्वामी पर आ पडा। मानस्वामी मुह के बल घास म गिर गया। मेरी दोनाली राइफल से एक साथ दो फायर हुए और चीत के सिर के परखचे उड गये, क्योकि वह मुझसे केवल पाँच फुट के फासले पर था। एक भयानक चीख के साथ चीते ने कलाबाजी खाई और मानस्वामी के ऊपर ढेर हो गया और इस प्रकार अडतालीस घण्टे के अन्दर-अन्दर वह चीता मारा गया जिसने कई माह से इलाके म ऊधम मचा रखा था।

—केनेथ एण्डरसन

और शेर ने बन्दूक चला दी

१६३६ म मध्य भारत और उसक आस-पास का प्रदेश सघन वनों से पटा पडा था जिसम शेरा, तेंदुआ और चीता की अधिकता थी। दूर-दूर स कुशल शिकारी शिकार खेलने आया करत थ, जिनम देशी भी होत थे, विदशी भी। छ अक्तूबर की रात थी। एक छोटे-स रलव स्टेशन पर स्थानीय वन अधिकारी न दो अग्रेज शिकारिया का गाडी पर स्वागत किया। वन विभाग के रेस्ट हाऊस म उनके ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। इन अग्रेज शिकारिया के नाम मागन और जोंस थे। वे अनुभवी शिकारी थे। बहुत दिना तक अनाका के सघन वना म उनकी बन्दूका की गूज सुनाई दती रही थी। अब उन्ह शौक नही, बल्कि मौत वहाँ खीच लायी थी।

रस्मी परिचय के बाद बातचीत चली ता उन्होने अग्रेज डिप्टी कमिश्नर का आदेश पत्र दिखाया। वन विभाग क दो अधिकारी उस विशाल वन के इचाज थे। उनका अपना इलाका था। लेकिन यह हैड-क्वाटर रेलवे लाईन के साथ पडता था, इसलिए इस अधिकारी के माध्यम से सभी आदेश अन्य अधिकारियो तक पहुँचाये जात। इस आदेश मे लिखा था कि इन दो शिकारियो को वन विभाग के अन्य अधिकारियो के पास पहुँचा दिया जाय। इस प्रदश मे एक नरभक्षी शेर उस समय तक तीन इसानो को हडप कर चुका था। गाँव के लोगो ने जिला अधि-कारी मे फरियाद की थी और उसन इन दो शिकारियो का गरीब लागा की सहायता के लिए तैयार किया था।

दौड़े। टीले की ओट मे पहुँचे। वहाँ उसकी पत्नी की लाश पडी थी। आँखें भय से खुली थीं। शेर का घातक वार छाती पर पडा था और अपना काम कर गया था। शायद किसानो के शोर न शेर को लाश से लाभ उठाने का अवसर न दिया था और वह वन म विलीन हो गया। यह नवयुवक पागल हुआ जा रहा था। उसे कई बार केवल एक वल्लम लकर वन मे घुसने से रोका गया। उसने शिकारिया को बताया कि जब तक शेर खत्म नही हो जाता, वह शिकारिया के साथ रहगा।

मुखिया ने शिकारियो के लिए एक साफ सुथरा मकान खाली करा दिया। रामू भी उनकी सहायता के लिए आ गया। अब मार्गन और जोन्स शेर को मारने के बारे म विचार विमश करन लग। मार्गन के मन म शेर नरभक्षी बन चुका था। उसे केवल इमानी माँस और खून की भूख थी। लेकिन जोन्स का विचार था कि पिछले चौदह दिना स कोई इसान नही मारा गया, इसलिए शेर का गुजारा अवश्य ही दूसरे जान-वरो पर है।

जोन्स की योजनानुमार एक मचान एक मजबूत पेड पर वहाँ बाँधी गयी, जहाँ शेर ने दो बार लाश छुपायी थी। शाम को एक बछडा ला कर बाँध दिया गया। मार्गन और जोन्स हल्का सा खाना खाकर गम चाय स भरी दो थमस बोतलें और राइफलें लिए मचान पर बठ गये। रामू को एक विसल दे दी गयी कि फायर होन ही लोगा को बुला ले।

रात को ग्यारह बजे तक कोई घटना पश न आयी। चाँद निकल चुका था। चाँदनी म हर चीज दिखायी दे रही थी। इतने म शेर की दहाड सुनाई दी। बछडे न रस्सा तोडन का प्रयत्न किया पर रस्सा मजबूत था। बेचारा जोर लगाकर बबस हो गया। दानो शिकारियो न ध्यान से देखना शुरू किया। मार्गन आराम और शान्ति स बैठा रहा लेकिन जोन्स की नब्ज तज हो गयी थी।

शेर फिर दहाडा। इस बार आवाज जरा निकट थी। अब शेर फिर दहाडा और बछडा फिर चीखने लगा। मार्गन ने शेर को सामन आते हुए देखा। शेर धीरे धीरे बढ रहा था। चाँदनी मे मार्गन ने देखा। वह बाइ टाँग से लगडाकर चल रहा था। मार्गन न इशारा स बछडे पर

नज़र डाली। कुछ कदम बढ़ाये। पर ठिठककर रुक गया। अब वह एक नज़र बछड़े को देखता और फिर घूमकर पीछे देखता, ऐसा लगता था जैसे उसने शिकारियों की बू पा ली हो। जोंस ने इशारों से बताया कि उपयुक्त अवसर है। सम्भव है शेर लौट जाय लेकिन मार्गन अभी फायर करने पर राजी न था। कुछ मिनट बाद शेर लौट आया और जिधर से आया था उसी ओर लौट गया। जोंस व्याकुल था। उसने मार्गन से शिकायत की, पर मार्गन का मत अब भी यही था कि पहले ही किसी अनाड़ी शिकारी की गलती ने शेर को नरभक्षी बना दिया है। हमारा फायर पहले तो असर न करता यदि कुछ असर होता भी तो घातक न होता। फिर शेर कभी इस ओर न आता।

दो रातें और बीत गयीं। एक शाम फिर बछड़ा वहीं बाँध दिया गया। मार्गन, जोंस और रामू ने रात आँखों में काट दी लेकिन शेर न आया, जबकि उसकी दहाड़ से रात भर वन गूँजता रहा। पक्षी फड़फड़ाते रहे। फिर मार्गन और जोंस मचान पर आ बैठे। अभी कठिनता से रात के ग्यारह बजे होंगे कि गाँव में शोर उठा। मार्गन और जोंस ने टार्च से प्रकाश फेंका पर फासला अधिक था। पर रात के अंधकार में दो मशालें वन के उत्तरी भाग की ओर बढ़ती हुई दिखाई दीं। रामू कहता था कि शेर ने गाँव पर हमला कर दिया है। जोंस का विचार था कि अब मचान पर बैठना बेकार है। लेकिन मार्गन सचेत रहना चाहता था। वह कहता था कि यह उसी शेर ने हमला किया और यह कोई दूसरा शेर भी हो सकता है। सम्भव है कि यह शेर घात में हो और उतरते ही उन पर हमला कर दे। अजीब असमंजस और परेशानी थी, लेकिन मार्गन के मत के विपक्ष में जोंस और रामू के दो मत थे। रामू इशारों ही इशारों से अपना काम चला रहा था।

आखिर मार्गन और जोंस ने निश्चय किया कि मार्गन आगे, रामू बीच में और जोंस पीछे चले, लेकिन बहुत सावधान। चाहे देर ही क्यों न हो जायें। इस प्रकार धीरे धीरे ये गाँव में पहुँचे जहाँ कुहराम मचा हुआ था। औरतें रो रो कर निढाल हो रही थीं। इन तीनों ने उसी दिशा से वन में घूमने का निश्चय किया, लेकिन मशालें वापस

आती हुई प्रतीत हुई। रामू ने अंग्रेज शिकारियों को समझाने का प्रयत्न किया कि गाँव के बाहरी तरफ एक घास फूस की बावडी म चौदह वर्षीय लडका सो रहा था, जिसे शेर घसीटकर वन म ले गया है। वन से वापस आने वाली पार्टी न लडके की लाश उठा रखी थी। सर फट गया था। जगह जगह से खाल उधड चुकी थी। एक बाहु गायब थी कन्धा पर गहरे दाग थे। खतरा बढ गया था। घास और सरकण्डे स बनी झोपडियां वालो मे कहा जान थी जो शेर का मुकाबला करते। उनमे से आधी चोपटियां म बिलकुल कोई दरवाजा न था। स्थिति बडी शोचनीय थी। शेर भूखा था लेकिन, गावभर मे बचाव का कोई प्रबन्ध न था। मुखिया न वन के उत्तरी भाग पर अलाव जलवा दिया और गाव वालो का पहरा लगा दिया। पहरेदार रातभर लकडियाँ अलाव म डालता और ऊँची ऊँची आवाजें देता।

मागन और जोंस परेशान थे। नरभक्षी को मारने की कोई सूरत नजर न आती थी।

दूसरे दिन किसान काम पर गये। एक किसान बारह बजे तक खेत न पहुँचा। दूसरो ने समझा कि शायद वह काम पर न आयेगा। बारह बजे उसकी पत्नी रोटी लेकर पहुँची तो पता चला कि वह तो सवेर से घर से चल पडा था। अब ढूँढिया पडी और बडी खोज क बाद उसकी तलाश सरकण्डा के झुण्ड म मिली। लाश चौथाई के लगभग खाई जा चुकी थी। मार्गन और जोंस को पता चला तो उन्ह प्रकाश की किरण दिखाई दी। इन्होने सलाह दी कि केवल चौबीस घण्टा के लिए लाश को वहाँ रखा जाय और इस समय मे गाव वाले मुरन्त नरभक्षी उनसे आ कर ले ले। लेकिन उस पर कोई राजी न हुआ। मुखिया ने अपना पूरे रसूल का उपाय किया, पर किसान के रिश्तेदार के मत म शेर को मारन स पहले लाश का क्रियाकर्म करना जरूरी था। यह तो भावनाओ की बात थी। घरवाले अपने आदमी की लाश कैसे वन म पडी रहन दे।

लाश उठा ली गयी। रामू ने पेशकश की कि वह लाश के स्थान पर स्वय लेटेगा पर वह अपना बल्लम और शिकारियो की टार्च अवश्य

करेगा। ताकि यदि मार्गन और जोन्स उसकी रक्षा न कर सके तो या तो वह शेर को मार दे या स्वयं मर जाय। रामू अपनी पत्नी का बदला लेना चाहता था।

रामू शाम से ही सांस रोककर सरकण्डा के झुण्ड मे इस प्रकार लेट गया कि उसका सिर झाडी के अन्दर और टाँग बाहर थी। मचान बनाने के लिए सामने एक मजबूत पेड को चुना गया और मार्गन और जोन्स ने मचान पर अपना डेरा डाल दिया। आज रात तनिक अँधेरी थी। उन्हे रह रहकर रामू की बहादुरी पर विस्मय हो रहा था।

रात के दस बजे होंगे कि शेर दहाडा और जरा देर बाद शेर की आवाज निकट आ गयी। रामू की पकड बल्लम पर और शिकारियो की पकड बन्दूको पर सख्त हो गयी। मार्गन और जोन्स ने आखें फाड कर देखा। सरकण्डो के कारण दिखायी कम दे रहा था, फिर भी रामू सामने पडा दिखायी देता था। रातभर यही दृश्य रहा। शेर निकट न फटका शायद उसे खतरे का एहसास हो गया था।

प्रातः पहली किरण की रोशनी मे मार्गन और जोन्स पेड से उतरे। रामू को साथ लिया। जोन्स लापरवाही के मूड मे था। उसके मत मे शेर रास्ता छोडकर पुनः वन की दूसरी ओर जा चुका था, वरना शेष लाश को अवश्य खाने आता। मार्गन को इससे मतभेद था। उसके विचार मे शेर कहीं न कहीं निकट था। सम्भव है, वह सरकण्डो के झुण्ड मे मौजूद हो। यही बातें करते हुए वे गाँव की ओर चले। रास्ता साफ न था। सरकण्डो और बडी-बडी घास से वह उलझ कर रुक जाते थे। जोन्स आगे था। बीच मे रामू और पीछे मार्गन। जोन्स ने अपने हाथ घोडे से हटा दिये थे। गाँव कुछ गजो की दूरी पर रह गया था कि सहसा शेर सामने आ गया। वह अवश्य शिकारियो की बू पाकर आया था और इतनी तेजी से आया कि शिकारियो को सम्भलने का भी अवसर न दिया। उन पर शेर की दहशत छा गयी। बिजली जसी तेजी से शेर ने जोन्स पर हमला कर दिया। दूरी तो कोई थी ही नहीं।

जोन्स इस अप्रत्याशित हमले मे चीखता गया। उसे शेर का खुला मुह दो कदम की दूरी पर अपनी ओर बढ़ता हुआ दिखाई दिया। राइ-

फल से निशाना लेने का अवसर न मिला। जोन्स ने राइफल इस प्रकार पकड़ रखी थी कि बट से लाभ उठाया जा सकता था। एक क्षण शेष था। इससे पहले कि मार्गन गोली चलाता, जोन्स ने राइफल का बट शेर के मुंह मे डाल दिया। राइफल का सेफ्टी कैच आगे था। न जाने शेर के दांत से या न जाने किस प्रकार राइफल चल पड़ी। राइफल की नाली जोन्स की ओर थी। गोली जोन्स की खोपड़ी के पार हो गयी। शेर उसी छलांग मे जोन्स को अपने साथ लिए आगे जा गिरा और इससे पहले कि वह फिर उठे, मार्गन ने शेर पर फायर कर दिया। फिर क्रमशः उसने चार गोलियां और चलाई।

थोड़ी देर बाद वहाँ दो लाशें पड़ी थी। एक नरभक्षी शेर की और दूसरी जोन्स की। लेकिन शेर अपने शिकारी को गोली मार गया था। गांव वालो ने जोन्स के मरने का इतना शोक न किया जितनी खुशी उन्होंने नरभक्षी के मरने की मनाई।

●●●

अच्छी पुस्तक
अनमोल धन है
और
हम आपके लिए
अच्छी पुस्तके
प्रकाशित करते है